सिलसिला-ए-अहादीस फ़ज़ाईल-ए-अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन अबू तालिब ؑ (हदीस : 1)

हदीस-ए-ग़दीर

मुरत्तब
ख़ुसरो क़ासिम

हिन्दी मुतरजिम
डॉ. शहेज़ाद हुसैन काज़ी

सिलसिला-ए-अहादीस फ़ज़ाइल-ए-अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अली बिन अबू तालिब رضي الله عنه (हदीसः1)

हदीस-ए-ग़दीर

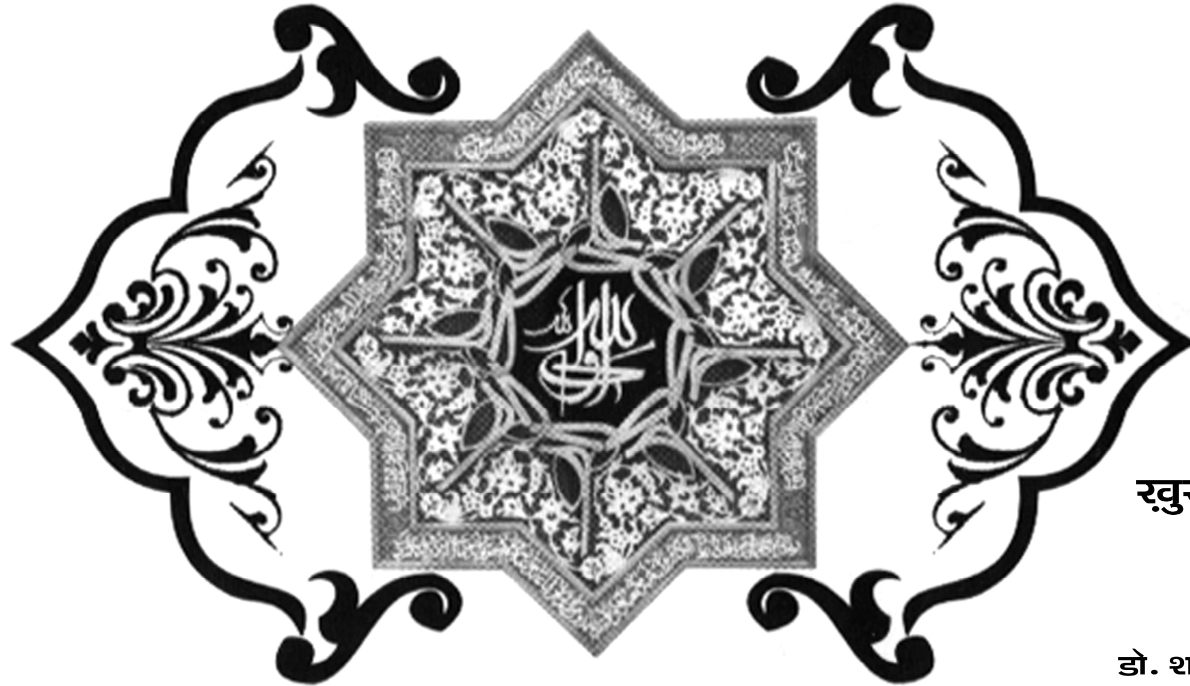

मुरत्तब

ख़ुसरो क़ासिम

मुतरजिम

(हिन्दी)

डो. शहज़ाद हुसैन काज़ी

नाम	:	सिलसिला-ए-अहादीस फ़ज़ाइल-ए-अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अली बिन अबू तालिब رضي الله عنه (हदीस:1)
मुरत्तब	:	ख़ुसरो क़ासिम असिस्टेंट प्रोफेसर मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ उत्तरप्रदेश, भारत
हिन्दी मुतरजिम	:	डॉ. शहज़ाद हुसैन क़ाज़ी फाउन्डर एन्ड चेरमेन ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत
सन-ए-इशाअत	:	2015 (हिन्दी तर्जमा-2018)
हदिया	:	रु. 175/-
कम्पोसिंग एण्ड प्रिंटिंग	:	ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

मिलने का पता

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

بسم الله الرحمن الرحيم

पेश लफ़्ज़

इस ज़माने में जहालत, इल्म से दूरी और नावाक़फ़ियत आम हो चुकी है, इल्म और उलमा आहिस्ता-आहिस्ता उठते जा रहे हैं, और जैसा कि हुज़ूर ﷺ ने पेशनगोई फरमाई थी वह हक़ीक़त सामने आ रही है कि जाहिल और आमी उलमा की जगह लेने लगे हैं, और लोगों ने उन्हें अपना इल्मी और दीनी रहबर तस्लीम करना शुरू कर दिया है जिन्हें ठीक से दीन की मुबादी का भी इल्म नहीं होता।

यही वजह है कि अब हर कमइल्म या फिर दीनी उलूम से बिलकुल नावाक़िफ़ हज़रात ने अहादीस पर सही और ज़ईफ़ का हुक्म लगाना शुरू कर दिया है, मुहद्दिसीन का काम अब जाहिलों के हाथ का खिलौना बन चुका है, इसी का नतीजा है कि बसा औक़ात देखने में आता है कि बिलकुल सही और मो'तबर हदीस को ज़ईफ़ क़रार दे दिया जाता है, और नामो'तबर को हसन व सही के दर्जे का बता दिया जाता है।

हदीस "मन कुन्तो मौला...." एक मुतवातिर और मशहूर हदीस है, लेकिन बहुत से लोग आज इसे भी ज़ईफ़ क़रार दे डालते हैं, मैं ने जब यह हालत देखी तो इरादा किया कि इसके मुतवातिर और मशहूर होने को उलमा व मुहद्दिसीन के अक़्वाल से वाज़ेह कर दिया जाए।

इब्न-ए-हजर अस्क़लानी رحمہ اللہ, ज़हबी, तिर्मिज़ी رحمہ اللہ और अल्लामा अलबानी जैसे बेशुमार मुहद्दिसीन व अस्मा रिज़ाल के उलमा ने इसे सही और मो'तबर क़रार दिया है, बीसियों उलमा मुहक़्क़िक़ीन ने इसे अपनी कुतुब में नक़ल किया है, मैं ने मुख़्तलिफ़ किताबों के "स्कैन" हासिल कर के इस किताब में जमा कर दिये हैं, जिससे इसका मुतवातिर और मशहूर होना अज़ ख़ुद वाज़ेह हो जाएगा।

अल्लाह ﷻ से दुआ है कि मेरी इस हक़ीर सी काविश को क़ुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत علیہم السلام की शफ़ाअत नसीब फ़रमाए।

तालिब-ए-शफ़ाअतुर्रसूलल्लाह ﷺ

ख़ुसरो क़ासिम

असिस्टेंट प्रॉफेसर

मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़

بسم الله الرحمن الرحيم

अर्ज़े मुतरजिम
(अनुवादक का निवेदन)

अल्लाह سبحانه وتعالى ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा’बूद सिवा अल्लाह سبحانه وتعالى ! के और मुहम्मद صلى الله عليه وآله وسلم अल्लाह سبحانه وتعالى ! के रसूल है। अल्लाह سبحانه وتعالى ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से “हदीस-ए-ग़दीर” किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली عليه السلام को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने खुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अहले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत عليهم السلام और मुहब्बत-ए-अली عليه السلام ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अह्ले सुन्नत का **1400** साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने “शान-ए-अह्ले बैत” में सिर्फ **20** (बीस) सालो में **160** से भी ज़्यादा किताबे लिखकर बता दिया है। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अह्ले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अह्ले सुन्नत के **1400** साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। **1400** साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकट्ठा करने का काम प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने खुद को अह्ले सुन्नत कहलाने वाले अह्ल-ए-हदीस और अह्ल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रिज़ा عليه السلام से मिलती है जिसे इस हकीर ने अपने आँखों से देखी हैं. अल्लाह سبحانه وتعالى ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उन को, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

ये किताब ‘हदीस-ए-ग़दीर’ जिस में मशहूर व मुतवातिर हदीस من كنت مولاه فعلي مولاه के अह्ले सुन्नत के मुहद्दिसीनो की नज़रो से सहीह और मो’तबर करार दिया और उनकी किताबो के **Scan pages** भी दिये हैं। मैं ने प्रोफेसर साहब से इजाज़त ले कर इस को हिन्दी और गुजराती में तर्जुमा कम लिपियांतर किया हैं। प्रोफेसर साहब ने मुझे इजाज़त दे कर मुझ नाचीज़ को भी अह्ल-ए-बैत का कुछ काम करने का मौका दिया हैं। इस अजीमुश्शान किताब को उर्दू से हिन्दी ज़बान में मुन्तफिक करते वक्त मैं ने अपने तौर पर इस बात की पूरी कोशिश की है कि इस के कलाम की मअ्नवीयत और रुह्वाने फिक्र कहीं से मजरूह न होने पाए।

इस बीच प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले खतीब-ए-अह्‌ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई) का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा’ना में **Confuse** हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात) का भी शुक्रगुजार हूँ।

दरअस्ल यह काम कौम की उस नस्ल के लिये किया गया है जो हालाते ज़माना के हाथों अपनी मादरी ज़बान (उर्दू) के रस्मुल खत से नाबलद हो गई है अगरचे अभी भी इन अल्फ़ाज से उस के कान मानूस और ज़बान इनकी लज्जत से आशना है ! चुनांचे मैं ने उर्दू अल्फ़ाज के तलफ्फुज़ात की सेहत का खास लिहाज़ रखा है। इस लिए बतौर मुतरजिम मैं ने “पूर्ण हिन्दी तर्जुमा” न कर के ज़ियादातर लिपियांतर ही किया है ताकि उर्दू दीनी अल्फ़ाजो का और उसूल-ए-हदीस के अल्फ़ाजो का वज़न बरकरार रहे। मैं ने निहायत जांफिशानी और खुलूसे नियत के साथ इस अज़ीम क़रीज़े को अंजाम देने की कोशिश की है, इन तमाम बातों और तज्जुहात के बावजूद ग़लतियां मिल सकती है जिन के लिए मैं पहले से मअज़िरत ख्वाह हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत عليهم السلام की शफाअत नसीब फरमाए !

ग़ुलाम-ए-दरे सैय्यदा ज़हरा-ए-पाक व अली عليهما السلام

डॉ. शहेज़ाद हुसैन यासीनमीया काज़ी

फेहरिस्त

★ **ध्यान रहे : यहां पर फेहरिस्त में उस किताब और उसके तालीफ (Auther) का नाम दिया गया है जिस किताब का स्केन पेज इस किताब में है जिस में** من كنت مولاه فعلى مولاه . **हदीस का हवाला मौजूद है।**

مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ

(मैं जिसका मौला हूँ, अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं)

(इरशाद-ए-रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم)

نظم المتناثر
من
الحديث المتواتر

تأليف

أبي عبد الله محمد بن جعفر الكتاني

دار الكتب السلفية للطباعة والنشر بمصر

٢٣٢ – حديث :

من كنت مولاه فعلى مولاه .

أورده فيها أيضاً من حديث :

١ – زيد بن أرقم .
٢ – وعلى .
٣ – وأبى أيوب الأنصارى .
٤ – وعمر .
٥ – وذى مر .
٦ – وأبى هريرة
٧ – وطلحة .
٨ – وعمارة .
٩ – وابن عباس .
١٠ – وبريدة
١١ – وابن عمر .
١٢ – ومالك بن الحويرث
١٣ – وحبشى بن جنادة .
١٤ – وجرير
١٥ – وسعد بن أبى وقاص .
١٦ – وأبى سعيد الخدرى .
١٧ – وأنس .
١٨ – وجندع الأنصارى .

(ثمانية عشر نفساً) .

وعد عدة من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ، أنهم سمعوا رسول الله صلى الله عليه وسلم يقوله وعن أثنى عشر رجلا منهم :

١٩ – قيس بن ثابت .
٢٠ – وحبيب بن بديل بن ورقاء .

وعن بضعة عشر رجلا منهم :

٢١ – يزيد أو زيد بن شراحيل الأنصارى .

(قلت) ورد أيضاً من حديث :

٢٢ – البراء بن عازب .
٢٣ – وأبى الطفيل .
٢٤ – وحذيفة بن أسيد الغفارى .
٢٥ – وجابر .

وفى رواية لأحمد ، أنه سمعه من النبى صلى الله عليه وسلم **ثلاثون صحابياً** ، **وشهدوا به لعلى لما نوزع أيام خلافته** ، وممن صرح بتواتره أيضاً المناوى فى التيسير نقلا عن السيوطى وشارح المواهب اللدنية وفى الصفوة للمناوى قال الحافظ ابن حجر حديث من كنت مولاه فعلى مولاه خرجه الترمذى والنسائى ، وهو كثير الطرق جداً وقد استوعبها ابن عقدة فى مؤلف مفرد واكثر أسانيدها صحيح أو حسن ا هـ .

☆ **अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन जा'फ़र कतानी** ने अपनी किताब **"नज़्मुल मुतनासिर मिनल अहादीस अलमुतवातिर"** (जिसमें उन्होंने मुतवातिर अहादीस को जमा किया है) में कहा है कि हदीस "मन कुन्तो मौला" मुंदरजा ज़ैल सहाबियों से मरवी है:

१) ज़ैद बिन अरक़म — २) अली — ३) अबू अय्यूब अंसारी
४) उमर — ५) ज़ीमर — ६) अबू हुरैरह
७) तल्हा — ८) अम्मार — ९) इब्न-ए-अब्बास
१०) बुरैदा — ११) इब्न-ए-उमर — १२) मालिक बिन हुवैरिस
१३) हबशी बिन जनादा — १४) जरीर — १५) साद बिन अबी वक़्क़ास
१६) अबू सईद ख़ुदरी — १७) अनस — १८) जनदा अंसारी
१९) क़ैस बिन साबित — २०) हबीब बिन बदील बिन वरक़ा — २१) यज़ीद या ज़ैन बिन शिरजील अंसारी
२२) बरा बिन आज़िब — २३) अबू तुफ़ैल — २४) हुज़ैफ़ा बिन अस्यद ग़िफ़ारी
२५) जाबिर (رضي الله عنهم)

→ इमाम अहमद رحمه الله ने रिवायत की है कि इस हदीस को हुज़ूर صلى الله عليه وآله وسلم से तीस सहाबा رضي الله عنهم ने सुना, और जब हज़रत अली رضي الله عنه की ख़िलाफ़त के ज़माने में नज़ाअ हुआ तो इन हज़रात رضي الله عنهم ने हज़रत अली رضي الله عنه के हक़ में इसकी गवाही दी।

١٠٢ - حديث: «من كنت مولاه فعليّ مولاه».

اخرجه:

أ - الترمذي: عن (١) بن أرقم.

ب - والامام أحمد: عن (٢) علي (٣) وأبي أيوب الانصاري.

جـ - والبزار: عن (٤) عمر (٥) وذي مر (٦) وأبي هريرة (٧) وطلحه (٨) وعمّاره (٩) وابن عباس (١٠) وبريدة.

د - والطبراني عن: (١١) ابن عمر (١٢) مالك بن الحويرث (١٣) وحبشي بن جناده (١٤) وجرير (١٥) وسعد بن ابي وقاص (١٦) وابي سعيد الخدري (١٧) وأنس.

---

١ - ما بين الفارزتين ساقط من (ب).

أ - الترمذي: (جـ ٦٣٣/٥) كتاب المناقب، باب مناقب علي بن ابي طالب رضي الله عنه.

الحديث رقم (٣٧١٣) عن ابي سريع أو زيد بن أرقم - شك شعبة.

وقال ابو عيسى: هذا حديث حسن صحيح.

وابو سُرَيْحَةَ: هو حذيفة بن أسيد الغفاري صاحب رسول الله ﷺ.

ب - احمد في مسنده: جـ ٨٤/١، ١١٨، ١١٩، ١٥٢ عن علي بن ابي طالب.

وجـ ٣٢١/١ عن عبدالله بن عباس.

وجـ ٢٨١/٤ عن البراء بن عازب.

وجـ ٣٦٨/٤/٣٧٠/٣٧٢/ عن زيد بن أرقم.

وجـ ٣٤٧/٥ عن بريدة الأسلمي.

وجـ ٣٦٦/٥ عن رجال من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم.

وجـ ٤١٩/٥ عن ابي أيوب الأنصاري.

جـ - والبزار: قارن المجمع (جـ ١٠٥/٩).

د - والطبراني: في المعجم الكبير: الحديث رقم (٣٠٤٩) عن زيد بن أرقم أو حذيفة بن اسيد.

والحديث (٣٠٥٢) عن حذيفة بن أسيد الغفاري.

والحديث رقم (٤٠٥٢ و ٤٠٥٣) عن ابي أيوب الأنصاري.

والحديث رقم (٤٩٦٨) عن زيد بن أرقم بلفظ: من كنت وليه فعلي وليه. =

هـ - وابو نعيم عن: (١٨) جندع الأنصاري.

و - وأخرجه ابن عساكر عن: (١٩) عمر بن عبدالعزيز قال: حدثني عدة [من أصحاب النبي ﷺ] أنهم سمعوا رسول الله ﷺ يقول: من كنت مولاه فعلي مولاه][1].

ز - وأخرجه ابن عقده: في كتاب (الموالاة) عن زر بن حبيش قال: قال علي: من ههنا من اصحاب محمد ﷺ فقام اثنا عشر رجلاً منهم (٢٠) قيس ابن ثابت (٢١) وحبيب بن بديل بن ورقاء فشهدوا أنهم سمعوا رسول الله ﷺ يقول: من كنت مولاه فعلي مولاه.

واخرج ايضاً عن يعلى بن مرّه قال:

لما قدم علي الكوفه نشد الناس: من سمع رسول الله ﷺ يقول: من كنت مولاه فعلي مولاه، فانتدب له بضعة عشر رجلاً منهم.

(٢٢) يزيد أو زيد بن شراحبيل الأنصاري.

= والأحـاديـث: (٤٩٦٩) و ... و (٤٩٨٦) و (٤٩٩٦) و (...٥٨ و (٥٠٦٨) و (٥٠٧١) و (٥٠٩٢ ... ابن أرقم بألفاظ متقاربة.

هـ - وأبو نعيم في الحليه: جـ ...٤/

وجـ ٢٧/٥

وجـ ٣٦٤/٥.

قلت: وأخرجه كل من:

١ - ابي عاصم في كتاب السنة ...

والحديث رقم (١٣٥٥) عن ابي ...

والحديث رقم (١٣٥٦) عن جابر ...

والحديث رقم (١٣٥٧) عن ابن ...

والحديث رقم (١٣٥٨) عن طلحة ...

والحديث رقم (١٣٥٩) عن ... أرقم، والبراء، وابي سعيد، وعلي.

قطف الأزهار المتناثرة في الأخبار المتواترة

تأليف

الإمام جلال الدين السيوطي

تحقيق

الشيخ خليل محيي الدين الميس

المكتب الإسلامي

☆ **अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती** رحمه الله की किताब **“क़तफ़ उल अज़हार अलमुतनासिरत फ़ि अल अख़बारुल मुतवातिरह”** (जिस में उन्हों ने मुतवातिर अहादीस को जमा किया है) में है कि हदीस “मन कुन्तो मौला” को

→ **इमाम तिर्मिज़ी** رحمه الله ने **ज़ैद बिन अरक़म** رضي الله عنه से

→ **अहमद** رحمه الله ने **हज़रत अली** رضي الله عنه और **अबू अय्यूब अंसारी** رضي الله عنه से

→ **बज़्ज़ार** ने **उमर**, **ज़ीमर**, **अबू हुरैरह, तल्हा, अम्मार, इब्न-ए-अब्बास** और **बुरैदा** رضي الله عنهم से

→ **तबरानी** رحمه الله ने **इब्न-ए-उमर, मालिक बिन हुवैरिस, हबशी बिन ज़नादा, जरीर, साद बिन अबी वक़्क़ास, अबू सईद ख़ुदरी** और **अनस** رضي الله عنهم से

→ **अबू नईम** ने **ज़नदा अंसारी** رضي الله عنه से

→ **इब्न-ए-असाकिर** رحمه الله ने **उमर बिन अब्दुल अज़ीज़** رحمه الله से कि उन्हों ने मुख़्तलिफ़ सहाबा से यह हदीस सुनी

→ **इब्न-ए-अक़्दा** رحمه الله ने **“किताबुल मवालाह”** में **क़ैस बिन साबित** और **हबीब बिन बदील बिन वरक़ा** और **यज़ीद या ज़ैद बिन शिरजील** رضي الله عنه से रिवायत किया है।

وقال عيسى بن شاذان : عنده مناكيرُ .

قلت : روى له البخاريُّ في « الأدب » له ، وابن ماجه ، والنسائي في الخصائص من « سننه » .

قال مُطَيَّن : مات سنة خمس وثمانين ومئة .

أخبرنا محمد بن يعقوب الأسَدي ، وابن عمه أيوب بن أبي بكْر ، وإسماعيل بن عُميرة ، وأحمد بنُ مُؤمن ، وعبد الكريم بنُ محمد بن محمد ، وبِيْبَرس المَجْدي ، ومحمد بن علي بن الواسطي ، قالوا : أخبرنا إبراهيم بن عثمان ، وأخبرنا أبو المعالي الأَبَرْقُوهي ، أخبرنا محمد بن أبي القاسم المفسِّر ، ومحمد بن إبراهيم بن مَعالي ، وصَفيَّةُ بنت عبد الجبار ، وسعيد بن ياسين ، وعمر بن بَرَكَة ، وأنجب بن أبي السعادات (ح) وأخبرنا سُنْقُر بن عبد الله الحلبي ، أخبرنا عبد اللطيف بن يوسف ، وأنجب الحمَّامي ، وعلي بن أبي الفخَّار ، وعبد اللطيف بن محمد ، ومحمد بن محمد بن السَّبَّاك ، قالوا جميعاً : أخبرنا أبو الفَتْح محمد بنُ عبد الباقي ، وزاد إبراهيم بن عثمان فقال : وأخبرنا علي بن عبد الرحمن الطوسي ، قالا : أخبرنا مالك بن أحمد الفراء ، أخبرنا أحمد بنُ محمد بن موسى الصَّلْتي ، حدثنا إبراهيم بن عبد الصَّمد إملاءً ، حدثنا أبو سعيد الأشجّ ، حدثنا المطَّلب ابن زياد ، عن عبد الله بن محمد بن عَقيل قال : كنت عند جابر في بيته ، وعلي بن الحُسين ، ومحمد بن الحنفية ، وأبو جعفر ، فدخل رجل من أهل العراق ، فقال : أنشُدك بالله إلا حدَّثتني ما رأيت وما سمعت من رسول الله ﷺ فقال : كنا بالجُحفة بغدير خُمٍّ[1] ، وثَمَّ ناسٌ كثيرٌ من جُهَيْنَة ومُزَيْنَة

(١) قال الزمخشري : خم : اسم رجل صباغ أضيف إليه الغدير الذي هو بين مكة والمدينة =

وغِفَار ، فخرج علينا رسول الله ﷺ من خِبَاءٍ أو فُسْطاط ، فأشارَ بيدِهِ ثلاثاً ، فأخذَ بيدِ عليٍّ رضي الله عنه فقالَ : « من كنتُ مَوْلاه فعليٌّ مولاه »[1] هذا حديث حسن عال جداً ، ومتنه فمتواتر .

سِيَرُ أعلامِ النُّبلاءِ

تصنيف

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

المتوفى

٧٤٨ - ١٣٧٤

الجزء الثامن

أشرف على تحقيق الكتاب وخرّج أحاديثه
شعيب الأرنؤوط

حقق هذا الجزء
محمد نعيم العرقسوسي

مؤسسة الرسالة

٨٧ ـ عبد الس...

ابن حَرْب المُلائي البصريُّ ...

كان صاحبَ حديثٍ وحفظ ...

حدث عن : أيوب السَّخْتياني ...

الله بن أبي فَرْوة ، وخالد الحذَّاء ...

وعنه : أبو بكر بن أبي شَيْبة ...

والحسن بنُ عَرفة ، وآخرون .

= بالجحفة ، وقيل : على ثلاثة أميال من الجحفة ، وذكر صاحب « المشارق » أن خماً اسم غيضة هناك ، وبها غدير نسب إليها ، قال : وخم : موضع تصب فيه عين بين الغدير والعين ، وبينهما مسجد رسول الله ﷺ .

(١) حديث صحيح ، أخرجه ابن ماجه (١٢١) من حديث سعد بن أبي وقاص ، وأخرجه أحمد ٤/٣٦٨ ، والترمذي (٣٧١٣) من حديث زيد بن أرقم ، وأخرجه أحمد ١/٨٤ و ١١٨ و ١١٩ و ١٥٢ من حديث علي ، و ٣٣١ من حديث ابن عباس ، و ٤/٢٨١ من حديث البراء ، و ٤/٣٦٨ و ٣٧٠ و ٣٧٢ من حديث زيد بن أرقم ، و ٥/٣٤٧ من حديث بريدة ، و ٤١٩ من حديث أبي أيوب الأنصاري .

● تاريخ خليفة بن خياط : ١٩٣ ، ١٩٩ ، التاريخ الصغير ، ٢/٢٣٤ ، المعرفة والتاريخ للفسوي : ٣/٢١٩ ، الجرح والتعديل : ٦/٤٧ ، الضعفاء للعقيلي : ٢/٢٥٥ ، مشاهير علماء الأمصار : (١٣٦٦) ص : ١٧٢ ، الكامل لابن عدي : ٤/٢٥٢/٢ ، تهذيب الكمال : ٨٣٢ ، تذكرة الحفاظ : ١/٢٧١ ، تذهيب التهذيب : ٢/٢٣٦/٢ ، ميزان الاعتدال : ٢/٦١٤ ، العبر : ١/٢٩٧ ، تهذيب التهذيب : ٦/٣١٦ ، خلاصة تذهيب الكمال : ٢٣٨ ، شذرات الذهب : ١/٣١٦ ، البيان : (مخطوط)

✯ **ज़हबी** की **“सैर आलाम अल नुबला”** (जुज़: ८) में है कि हदीस “मन कुन्तो मौला...” निहायत आला दर्जा कि हसन है, इसका मतन मुतवातिर है।

→ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ शुऐब अरनौवत कहते हैं कि सही हदीस है।**

سير أعلام النبلاء

تصنيف

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

المتوفى
٧٤٨هـ - ١٣٧٤م

سير الخلفاء الراشدون

حققه، وضبط نصه، وعلق عليه

الدكتور بشار عواد معروف

مؤسسة الرسالة

من طريقين، والأوّل رواه بُندار، عن غُندر، عنه[1] .

وقال كامل أبو العلاء، عن حبيب بن أبي ثابت، عن يحيى بن جَعْدَة، عن زيد بن أرقم، أنّ رسول الله ﷺ قال لعليّ يوم غدير خُمّ: «مَن كنت مولاه فعليّ مولاه».

وروى نحوه يزيد بن أبي زياد، عن عبدالرحمن بن أبي ليلى، أنّه سمع علياً يَنْشُدُ النّاسَ في الرَّحبة[2] . وروى نحوه عبدالله بن أحمد في مُسْند أبيه، من حديث سِمَاك بن عُبَيْد، عن ابن أبي ليلى[3] . وله طُرُق أخرى ساقها الحافظ ابن عساكر في ترجمة عليٍّ يصدِّقُ بعضها بعضاً.

وقال حمّاد بن سَلَمَة، عن عليّ بن زيد وأبي هارون، عن عديّ بن ثابت، عن البَرَاء، قال: كنّا مع رسول الله ﷺ في حجة الوداع فلما أتينا على غَدير خم كسح لرسول الله ﷺ تحت شَجَرَتَين، ونُودي في النّاس: «الصّلاة جامعة»، ودعا رسولُ الله ﷺ علياً فأخذ بيده، وأقامه عن يمينه، فقال: «ألستُ أولى بكلّ مؤمنٍ من نفسه؟» قالوا: بلى، فقال: «فإنّ هذا مولى مَن أنا مولاه، اللّهُمّ والِ من والاه وعادِ من عاداه». فلقِيه عمُر بن الخطّاب، فقال: هنيئاً لك يا عليّ، أصبحت وأمسيْتَ مولى كلّ مؤمنٍ ومؤمنة[4] .

ورواه عبد الرزّاق، عن مَعْمَر، عن عليّ بن زيد.

وقال عُبَيْدالله بن موسى، وغيره، عن عيسى بن عمر القارئ، عن

---

(١) بندار: محمد بن بشار، وغندر: محمد بن جعفر.
(٢) أخرجه أحمد ١/١١٩.
(٣) انظر المسند ١/١١٩.
(٤) أخرجه أحمد ٤/٢٨١، وابن ماجة (١١٦) وتعليقنا عليه.

☆ **ज़हबी ने "सैर आलाम अलनुबला"** में यह रिवायत ज़िक्र की है कि हज़रत बरा ﷺ फ़रमाते हैं: हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर हम रसूलल्लाह ﷺ के साथ थे, जब हम ग़दीर ख़ुम पर पहुंचे तो आप रसूलल्लाह ﷺ के लिए दो दरख़्तों के नीचे झाड़ू लगाई गई, और लोगों में ऐलान किया गया कि नमाज़ खड़ी होने वाली है, रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﷺ को बुलाया, उनका हाथ पकड़ा और उन्हें अपनी दाई जानिब खड़ा करके पूछा: "क्या मैं हर मोमिन की जान का उससे ज़ियादा मुस्तहक़ नहीं हूँ?" लोगों ने कहा: "क्यूँ नहीं", आपने फ़रमाया: "जिसका मैं मौला हूँ ये भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ ! जो इस से दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख", हज़रत अली ﷺ से हज़रत उमर ﷺ की मुलाक़ात हुई तो हज़रत उमर ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अली ﷺ मुबारक हो, तुम ने सुबह ओ शाम इस हाल में की कि तुम हर मोमिन व मोनिना के मौला थे।"

سِيَرُ أَعْلامِ النُّبَلاءِ

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

الجُزْءُ الثَّالِثَ عَشَرَ

١٥٧ - إسْمَاعِيل القَاضِي*

الإمامُ العَلّامة ، الحافظُ ، شيخُ الإسْلام أبو إسْحاق ، إسْماعيل بن إسْحاق بن إسْماعيل بن مُحَدِّث البَصْرة حَمّاد بن زَيْد بن دِرْهَم الأزدي ، مولاهُم البَصْري ، المالكي ، قاضي بَغْدَاد ، وصَاحب التَّصَانيف .

مولدُه سَنة تِسع وتِسعين ومئة ، واعتَنى بالعِلم من الصِّغَر .

وسمع من : محمَّد بن عبد الله الأنصاري ، ومُسْلم بن إبراهيم ، والقَعْنَبي ، وعبد الله بن رَجَاء الغُدَاني ، وحجَّاج بن مِنْهَال ، وإسْماعيل بن أبي أُوَيْس ، وسُليمان بن حَرْب ، وعَارِم ، ويَحيى الحِمَّاني ، ومُسَدَّد بن مُسَرْهَد ، وأبي مُصْعَب الزُّهري ، وقَالون عيسى ، وتلا عليه بحرف نافع .

وأَخَذَ الفقه عن أحمد بن المُعَذَّل ، وطائفة ، وصِنَاعَة الحديث عن علي ابن المديني ، وفَاقَ أهل عَصْره في الفقه .

روى عنه : أبو القَاسم البَغَوي ، وابنُ صَاعِد ، والنَّجَّاد ، وإسْماعيل الصَّفَّار ، وأبو سَهْل بن زِياد ، وأبو بكر الشَّافعي ، والحَسَن بن محمَّد بن كَيْسان ، وأبو بَحْر محمد بن الحَسَن البَرْبَهَارِي[٢] ، وعَدَدٌ كثيرٌ .

وقد روى النَّسائي ، في كتاب « الكُنَى » ، عن إبراهيم بن موسى ، عنه . وتَفَقَّه به مالكيَّةُ العِراق .

قال أبو بكر الخَطيب[١] : كان عالِماً مُتقناً فقيهاً ، شَرَحَ المذْهَبَ واحتجَّ له ، وصَنَّف « المُسْند » ، وصنَّف عُلوم القُرآن ، وجَمَعَ حديثَ أيُّوب ، وحديثَ مالك .

ثم صنَّف « الموطأ » ، وألَّف كتاباً في الرَّد على محمَّد بن الحَسَن[٢] ، يكون نحوَ مئتي جُزْءٍ ولم يكمل .

استَوْطَن بغدَادَ ، ووَلي قضاءَها إلى أن تُوفي . وتَقَدَّم حتَّى صَارَ عَلَمَاً ، وَنَشَرَ مذهبَ مالك بالعِرَاق .

وله كتابُ « أحكَام القُرآن » ، لم يُسْبَق إلى مِثْلِه ، وكتاب « مَعَاني القُرآن » ، وكتاب في القراءات[٣] .

قال ابن مُجَاهِد : سمعتُ المُبَرِّدَ يقول : إسْماعيل القاضي أعلم مِنِّي بالتَّصْريف[٤] .

وعن إسماعيل القاضي ، قالَ : أتيت يَحيى بن أكْثَم ، وعنده قومٌ يَتَنَاظَرون ، فلمَّا رآني ، قالَ : قد جاءت المدينة[٥] .

قال نِفْطَوَيْه : كان إسْماعيل كاتبَ محمَّد بن عبد الله بن طَاهر ، فحدَّثني أن محمَّداً سأله عن حديث : « أنْتَ مِنّي بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسَى »[١] . وحديث : « مَنْ كُنْتُ مَولاهُ »[٢] . فقلتُ : الاول أصَحُّ ، والآخرُ دُونَه ، قال : فقلتُ لإسْماعيل : فيه طُرُق ، رواه البَصْريُّون والكوفيون ؟ ، فَقَال : نَعَم ، وقَدْ خَابَ وَخَسِرَ مَنْ لَمْ يكن عليٌّ مولاه .

☆ **ज़हबी** ने **"सैर आलाम अल नुबला"** में इस्माइल क़ाज़ी के तज़्किरे में ज़िक्र किया है कि इस्माइल क़ाज़ी कहा करते थे कि:

"जो अली رضي الله عنه को अपना मौला न माने वह नाकाम ओ नामुराद और ख़सारे में है।"

فتح الباري

بشرح صحيح الإمام أبي عبد الله محمد بن إسماعيل البخاري

برواية أبي ذر الهروي
عن مشايخه الثلاثة السرخسي والمستملي والكشميهني

للإمام الحافظ
أحمد بن علي بن حجر
العسقلاني
(٧٧٣ - ٨٥٢ هـ)

الجزء السابع

تقديم وتحقيق وتعليق
عبد القادر شيبة الحمد
عضو هيئة التدريس بقسم الدراسات العليا
بالجامعة الإسلامية سابقا
والمدرس بالمسجد النبوي الشريف

طبع على نفقة
صاحب السمو الملكي الأمير سلطان بن عبد العزيز آل سعود
النائب الثاني لرئيس مجلس الوزراء ووزير الدفاع والطيران والمفتش العام
حفظه الله في موازين حسناته وأمده بعونه

وقريب من هذا الحديث في المعنى حديث جابر بن سمرة قال « قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لعلي : من أشقى الأولين ؟ قال : عاقر الناقة ، قال : فمن أشقى الآخرين ؟ قال : الله ورسوله أعلم . قال : قاتلك » أخرجه الطبراني وله شاهد من حديث عمار بن ياسر عند أحمد ، ومن حديث صهيب عند الطبراني ، وعن علي نفسه عند أبي يعلى بإسناد لين ، وعند البزار بإسناد جيد ، واستدل بحديث الباب على استحقاق علي للخلافة دون غيره من الصحابة ، فإن هارون كان خليفة موسى ، وأجيب بأن هارون لم يكن خليفة موسى إلا في حياته لا بعد موته لأنه مات قبل موسى باتفاق ، أشار إلى ذلك الخطابي . وقال الطيبي : معنى الحديث أنه متصل بي نازل مني منزلة هارون من موسى ، وفيه تشبيه مبهم بينه بقوله « إلا أنه لا نبي بعدي » فعرف أن الاتصال المذكور بينهما ليس من جهة النبوة بل من جهة مادونها وهو الخلافة ، ولما كان هارون المشبه به إنما كان خليفة في حياة موسى دل ذلك على تخصيص خلافة علي للنبي صلى الله عليه وسلم بحياته والله أعلم . وقد أخرج المصنف من مناقب علي أشياء في غير هذا الموضع ، منها حديث عمر « علي أقضانا » وسيأتي في تفسير البقرة . وله شاهد صحيح من حديث ابن مسعود عند الحاكم ، ومنها حديث قتاله البغاة وهو في حديث أبي سعيد « تقتل عماراً الفئة الباغية » وكان عمار مع علي ، وقد تقدمت الإشارة إلى الحديث المذكور في الصلاة . ومنها حديث قتاله الخوارج وقد تقدم من حديث أبي سعيد في علامات النبوة ، وغير ذلك مما يعرف بالتتبع ، وأوعب من جمع مناقبه من الأحاديث الجياد النسائي في كتاب « الخصائص » وأما حديث « من كنت مولاه فعلي مولاه » فقد أخرجه الترمذي والنسائي ، وهو كثير الطرق جدا ، وقد استوعبها ابن عقدة في كتاب مفرد ، وكثير من أسانيدها صحاح وحسان ، وقد روينا عن الإمام أحمد قال : مابلغنا عن أحد من الصحابة مابلغنا عن علي بن أبي طالب .

(تنبيه) : وقع حديث سعد مؤخراً عن حديث علي في رواية أبي ذر وقدمنا عليه في رواية الباقين ، والخطب في ذلك قريب ، والله أعلم

مَناقبُ جَعفرِ بن أبي طالب الهاشميِّ رضيَ اللهُ عنهُ

قالَ له النبيُّ صلى اللهُ عليهِ : «أشبَهتَ خَلْقي وخُلُقي».

٣٥٨١- ثنا أحمدُ بن أبي بكر قال نا مُحمدُ بن إبراهيم بن دينار أبو عبدالله الجُهنيُّ عن ابن أبي ذئبٍ عن سعيدٍ المقبري عن أبي هُريرة : أن الناسَ كانوا يقولون : أكثرَ أبو هُريرةَ ، وإني كُنتُ ألزمُ رسولَ الله صلى اللهُ عليهِ بشبعِ بطني حين لا آكُلُ الخَمير ولا ألبسُ الحَبيرَ ولا يخدُمني فلانٌ ولا فلانةُ ، وكُنتُ ألزقُ بطني بالحصباءِ من الجوع ، وإنْ كُنتُ لأستقرئُ الرَّجلَ الآيةَ هي معي كي ينقلبَ بي فيُطعمني . وكان أخيرَ الناسِ للمسكين جعفرُ بن أبي طالب : كانَ ينقلبُ بنا فيطعمُنا ما كانَ في بيتهِ ، حتى إن كانَ ليُخرجُ إلينا العُكّةَ التي ليس فيها شيءٌ ، فيشُقُّها فنلعقُ ما فيها .

☆ **फ़तहुलबारी में इब्न-ए-हजर** ﷺ फ़रमाते हैं: यह हदीस “मन कुन्तो मौला....” बहुत से तरीक़े से मरवी है, इब्न-ए-अक़्दा ने एक मुस्तक़िल किताब में इन सब का अहाता कर दिया है, इसकी बहुत सी सनदें या तो सही हैं या हसन।

المطالب العالية

بزوائد المسانيد الثمانية

للحافظ أحمد بن علي بن حجر العسقلاني

٧٧٣ - ٨٥٢ هجرية

تحقيق

عبد الله بن ظافر بن عبد الله الشهري

تنسيق

د. سعد بن ناصر بن عبد العزيز الشثري

المجلد السادس عشر

٣١ - ٣٢

من كتاب المناقب

من مناقب عثمان بن عفان - إلى فضل الأنصار رضي الله عنهم

(٣٩٠٤ - ٤١٤٣)

دار العاصمة للنشر والتوزيع

دار الغيث للنشر والتوزيع

٣٩٤٣ ــ وقال إسحاق: أخبرنا أبو عامر العَقَدي، عن كثير بن زيد، عن محمد بن [عمر][١] بن علي عن أبيه، عن علي رضي الله عنه قال: إن النبي ﷺ حضر الشجرة بِخُمٍّ، ثم خرج آخذاً بيد علي رضي الله عنه قال[٢]: «ألستم تشهدون أن الله تبارك وتعالى ربُّكم؟» قالوا: بلى. قال ﷺ: «ألستم تشهدون أن الله ورسوله أولى بكم من أنفسكم وأن الله تعالى ورسوله أولياؤكم[٣]؟».

فقالوا[٤]: بلى. قال: «فمن كان الله ورسوله مولاه فإن هذا مولاه، وقد تركت فيكم ما إن أخذتم به لن تضلوا كتاب الله تعالى، سببه بيدي[٥]، وسببه بأيديكم، وأهل بيتي».

* / هذا إسناد صحيح[٦]، وحديث غَدِيرِ خُمٍّ قد أخرجه النسائي[٧]

---

(١) في (عم) و (سد): «محمد بن عمر بن علي»، وفي الأصل: «محمد بن علي»، والظاهر أن الصواب هو الأول.

(٢) في (عم) و (سد): «فقال».

(٣) في (عم) و (سد): «أولى بكم من أنفسكم وأن الله جل وعلا ورسوله مولياكم؟».

(٤) في (عم) و (سد): «قالوا».

(٥) في (عم): «سببه بيده».

(٦) لعل هذا سبق قلم من المصنف رحمه الله تعالى فقد تبين مما سبق أن الحديث حسن بهذا الإسناد من أجل كثير بن زيد وهو الذي قال فيه المصنف في التقريب: صدوق يخطىء. وكذلك محمد بن عمر بن علي فقد حكم عليه في التقريب بقوله: صدوق، والله أعلم.

(٧) حديث زيد بن أرقم في السنن الكبرى ــ المناقب ــ كتاب الخصائص ــ باب قول النبي ﷺ: «من كنت وليه فعلي وليه» (٥/ ١٣٠ : ٨٤٦٤ و ٨٤٦٩)، ومن حديث بريدة (ح ٨٤٦٥ و ٨٤٦٦ و ٨٤٦٧)، ومن حديث سعد (ح ٨٤٦٨)، ومن حديث علي رضي الله عنهم (ح ٨٤٧٠ و ٨٤٧١ و ٨٤٧٢ و ٨٤٧٣).

☆ **“अलमतालिबुल आलिया बज़वाइदल मसानीदल समानिया” में इब्न-ए-हजर अस्क़लानी** رحمہ اللہ

फ़रमाते हैं कि :.... “रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: ‘अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ! और रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم जिसके मौला हैं तो ये (अली رضی اللہ عنہ) भी उसके मौला हैं, मैं ने तुम्हारे दरमियान ऐसी चीज़ छोड़ी है कि अगर उसे थामे रहोगे तो कभी गुमराह न हो सकोगे, अल्लाह की किताब, जिसका एक सिरा इसके हाथ में है और एक तुम्हारे हाथ में, और मेरे अह्ल-ए-बैत علیہم السلام ।”

→ **इसकी सनद सही है।**

البداية والنهاية

للحافظ عماد الدين أبي الفداء إسماعيل
ابن عمر بن كثير القرشي الدمشقي
٧٠١ - ٧٧٤ هـ

تحقيق
الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركي

بالتعاون مع
مركز البحوث والدراسات العربية والإسلامية
بدار هجر

الجزء السابع

هجر
للطباعة والنشر والتوزيع والإعلان

أنهم سمعوا رسولَ اللهِ ﷺ يقولُ لعليٍّ يومَ غَديرِ خُمٍّ : « أليس اللهُ أَوْلَى بالمؤمنين[1] ؟ » قالوا : بلى . قال : « اللهم مَن كنتُ مولاه فعليٌّ مولاه ، اللهم [٣/ ٣٢٥ و] والِ مَن والاه ، وعادِ مَن عاداه » .

قال عبدُ اللهِ[2] : وحدثنى عليُّ بنُ حكيمٍ ، أنا شريكٌ ، عن أبى إسحاقَ ، عن عمرٍو ذى مُرٍّ[3] بمثلِ حديثِ أبى إسحاقَ ، يعنى عن سعيدٍ وزيدٍ ، وزاد فيه : « وانصُرْ مَن نصَره ، واخذُلْ مَن خذَله » .

قال عبدُ اللهِ[2] : وحدَّثنا عليٌّ ، ثنا شَريكٌ ، عن الأعمشِ ، عن حبيبِ بنِ أبى ثابتٍ ، عن أبى الطُّفَيلِ ، عن زيدِ بنِ أرقَمَ ، عن النبيِّ ﷺ مثلَه .

وقال النسائيُّ فى كتابِ « خصائصِ عليٍّ »[4] : حدَّثنا الحسينُ بنُ حُرَيثٍ[5] ، ثنا الفضلُ بنُ موسى ، عن الأعمشِ ، عن أبى إسحاقَ ، عن سعيدِ بنِ وهبٍ قال : قال عليٌّ فى الرَّحَبةِ : أَنشُدُ باللهِ رجلًا[6] سمِع رسولَ اللهِ ﷺ يومَ غَديرِ خُمٍّ يقولُ : « إن اللهَ [7]وَلِيِّى وأنا[7] ولىُّ المؤمنين ، ومَن كنتُ وليَّه فهذا وليُّه ، اللهم والِ مَن والاه ، وعادِ مَن عاداه ، وانصُرْ مَن نصَره » . وكذلك رواه شعبةُ عن أبى إسحاقَ[8] . وهذا إسنادٌ جيدٌ .

---

(١) بعده فى م : « من أنفسهم » .
(٢) المسند ١/ ١١٨. (إسناده صحيح) .
(٣) فى م : « أمر » . وانظر تهذيب الكمال ٢٢/ ٣٠٢.
(٤) خصائص على (٩٨) ، كما أخرجه النسائى فى الكبرى (٨٤٨٣) .
(٥) فى النسخ : « حرب » . والمثبت من مصدرى التخريج . وانظر تهذيب الكمال ٦/ ٣٥٨.
(٦) فى الخصائص ، والسنن الكبرى : « من » .
(٧ - ٧) سقط من النسخ . والمثبت من مصدرى التخريج .
(٨) النسائى فى الكبرى (٨٤٧١) .

☆ **"अलबिदाया वन्निहाया"** में हाफ़िज़ **इब्न-ए-कसीर** हदीस "मन कुन्तो मौला...." के बारे में फ़रमाते हैं कि **इसकी असनाद बहुत उम्दा हैं।**

البداية والنهاية

للحافظ عماد الدين أبى الفداء إسماعيل
ابن عمر بن كثير القرشى الدمشقى

٧٠١ - ٧٧٤ هـ

تحقيق

الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركى

بالتعاون مع
مركز البحوث والدراسات العربية والإسلامية
بدار هجر

الجزء السابع

هجر
للطباعة والنشر والتوزيع والإعلان

عبدِ الملكِ بنِ أبى غَنِيَّةَ بإسنادِه نحوَه[1] . وهذا إسنادٌ جيدٌ قوىٌّ رجالُه كلُّهم ثقاتٌ .

وقد روَى النسائىُّ فى « سننِه »[2] عن محمدِ بنِ المثنَّى ، عن يحيى بنِ حمادٍ ، عن [3]أبى عَوانةَ[3] ، عن الأعمشِ ، عن حبيبِ بنِ أبى ثابتٍ ، عن أبى الطُّفَيلِ ، عن زيدِ بنِ أرقَمَ قال : لما رجَع رسولُ اللهِ ﷺ مِن حجةِ الوَداعِ ونزَل غديرَ خُمٍّ ، أمَر بدَوْحاتٍ فقُمِمْنَ ، ثم قال : « كأنى قد دُعِيتُ فأجَبْتُ ، إنى قد تركْتُ فيكم الثَّقَلَيْن ، [4]أحدُهما أكبرُ من الآخرِ[4] ، كتابَ اللهِ وعِترتى أهلَ بيتى ، فانظُروا كيف تخلُفونى فيهما ، فإنهما لن يَفْترِقا[5] حتى يَرِدا علىَّ الحوضَ » . ثم قال : « اللهُ مولاىَ ، وأنا ولىُّ كلِّ مؤمنٍ » . ثم أخَذ بيدِ علىٍّ ، فقال : « مَن كنتُ مولاه فهذا وليُّه ، اللهم والِ مَن والاه ، وعادِ مَن عاداه » . فقلتُ لزيدٍ : سمِعْتَه مِن رسولِ اللهِ ﷺ ؟ فقال : ما كان فى الدَّوْحاتِ أحدٌ إلا رآه بعينيه ، وسمِعه بأذنيه . تفرد به النسائىُّ مِن هذا الوجهِ . قال شيخُنا أبو عبدِ اللهِ الذهبىُّ : وهذا حديثٌ صحيحٌ[6] .

وقال ابنُ ماجه[7] : حدَّثنا علىُّ بنُ محمدٍ ، أنبأنا أبو الحسينِ ، أنبأنا حمادُ بنُ

---

(١) النسائى فى الكبرى (٨٤٦٧) .
(٢) النسائى فى الكبرى (٨٤٦٤) .
(٣ - ٣) فى النسخ : « أبى معاوية » . والمثبت من السنن الكبرى وتحفة الأشراف ٣/ ١٩٥ . وهو الوضاح ابن عبد الله اليشكرى . وانظر تهذيب الكمال ٣٠/ ٤٤١ .
(٤ - ٤) سقط من النسخ . والمثبت من السنن الكبرى .
(٥) فى السنن الكبرى : « يتفرقا » .
(٦) أخرج هذا الحديث الحاكم فى المستدرك ٣/ ١٠٩ ، من طريق حبيب بن أبى ثابت به ، وقال : هذا حديث صحيح . ووافقه الذهبى .
(٧) ابن ماجه (١١٦) . صحيح (صحيح سنن ابن ماجه ٩٤) .

☆ **“अलबिदाया वन्निहाया”** में **इब्न-ए-कसीर** रिवायत करते हैं: ....आप ﷺ ने ग़दीर ख़ुम पे पड़ाव डाला, सायबान लगाने का हुक्म दिया, तो सायबान लगाए गए......आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं जिसका मौला हूँ यह (अली رضی اللہ عنہ) उसके वली हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उसे दोस्त रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।”

→ **(इब्न-ए-कसीर कहते है) हमारे शेख़ अबू अब्दुल्लाह ज़हबी कहते हैं कि यह हदीस सही है।**

ما قالَه له النبيُّ ﷺ هُناك كان في رَجْعتِهِ من حجِّه، وإنما يكونُ ذٰلك مُحالاً كما ذكرت لو كان في الحديث أنَّ النبيَّ ﷺ قالَ له هٰذا في القولِ في خُروجه إلى مكّةَ مُتوجهاً لها.

وقد وجدنا بحمدِ الله ونعمته في ذٰلك حديثاً صحيحَ الإسناد يُخبر أنَّ ذٰلك القولَ الذي كان من رسُولِ الله ﷺ لعليٍّ بغدير خُمّ، إنما كان في رجوعه إلى المدينة من حجِّه، لا في خروجه منها إلى حجِّهِ.

١٧٦٥ ـ كما حدثنا أحمد بنُ شُعيب قال: أخبرنا محمد بن المُثنّى، قال: حدثنا يحيى بنُ حمّاد، قال: حدثنا أبو عَوَانة، عن سُليمان ـ يعني الأعمش ـ قال: حدثنا حبيبُ بنُ أبي ثابت، عن أبي الطُّفَيل

عن زيد بن أرقم، قال: لما رجع رسولُ الله ﷺ عن حجَّة الوداع، ونزل بغدير خُمّ، أمر بدَوحاتٍ فَقُمِمن، ثم قال: «كأنّي دُعِيتُ فأَجَبْتُ، إنّي قد تَرَكْتُ فيكُمُ الثَّقَلَيْنِ أَحَدُهُما أَكْبَرُ مِنَ الآخَر: كِتَابُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَعِتْرَتِي أَهْلُ بَيْتِي، فَانْظُرُوا كَيْفَ تَخْلُفُوني فيهما، فإنَّهُمَا لَنْ يَتَفَرَّقَا حَتَّى يَرِدَا عَلَيَّ الحَوضَ» ثم قال: «إنَّ اللهَ عز وجل مَوْلايَ، وَأَنَا وَليُّ كُلِّ مُؤمِنٍ»، ثم أخذ بيد علي رضي الله عنه، فقال: «مَن كُنْتُ وَلِيَّهُ فهٰذا وَلِيُّهُ، اللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالاهُ، وَعادِ مَنْ عَادَاهُ». فقلت لزيد: سمعتَهُ من رسول الله ﷺ؟ فقال: ما كان في الدَّوْحَاتِ أحدٌ إلا رآه بعينَيْه وسمعه بأذُنَيْه[1].

(1) رجاله ثقات رجال الشيخين، إلا أن حبيب بن أبي ثابت مدلس وقد عنعن، لكن تابعه فطر بن خليفة عند المؤلف (١٧٦٢) فالحديث صحيح. أبو عوانة: هو ـ

قال أبو جعفر: فهٰذا الحديث صحيح الإسناد، لا طَعْنَ لأحدٍ في أحدٍ من رواته فيه أنَّ كان ذٰلك القول، كان من رسول الله ﷺ لعليٍّ بغدير خُمّ في رجوعه من حجِّهِ إلى المدينة، لا في خروجه لحجِّه من المدينة.

فقال هٰذا القائلُ: فإنَّ هٰذا الحديث قد رُوِيَ عن سعد بن أبي وقاص في هٰذه القصة، وأنَّ ذٰلك القول إنما كان من رسول الله ﷺ بغدير خُمّ في ... الحج إلى المدينة!!

شرح مشكل الآثار

تأليف الإمام المحدث الفقيه المفسر أبي جعفر أحمد بن محمد بن سلامة الطحاوي (٢٣٩ - ٣٢١هـ)

حققه وضبط نصه وخرج أحاديثه وعلق عليه شعيب الأرنؤوط

الجزء الخامس

مؤسسة الرسالة

ـ وضاح اليشكري،
وهو في «فضـ ... مد بن
شعيب النسائي ...
ورواه البزار (١ ... فظه.
ورواه الحاكم ... شرط
الشيخين، وأقرّه الذ ...
ورواه الطبراني ... ى بن
كثير، عن أبي عوا ... ، عن
حبيب بن أبي ثابت ... ، غير
ما تحريف، فيُصحـ ...
ورواه البزار (٨ ...
الدَّوحات: جمـ ... ، إلى
«الدرجات».
وقُمِمن: أي كُنس ...هن.

☆ **इमाम तहावी** ﷫ **“शरह मुश्किलुल आसार”** में इस रिवायत को नक़ल करते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷛ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ जब हज्जतुल विदाअ से वापस हुए तो ग़दीर ख़ुम पर पड़ाव डाला, आप ﷺने सायबान लगाने का हुक्म दिया तो उन्हें लगाया गया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करूँ, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढ़ कर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत यानी मेरे अह्ल-ए-बैत ﷈, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगें, ये दोनों आपस में जुदा नहीं होंगे ता आं कि हौज़ पर आ कर मुझसे मिलें”, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ﷻ मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का वली हूँ”, फिर आप ﷺ ने हज़रत अली ﷛ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: “मैं जिसका वली हूँ तो यह भी उसके वली हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख”, रावी कहते हैं: “मैं ने ज़ैद ﷛से पूछा: “क्या आपने यह रसूलल्लाह ﷺ से सुना है?” आप ﷛ ने फ़रमाया: “उन सायबानों में जो भी था हर एक ने उसे अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना।”

→ **इमाम तहावी कहते हैं कि: यह हदीस सहीहुल असनाद है, इसके रावियों में कोई भी मतऊन नहीं है।**

→ इस किताब के **मोहक़्क़िक़ शोऐब अरनौवत** कहते हैं: **इस के रिजाल सिक़्क़ा हैं और शेख़ैन (इमाम बुख़ारी ﷫ व इमाम मुस्लिम ﷫) के रिजाल हैं,** हाँ हबीब बिन अबी साबित तदलीस किया करते हैं और कभी अन से रिवायत बयान करते हैं, लेकिन फ़ितर बिन ख़लीफ़ा ने उनकी मुताबियत की है जिसे मोअल्लिफ़ ने (१७६२) में नक़ल किया है, **लिहाज़ा हदीस सही है।**

قلت : فمثله لا ينزل حديثه عن مرتبة الحسن . والله أعلم .

ولعل المراد بالحديث تغيير نظام اختيار الخليفة ، وجعله وراثة . والله أعلم .

طرق حديث : من كنت مولاه ...

١٧٥٠ - (مَنْ كُنْتُ مولاه ، فعليٌّ مولاه ، اللهم والِ من والاه ، وعادِ من عاداه) .

ورد من حديث زيد بن أرقم ، وسعد بن أبي وقاص ، وبريدة بن الحصيب ،

عازب ، وعبد الله بن عباس ،

سِلسِلة

الأحَاديث الصَّحيحَة

وَشيءٌ مِنْ فِقهِهَا وَفوائِدِها

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الرابع

١٥٠١ - ٢٠٠٠

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع

لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد

الرياض

(خُم) ، أمر بدوحاتٍ فقُمِمْنَ ،

أحدهما أكبر من الآخر : كتاب

فإنهما لن يتفرقا حتى يردا عليّ

. ثم إنه أخذ بيد علي رضي الله

الاه ، وعاد من عاداه » .

١) والحاكم (٣/١٠٩) وأحمد

- ٤٩٧٠) عن سليمان الأعمش

« صحيح على شرط الشيخين » .

قلت : سكت عنه الذهبي ، وهو كما قال لولا أن حبيباً كان مدلساً ، وقد عنعنه .

إذا عرفت هذا ، فقد كان الدافع لتحرير الكلام على الحديث وبيان صحته أني رأيت شيخ الإسلام ابن تيمية ، قد ضعف الشطر الأول من الحديث ، وأما الشطر الآخر ، فزعم أنه كذب[١] ! وهذا من مبالغاته الناتجة في تقديري من تسرعه في تضعيف الأحاديث قبل أن يجمع طرقها ويدقق النظر فيها . والله المستعان .

أما ما يذكره الشيعة في هذا الحديث وغيره أن النبي ﷺ قال في عليّ رضي الله عنه :

« إنه خليفتي من بعدي » .

فلا يصح بوجه من الوجوه ، بل هو من أباطيلهم الكثيرة ، التي دل الواقع التاريخي على كذبها ، لأنه لو فرض أن النبي ﷺ قاله ، لوقع كما قال ، لأنه (وحي يوحى) ، والله سبحانه لا يخلف وعده ، وقد خرجت بعض أحاديثهم في ذلك في الكتاب الآخر : « الضعيفة » (٤٩٢٣ و ٤٩٣٢) في جملة أحاديث لهم احتج بها عبد الحسين في « المراجعات » بيّنت وهاءها وبطلانها ، وكذبه هو في بعضها ، وتقوله على أئمة السنة فيها .

١٧٥١ - (أيْ إخْواني ! لمثلِ اليومِ فأعِدُّوا) .

أخرجه البخاري في «التاريخ» (٢٢٩/١/٨) وابن ماجه (٤١٩٥) وأحمد (٢٩٤/٤) وأبو بكر الشافعي في «مجلسان» (٢/٦) والروياني في «مسنده» (ق ١/٩٦) والخطيب في «التاريخ» (٣٤١/١) من طريق أبي رجاء عبد الله بن واقد الهروي قال : ثنا محمد بن مالك عن البراء عازب قال :

---

(١) انظر « مجموع الفتاوى » (٤١٧/٤ - ٤١٨) .

☆ **अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी "सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा"** (जिस में उन्हों ने सही अहादीस को जमा किया है) में (रक़मुल हदीस: १७५०) हदीस "मन कुन्तो मौला....." को नक़ल करने के बाद कहते हैं कि **यह शेख़ैन(इमाम बुख़ारी ﵀ व इमाम मुस्लिम ﵀) की शर्त पर सही है।**

→ इस हदीस पर कलाम करने और इसकी सेहत को वाज़ेह करने का सबब यह था कि इब्न-ए-तैमिया ने इस रिवायत के पहले टुकड़े को ज़ईफ़ बताया है और दूसरे को कज़ब क़रार दिया है, यह इब्न-ए-तैमिया का मुबालिग़ा है, जिस की वजह मेरे नजदीक यह है कि आप अहादीस के तरक़ को जमा करने और उनमें वक़्त-ए-नज़र से काम लेने से पहले ही उन्हें ज़ईफ़ क़रार देने में जल्दी करते हैं।

سلسلة

الأحاديث الصحيحة

وشيء من فقهها وفوائدها

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الرابع

١٥٠١ ـ ٢٠٠٠

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

أخرجه ابن أبي عاصم (١٣٧٣) بسند ضعيف عنه ، وهو المهاجر بن عميرة . كذا ذكره في «الجرح والتعديل» (٢٦١/١/٤) من رواية عدي بن ثابت الأنصاري عنه . ولم يذكر فيه جرحاً ولا تعديلاً ، وكذا هو في «ثقات ابن حبان» (٢٥٦/٣) .

٥ ـ أبو أيوب الأنصاري . يرويه رياح بن الحارث قال :

« جاء رهط إلى علي بالرحبة ، فقالوا : السلام عليك يا مولانا ، قال : كيف أكون مولاكم ، وأنتم قوم عرب ؟ قالوا : سمعنا رسول الله ﷺ يوم غديرخم يقول : (فذكره دون الزيادة) قال رياح : فلما مضوا تبعتهم فسألت : من هؤلاء ؟ قالوا : نفر من الأنصار فيهم أبو أيوب الأنصاري » .

أخرجه أحمد (٤١٩/٥) والطبراني (٤٠٥٢ و ٤٠٥٣) من طريق حنش بن الحارث بن لقيط النخعي الأشجعي عن رياح بن الحارث .

قلت : وهذا إسناد جيد رجاله ثقات

وقال الهيثمي :

« رواه أحمد والطبراني ، ورجال أحمد ثقات » .

٦ ـ البراء بن عازب . يرويه عدي بن ثابت عنه قال :

« كنا مع رسول الله ﷺ في سفر فنزلنا بغدير خم ، فنودي فينا : الصلاة جامعة ، وكسح لرسول الله ﷺ تحت شجرتين فصلى الظهر ، وأخذ بيد علي رضي الله تعالى عنه ، فقال : ألستم تعلمون أني أولى بكل مؤمن من نفسه ؟ . . . » الحديث مثل رواية فطر بن خليفة عن زيد . وزاد :

« قال : فلقيه عمر بعد ذلك ، فقال له : هنيئاً يا ابن أبي طالب ، أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة » .

أخرجه أحمد وابنه في زوائده (٢٨١/٤) وابن ماجه (١١٦) مختصراً من طريق

☆ **अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी ने "सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा"** में रिवायत की है:

एक जमाअत रहबा में हज़रत अली ﷺ के पास आई, और कहा: "अस्सलामु अलैकुम या मौलाना", आप ﷺ ने पूछा: "मैं तुम्हारा मौला कैसे हो सकता हूँ जबकि तुम अरब हो?" उन लोगों ने कहा: "हमने ग़दीर ख़ुम के दिन रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना था कि....(फिर यह रिवायत इज़ाफ़ा के बग़ैर ज़िक्र की है)।" रियाह कहते हैं: जब वह लोग चले गए तो मैं उनके पीछे गया और पूछा कि "ये कौन लोग हैं?" लोगों ने बताया: "यह अंसार की जमाअत है, इसमें हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ﷺ भी थे।"

→ **अल्लामा अलबानी कहते हैं;** मैं कहता हूँ कि **उसकी सनद उम्दा है और इसके रिज़ाल सिक्क़ा हैं।**

قلت : فمثله لا ينزل حديثه عن مرتبة الحسن . والله أعلم .

ولعل المراد بالحديث تغيير نظام اختيار الخليفة ، وجعله وراثة . والله أعلم .

طرق حديث : من كنت مولاه ...

١٧٥٠ - (مَنْ كُنْتُ مولاه ، فعليٌّ مولاه ، اللهم والِ من والاه ، وعادِ من عاداه) .

ورد من حديث زيد بن أرقم ، وسعد بن أبي وقاص ، وبريدة بن الحصيب ، وعلي بن أبي طالب ، وأبي أيوب الأنصاري ، والبراء بن عازب ، وعبد الله بن عباس وأنس بن مالك ، وأبي سعيد ، وأبي هريرة .

١ - حديث زيد ، وله عنه طرق خمس :

الأولى : عن أبي الطفيل عنه قال :

لما دفع النبي ﷺ من حجة الوداع ، ونزل غدير (خُم) ، أمر بدوحاتٍ فقُمِمْنَ ، ثم قال : كأني دعيت فأجبت ، وإني تارك فيكم الثقلين أحدهما أكبر من الآخر : كتاب الله ، وعترتي أهل بيتي ، فانظروا كيف تخلفوني فيهما ، فإنهما لن يتفرقا حتىٰ يردا عليَّ الحوض ، ثم قال : «إن الله مولاي وأنا ولي كل مؤمن» . ثم إنه أخذ بيد علي رضي الله عنه فقال :

« من كنت وليه ، فهذا وليه ، اللهم والِ من والاه ، وعاد من عاداه » .

أخرجه النسائي في «خصائص علي» (ص١٥) والحاكم (٣/١٠٩) وأحمد (١١٨/١) وابن أبي عاصم (١٣٦٥) والطبراني (٤٩٦٩ - ٤٩٧٠) عن سليمان الأعمش قال : حدثنا حبيب بن أبي ثابت عنه وقال الحاكم :

« صحيح على شرط الشيخين » .

قلت : سكت عنه الذهبي ، وهو كما قال لولا أن حبيباً كان مدلساً ، وقد عنعنه .

لكنه لم يتفرد به ، فقد تابعه فطر بن خليفة عن أبي الطفيل قال :

« جمع علي رضي الله عنه الناس في الرحبة ثم قال لهم : أنشد الله كل امرىء مسلم سمع رسول الله ﷺ يقول يوم غدير خم ما سمع لما قام ، فقام ثلاثون من الناس ، (وفي رواية : فقام ناس كثير) فشهدوا حين أخذ بيده فقال للناس :

« أتعلمون أني أولىٰ بالمؤمنين من أنفسهم ؟ » قالوا : نعم يا رسول الله ، قال :

« من كنت مولاه ، فهذا مولاه ، اللهم والِ من والاه ، وعادِ من عاداه » .

قال : فخرجت وكأن في نفسي شيئاً ، فلقيت زيد بن أرقم ، فقلت له : إني سمعت علياً يقول كذا وكذا ، قال : فما تنكر ، قد سمعت رسول الله ﷺ يقول ذلك له » .

أخرجه أحمد (٤/ ٣٧٠) وابن حبان في «صحيحه» (٢٢٠٥ - موارد الظمآن) وابن أبي عاصم (١٣٦٧ و ١٣٦٨) والطبراني (٤٩٦٨) والضياء في «المختارة» (رقم ٥٢٧- بتحقيقي) .

قلت : وإسناده صحيح على شرط البخاري .

وقال الهيثمي في «المجمع» (٩/ ١٠٤) :

« رواه أحمد ، ورجاله رجال الصحيح

وتابعه سلمة بن كهيل قال : سمعت

أرقم - شك شعبة - عن النبي ﷺ به مختصراً

« من كنت مولاه ، فعلي مولاه » .

أخرجه الترمذي (٢/ ٢٩٨) وقال :

« حديث حسن صحيح » .

قلت : وإسناده صحيح على شرط ال

سلسلة
الأحاديث الصحيحة
وشيء من فقهها وفوائدها
محمد ناصر الدين الألباني
المجلد الرابع
مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

☆ अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी ने **“सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा”** (१७५०) में “मन कुन्तो मौला.....” को नक़ल करने के बाद कहते हैं: **“हाकिम ﷺ ने कहा है: यह सही है और शेख़ैन(इमाम बुख़ारी ﷺ व इमाम मुस्लिम ﷺ) की शरायत पर है।”**

→ मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ: यह ऐसी ही होती जैसा कि ज़हबी ने कहा है अगर हबीब मुदलस न होता, कि उसने इसे अन से रिवायत की है, लेकिन वह इस रिवायत में मुन्फ़रिद नहीं है, फ़ितर बिन ख़लीफ़ा ने अबू तुफ़ैल से इसे रिवायत किया है और हबीब की मुताबिअत की है।

→ **मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ: इस (मुताबेअ) की सनद सही है और बुख़ारी की शर्त पर है।**

الجامع الصحيح

وهو

سنن الترمذي

لأبي عيسى محمد بن عيسى بن سورة

٢٠٩ - ٢٩٧ هـ

من كان في بيته
هذا الكتاب فكأنما
في بيته نبي يتكلم

تحقيق وتعليق
إبراهيم عطوة عوض
المدرس في الأزهر الشريف

الجزء الخامس

شركة مكتبة ومطبعة مصطفى البابي الحلبي وأولاده بمصر
محمد محمود الحلبي وشركاه - خلفاء

٣٧١٣ - حدثنا محمد بن بشار. حدثنا محمد بن جعفر. حدثنا شعبة عن سلمة بن كهيل قال: سمعت أبا الطفيل يحدث عن أبي سريحة أو زيد بن أرقم، شك شعبة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: من كنت مولاه فعلي مولاه.

قال أبو عيسى: هذا حديث حسن صحيح.

وقد روى شعبة هذا الحديث عن ميمون أبي عبد الله، عن زيد ابن أرقم عن النبي صلى الله عليه وسلم.

وأبو سريحة: هو حذيفة بن أسيد الغفاري صاحب النبي صلى الله عليه وسلم.

٣٧١٤ - حدثنا أبو الخطاب زياد بن يحيى البصري. حدثنا أبو عتاب: سهل بن حماد. حدثنا المختار بن نافع. حدثنا أبو حيان التيمي عن أبيه عن علي قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: رحم الله أبا بكر زوجني ابنته، وحملني إلى دار الهجرة، وأعتق بلالا من ماله. رحم الله عمر، يقول الحق وإن كان مرا، تركه الحق وما له صديق. رحم الله عثمان، تستحييه الملائكة. رحم الله عليا، اللهم أدر الحق معه حيث دار.

قال أبو عيسى: هذا حديث غريب لا نعرفه إلا من هذا الوجه.

والمختار بن نافع: شيخ بصري كثير الغرائب.

وأبو حيان التيمي اسمه: يحيى بن سعيد بن حيان التيمي: كوفي. وهو ثقة.

☆ **इमाम तिर्मिज़ी** رحمه الله ने रिवायत की है कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि "रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया:

'मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं।"

→ **इमाम तिर्मिज़ी** رحمه الله **फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन सही है।**

صحيح سنن ابن ماجه

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن يزيد القزويني

المتوفى سنة (٢٧٥هـ)

تأليف

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الأول

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع

لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد

الرياض

٩٧ - ١١٨ - عن حُبْشيّ بن جُنادة، قالَ: سمعتُ رسولَ اللهِ ﷺ يقولُ:

« عليٌّ منّي وأنا منهُ، ولا يُؤدّي عنّي إلّا عليٌّ ».

حسن: « المشكاة » (٦٠٨٣)، « الصحيحة » (١٩٨٠)، « الظلال » (١١٨٩).

٩٨ - ١٢٠ - عن سعدِ بنِ أبي وقّاصٍ قالَ:

قدِمَ مُعاويةُ في بعضِ حجّاتِهِ، فدَخلَ عليهِ سعدٌ، فذكروا عليًّا فنالَ منهُ [1]، فغضِبَ سعدٌ وقالَ: تقولُ هذا لرجلٍ سمعتُ رسولَ اللهِ ﷺ يقولُ:

« مَن كنتُ مولاهُ فعليٌّ مولاهُ ». وسمعتُهُ يقولُ:

« أنتَ منّي بمنزلةِ هارونَ مِن موسى، إلّا أنّهُ لا نبيَّ بعدي »! وسمعتُهُ يقولُ:

« لأُعطينَّ الرّايةَ اليومَ رجلًا يُحبُّ اللهَ ورسولَهُ »؟!

١٢٠ صحيح « الصحيحة » (٤ / ٣٣٥).

- فضل الزّبير رضي الله عنه -

٩٩ - ١٢١ - عن جابرٍ قالَ: قالَ رسولُ اللهِ ﷺ - يومَ قُريظةَ -:

« مَنْ يأتينا بخَبَرِ القومِ؟ »، فقالَ الزبيرُ: أنا.

---

(١) « فنال منه » أي: نال معاوية من عليّ، وتكلّم فيه.

☆ **इब्न-ए-माजा** (९८-१२०) में है कि हज़रत मुआविया ؓ हज करने तशरीफ़ लाए तो उनके पास हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ؓ तशरीफ़ ले गए, हज़रत अली ؓ का कुछ तज़किरा निकला तो हज़रत मुआविया ؓ ने हज़रत अली ؓ के बारे में कुछ कहा, हज़रत साद ؓ ने नाराज़ हो कर फ़रमाया: “तुम यह बात उस शख़्स के बारे में कहते हो जिसके बारे में मैं ने रसूलल्लाह ﷺ से सुना: ‘मैं जिसका मौला हूँ तो अली ؓ भी उसके मौला हैं।.......तुम (हज़रत अली ؓ) मेरे नजदीक उस मक़ाम-ओ-मर्तबा पर हो जो हज़रत मूसा ؑ के नज़दीक हज़रत हारुन ؑ को हासिल था, मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं है।.....मैं कल झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ से मुहब्बत करता है।”

→ **अल्लामा अलबानी “सिलसिलतुल सहीहा” में कहते हैं: यह सही है।**

صحيح سنن ابن ماجه

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن يزيد القزويني

المتوفى سنة (٢٧٥هـ)

تأليف

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الأول

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

- فضل علي بن أبي طالب رضي الله عنه ،

٩٢ - ١١٣ - عن عليٍّ ، قالَ :

عَهِدَ إليَّ (١) النبيُّ الأُميُّ ﷺ أنَّهُ لا يُحبُّني إلَّا مؤمنٌ ، ولا يُبغضُني إلا منافقٌ .

صحيح : « الصحيحة » (١٧٢٠) : م .

٩٣ - ١١٤ - عن سعد بن أبي وقَّاصٍ ، عن النبيِّ ﷺ أنَّهُ قالَ لعليٍّ :

« ألَا ترضى أنْ تكونَ منِّي بمنزلةِ هارُونَ من موسى (٢) ؟ » .

صحيح : « الروض » (٢٧٧) ، « التعليق على التنكيل » (١ / ٤٥) : ق .

٩٤ - ١١٥ - عن البراءِ بنِ عازبٍ ، قال :

أقبلْنا معَ رسولِ اللهِ ﷺ في حَجَّتِه التي حجَّ ، فنزلَ في بعضِ الطريقِ ، فأمرَ : الصلاةَ جامعةً ، فأخذَ بيدِ عليٍّ - رضي الله عنه - ، فقالَ : « ألستُ أولى بالمؤمنينَ من أنفسهمْ ؟ » ، قالوا : بلى ، قالَ : « ألستُ أولى بكلِّ مؤمنٍ من نفسهِ ؟ » ، قالوا : بلى ، قالَ : « فهذا وليُّ مَنْ أنا مولاهُ ، اللَّهمَّ ! والِ من والاهُ ، اللَّهمَّ ! عادِ من عاداهُ » .

صحيح : « الصحيحة » (١٧٥٠) .

(١) « عهد إليَّ » ، أي : ذكر لي وأخبرني بذلك .

(٢) « بمنزلة هارون من موسى » ، يعني : حين استخلفه عند توجهه إلى الطور ، وليس في هذا الحديث تعرض لكونه خليفة له ﷺ بعده .

وكيف ، وهارون ما كان خليفة لموسى بعد موسى ؟ بل توفي في حياة موسى .

☆ सही सुनन **इब्न-ए-माजा** में है:

हज़रत बरा बिन आजिब رضی اللہ عنہ कहते हैं कि, “हज्जतुल विदाअ में हम रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के साथ वापस आए, रास्ते में आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने क़याम किया, हुक्म दिया कि नमाज़ खड़ी होने वाली है, आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ा और फ़रमाया: “क्या मैं मोमिनीन की जानों का उन से ज़ियादा मुस्तहक़ नहीं हूँ?” लोगों ने कहा: “क्यूँ नहीं,” आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: “जिसका मैं मौला हूँ यह (हज़रत अली رضی اللہ عنہ) उसके वली हैं, ऐ अल्लाह سبحانہ و تعالیٰ ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।”

→ **अलबानी कहते हैं: यह सही है।**

صحيح
«الجامع الصغير وزيادته»
(الفتح الكبير)

تأليف

محمد ناصر الدين الألباني

اطلب معه القسم الآخر،
«ضعيف الجامع الصغير وزيادته»
و«تبويب وترتيب أحاديث الصحيح على أبواب الفقه»
و«معجم غرائب ألفاظه»

المجلد الثاني

المكتب الإسلامي

سفينة[٥٣]، وعن أبي قتادة[٥٤]. (أبو نعيم في «المعرفة») عن جندع بن عمرو[٥٥]، وعن سعد بن المدحاس[٥٦]، وعن عبدالله بن زغب[٥٧]. (ابن قانع) عن عبد الله بن أبي أوفى[٥٨]. (ك في «المدخل») عن عفان بن حبيب[٥٩]. (عق) عن غزوان[٦٠]، وعن أبي كبشة[٦١]. (ابن الجوزي في «مقدمة الموضوعات»[١]) عن أبي ذر[٦٢]، وعن أبي موسى الغافقي[٦٣]

الروض النضير ٧٠٧، مختصر مسلم ١٨٦١، ١٨٦٢

٦٥٢٠ - «من كذب في حُلمه، كُلِّف يوم القيامة عَقْدَ شعيرة».

(صحيح) (حم، ت، ك) عن علي

الصحيحة ٢٣٥٩ : الدارمي، حم - علي. خ، ت - ابن عباس

٦٥٢١ - ٢٢٣٠ - «من كُسِر، أو مرِضَ، أو عَرِجَ، فقد حلَّ وعليه حجَّةٌ أخرى من قابل».

(صحيح) (حم، ٤، ك) عن الحجاج بن عمرو بن غزية المشكاة ٢٧١٣

٦٥٢٢ - ٢٢٣١ - «من كظَمَ غيظاً، وهو قادرٌ على أن يُنْفِذَهُ، دعاه الله على رؤوس الخلائق، حتى يخيِّره من الحور العين، يزوجه منها ما شاء».

(حسن) (٤) عن معاذ بن أنس المشكاة ٥٠٨٨، الروض النضير ٨٥٤ : حم، طص

٦٥٢٣ - «من كنتُ مولاه، فعليٌّ مولاه».

(صحيح) (حم، هـ) عن البراء. (حم) عن بريدة. (ت، ن والضياء) عن زيد بن أرقم

الصحيحة ١٧٥٠، الروض النضير ١٧١، المشكاة ٦٠٨٢

٦٥٢٤ - «من كنتُ وليَّهُ، فعليٌّ وليُّه».

(صحيح) (حم، ن، ك) عن بريدة الروض النضير ١٧١ : طص

٦٥٢٥ - «مَن لبِسَ الحريرَ في الدنيا لم يلبَسْه في الآخرة».

(صحيح) (حم، ق، ن، هـ) عن أنس الصحيحة ٣٨٤

---

(١) ١/٥٧، ٩٢. قلت ورواه ص ٧٢ عن عبد الله بن عمرو أيضاً وص ٨٤ عن واثلة بن الأسقع و٨٥ عن قيس ابن سعد، و٨٨ عن أبي قرصافة جندرة بن خيشنة و٨٩ عن أبي رافع مولى رسول الله ﷺ و٩١ عن رجل من أسلم من الصحابة، وعن رجلين آخرين من الصحابة.

✯ **अल्लामा इमाम सुयूती** ؒ **की "अलजामेअ उल सग़ीर व ज़ियादता"** में है:

(रक़्म उल हदीसः ६५२३) : मैं जिसका मौला हूँ अली ؓ उसके मौला हैं।

→ इस पर अल्लामा अलबानी ने "सिलसिलतुल सहीहा" यह नोट चढ़ाया है: **सही है।**

(रक़्म उल हदीसः ६५२४): मैं जिसका वली हूँ अली ؓ उसके वली हैं।

→ **अल्लामा अलबानी ने इसे भी सही क़रार दिया है।**

ما كان يسر إليَّ شيئاً يكتمه من الناس غير أنه حدثني كلمات أربعاً[1] قال: ما هن؟ قال: لعن الله من لعن والديه ولعن الله من غير منار الأرض قال مروان: من أخذ من أرض غيره[2].

وهذا الحديث بهذا اللفظ[3] لا نعلمه يروى عن علي إلَّا من هذا الوجه بهذا الإسناد.

٤٩٢ ـ حدثنا يوسف بن موسى القطان ومحمد بن عثمان بن كرامة ـ واللفظ ليوسف ـ قالا: نا عبيد الله بن موسى قال: نا فطر[4] عن أبي الطفيل قال: سمعت علياً وهو ينشد الناس في الرحبة أنشد الله كل امرىء مسلم سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول[5] يوم غدير خم ما قال الإمام فقال ناس من الناس فشهدوا أنا رأينا رسول الله صلى الله عليه وسلم أخذ بيد علي وهو يقول: ألست أولى بالمسلمين من أنفسهم؟ قالوا: بلى يا رسول الله قال: «من كنت مولاه اللهمَّ وال من والاه وعاد من عاداه»[6].

البحر الزخار

المعروف

بمسند البزار

(١) في (غ) «أربع».

(٢) أخرجه مسلم في صحيحه مفصلاً، في ال... فاعله، عن زهير بن حرب وسريج بن ي... حيان عن منصور ٢/١٨٧.

والنسائي في سننه في الضحايا، من ذبح ل... منصور بن حيان. ٧/٢٣٢.

(٣) في (غ) «لا نعلمه بهذا اللفظ».

(٤) فطر بن خليفة المخزومي، أبو بكر الحناط... بعد سنة خمسين ومائة. التقريب ٢/١٤...

(٥) في (غ) «يقول» غير موجود.

(٦) أخرجه أحمد في فضائل الصحابة، في فض... نا فطر ٢/٦٨٢ (١١٦٧).

مؤسسة علوم القرآن بيروت — مكتبة العلوم والحكم

١٣٣

لكنه لم يتفرد به ، فقد تابعه فطر بن خليفة عن أبي الطفيل قال :

« جمع علي رضي الله عنه الناس في الرحبة ثم قال لهم : أنشد الله كل امرىء مسلم سمع رسول الله ﷺ يقول يوم غدير خم ما سمع لما قام ، فقام ثلاثون من الناس ، (وفي رواية : فقام ناس كثير) فشهدوا حين أخذ بيده فقال للناس :

« أتعلمون أني أولى بالمؤمنين من أنفسهم ؟ » قالوا : نعم يا رسول الله ، قال :

« من كنت مولاه ، فهذا مولاه ، اللهم وال من والاه ، وعاد من عاداه » .

قال : فخرجت وكأن في نفسي شيئاً ، فلقيت زيد بن أرقم ، فقلت له : إني سمعت علياً يقول كذا وكذا ، قال : فما تنكر ، قد سمعت رسول الله ﷺ يقول ذلك له » .

أخرجه أحمد (...) وابن حبان في «صحيحه» (٢٢٠٥ ـ موارد الظمآن) وابن أبي عاصم (١٣٦٧) والطبراني (٤٩٦٨) والضياء في «المختارة» (رقم ـ٥٢٧ بتحقيقي) .

قلت : وإسناده صحيح على شرط البخاري .

وقال الهيثمي في «المجمع» (٩/١٠٤) :

« رواه أحمد ، ورجاله رجال الصحيح ...

وتابعه سلمة بن كهيل قال : سمعت أبا ... أرقم ـ شك شعبة ـ عن النبي ﷺ به مختصراً :

« من كنت مولاه ، فعلي مولاه » .

أخرجه الترمذي (٢/٢٩٨) وقال :

« حديث حسن صحيح » .

سلسلة

الأحاديث الصحيحة

المجلد الرابع

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع

٢٢١

☆ **मुस्नद बाज़ार में है:**

......कुछ लोगों ने गवाही दी कि हमने रसूलल्लाह ﷺ को हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ कर यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना: “क्या मैं मोमिनीन की जानों का उनसे ज़ियादा मुस्तहक़ नहीं हूँ?” लोगों ने कहा: “क्यूँ नहीं”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं जिसका मौला हूँ.....ऐ अल्लाह جل جلالہ ! ऐ अल्लाह جل جلالہ ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।”

→ हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने रहबा में लोगों को जमा किया फिर उनसे कहा: “मैं अल्लाह جل جلالہ की क़सम देता हूँ हर उस शख़्स को कि वह खड़ा हो जाए जिसने ग़दीर ख़ुम में रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना”, तीस(३०) लोग खड़े हुए, और एक रिवायत में है: बहुत से लोग खड़े हुए, तो उन्हों ने गवाही दी कि उस वक़्त रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ा और लोगों से कहा: “क्या तुम जानते हो कि मैं मो’मिनीन की जानों का उनसे ज़ियादा हकदार हूँ?” लोगों ने कहा:“हाँ”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं जिसका मौला हूँ अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह جل جلالہ ! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी करे तू भी उससे दुश्मनी रख।”

→ अल्लामा अलबानी **सिलसिलतुल अहादीस सहीहा** में फ़रमाते हैं: मैं **कहता हूँ कि इसकी सनद सही है और यह बुख़ारी की शर्त के मुताबिक़ है।**

→ इसे इमाम तिर्मिज़ी رحمہ اللہ ने मुख़्तसरन रिवायत किया है **“मैं जिसका मौला हूँ, अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं” और कहा है: यह हदीस हसन सही है।**

أسرته يا رسول الله، فقال: «اسكت، فقد أيدك الله تعالى بملَكٍ كريم»، فقال علي: فأسرنا، وأسرنا من بني عبد المطلب العباس وعَقِيلا ونَوْفل بن الحرث.

٩٤٩ـ حدثنا حجّاج حدثنا شريك عن المقدام بن شُرَيح عن أبيه قال: سألت عائشة فقلت: أخبريني برجل من أصحاب النبي ﷺ أسأله عن المسح على الخفين؟ فقالت ائت عليًا فسله، فإنه كان يلْزَم النبي ﷺ، قال: فأتيت عليًا فسألته؟ فقال: أمرنا رسول الله ﷺ بالمسح على خفافنا إذا سافرنا.

٩٥٠ـ [قال عبدالله بن أحمد]: حدثنا علي بن حكيم الأَوْدِي أنبأنا شَرِيك عن أبي إسحق عن سعيد بن وهب وعن زيد بن يثيع قالا: نشد علي الناس في الرَّحبة: من سمع رسول الله ﷺ يقول يوم غَدير خمّ إلا قام؟ قال: فقام من قِبَل سعيد ستة، ومن قِبَل زيد ستة، فشهدوا أنهم سمعوا رسول الله ﷺ يقول لعلي يوم غدير خمّ: «أليس الله أولى بالمؤمنين؟» قالوا: بلى، قال: «اللهم من كنت مولاه فعلي مولاه، اللهم والِ من والاه، وعادِ من عاداه».

٩٥١ـ [قال عبدالله بن أحمد]: حدثنا علي بن حَكيم أنبأنا شَرِيك عن أبي إسحق عن عمرو ذي مُرّ بمثل حديث أبي إسحق، يعني عن سعيد وزيد، وزاد فيه: «وانصر من نصره، واخذل من خذله».

---

(٩٤٩) إسناده صحيح، المقدام بن شريح بن هانئ: ثقة، وثقه أحمد وأبو حاتم والنسائي وغيرهم. والحديث مختصر ٩٠٧. وانظر ٩١٧.

(٩٥٠) إسناده صحيح، سعيد بن وهب الهمداني الخيواني، بفتح الخاء وسكون الياء: تابعي ثقة قديم، أدرك زمن رسول الله وسمع من معاذ بن جبل في حياته، وكان يلزم علي بن أبي طالب. وانظر ٦٤١، ٦٧٠.

(٩٥١) إسناده صحيح، عمرو ذو مر الهمداني: قال العجلي: «كوفي تابعي ثقة»، وقال البخاري: «لا يعرف»، وقال أيضاً: «فيه نظر»، وقال مسلم وأبو حاتم: «لم يرو عنه غير أبي إسحق». والحديث مكرر ما قبله. وانظر الزوائد ٩: ١٠٤ ـ ١٠٥، ١٠٧.

٩٥٢ـ [قال عبدالله بن أحمد]: حدثنا علي أنبأنا شَرِيك عن الأعمش عن حبيب ثابت عن أبي الطُّفَيل عن زيد بن أرقم عن النبي ﷺ، مثله.

٩٥٣ـ حدثنا حدثنا حجاج حدثنا إ
ابن هانئ عن علي قال: لما وُلِد الحسن جا
ابني، ما سميتموه؟» قلت: سميته حربًا، ق
الحسين قال: «أروني ابني، ما سميتموه؟» ق
حسين»، فلما ولدت الثالث جاء النبي
سميتموه؟» قلت: حربًا، قال: «بل هو مُحَسِّ
ولد هرون: شَبَّر وشَبِير ومُشَبِّر».

٩٥٤ـ حدثنا محمد بن جعفر حدثنا
بزّة يحدث عن أبي الطُّفَيل قال: سئل عل

المُسْنَد
للإمام
أحمد بن محمد بن حنبل
١٦٤ ـ ٢٤١
شرحه وصنع فهارسه
أحمد محمد شاكر
الجزء الثاني
من الحديث ٩٢١
إلى الحديث ٢١٧٥
دار الحديث
القاهرة

---

(٩٥٢) إسناده صحيح، وليس من مسند علي، إنما هو من مسند زيد بن أرقم، ولم يذكر هذا الإسناد فيما سيأتي من مسنده، بل رواه أحمد من طريق عطية العوفي عن زيد، ومن طريق فطر عن أبي الطفيل عن زيد، وبإسنادين من طريق ميمون أبي عبدالله عن زيد (٤: ٣٦٨، ٣٧٠، ٣٧٢ ـ ٣٧٣). ورواه الحاكم في المستدرك ٣: ١٠٩ مطولا بأسانيد تنتهي إلى يحيى بن حماد عن أبي عوانة عن الأعمش عن حبيب عن أبي الطفيل عن زيد، وأحد هذه الأسانيد عن عبدالله بن أحمد عن أبيه الإمام عن يحيى بن حماد، وصححه على شرط الشيخين، ولم يتعقبه الذهبي بإقرار ولا إنكار، خلافاً لعادته، إذ لم يستطع أن يجد علة في إسناده. وسنشير إليه في موضعه من مسند زيد بن أرقم إن شاء الله. والأحاديث ٩٥٠ ـ ٩٥٢ من زيادات عبدالله بن أحمد.

(٩٥٣) إسناده صحيح، وهو مكرر ٧٦٩.

(٩٥٤) إسناده صحيح، وهو مكرر ٨٥٨. «بزة» بفتح الباء وتشديد الزاي، وفي ح «برزة» وهو خطأ. وفيها أيضاً «فقالوا ما خصناه إلخ، وهو خطأ واضح. وسيأتي في ١٣٠٦.

☆ **मुस्नद अहमद** में यह हदीस मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में मुख़्तलिफ़ जगह रक़म (९५०), (९५१), (९५२) से मरवी है, मुस्नद के मुहक़्क़िक़ अहमद मोहम्मद शाकिर ने हर एक पर सही का हुक्म लगाया है।

→ रक़म (९५२) पर हुक्म लगाते हुए कहते हैं: "इसकी सनद सही है.....इसे इमाम हाकिम ﵀ ने मुस्तदरक (रक़म:३:१०९) में मुख़्तलिफ़ सनदों से मतूल नक़ल किया है, जो सब की सब यह्या बिन हम्माद अन अबी अवाना अनल अअमश अन हबीब अन अबिल तुफ़ैल अन ज़ैद पर मुंतही होती हैं, इनमें एक सनद अब्दुल्लाह बिन अहमद अन अहमद बिन हम्बल अन यह्या बिन हम्माद है, **इमाम हाकिम ﵀ ने इसे शेख़ैन (इमाम बुख़ारी ﵀ व इमाम मुस्लिम ﵀) की शरायत के मुताबिक़ और सही क़रार दिया है, ज़हबी ने अपनी आदत के बरख़िलाफ़ इस पर सुकूत फ़रमाया है, क्यूँ कि उन्हें इसकी सनद में कोई इल्लत मिल ही न सकी।**

المسند

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ - ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

أحمد محمد شاكر

الجزء الثاني

من الحديث ٩٢١

إلى الحديث ٢١٧٥

دار الحديث

القاهرة

... تقول قد تَفَشَّغ في الناس،
... ما عهد إليَّ رسول الله ﷺ شيئاً
... في صحيفة في قِرَاب سيفي،
... فإذا فيها: «من أحدث حدثًا أو
... جمعين، لا يُقبل منه صرفٌ ولا
... ، وإني أحرِّم المدينة، حرمٌ ما
... ولا يُنفَّر صيدُها، ولا تلتقط
... إلا أن يَعلِف رجل بعيره، ولا
... المؤمنون تتكافأ دماؤهم، ويسعى
... لا يُقتل مؤمن بكافر، ولا ذو

... أخبرني موسى بن عُقْبة عن
... عن عبيدالله بن أبي رافع عن
... قال: «اللهم لك ركعت،
... خشع سمعي وبصري ومخّي
وعظمي وعصبي وما استقلَّت به قدمي ﷻ لله رب العالمين».

٩٦١ - [قال عبدالله بن أحمد]: حدثني عُبيدالله بن عمر

(٩٦٠) إسناده صحيح، روح: هو ابن عبادة، بضم العين وتخفيف الباء، وهو ثقة مأمون. وانظر ٧٢٩، ٨٠٣.

(٩٦١) إسناده صحيح، يونس بن أرقم الكندي البصري: قال البخاري في الكبير ٤/٢/٤١٠: «كان يتشيع، سمع يزيد بن أبي زياد، معروف الحديث»، وهذا توثيق، وذكره ابن حبان في الثقات، وترجمه الحافظ في التعجيل ٤٥٩ ولكن كتب اسمه «يوسف» وهو خطأ مطبعي، وترجمه في لسان الميزان ٦: ٣٣١. والحديث من زيادات عبدالله بن أحمد. =

القواريري حدثنا يونس بن أرقم حدثنا يزيد بن أبي زياد عن عبدالرحمن بن أبي ليلى قال: شهدت عليًا في الرَّحْبة يَنشد الناس: أنشد الله من سمع رسول الله ﷺ يقول يوم غَدِير خُمّ: «من كنت مولاه فعليٌّ مولاه» لَمَا قام فشهد؟ قال عبدالرحمن: فقام اثنا عشر بدريًا، كأني أنظر إلى أحدهم، فقالوا: نشهد أنا سمعنا رسول الله ﷺ يقول يوم غَدِير خُمّ: «ألستُ أولى بالمؤمنين من أنفسهم وأزواجي أمهاتُهم؟» فقلنا: بلى يا رسول الله، قال: «فمن كنت مولاه فعليٌّ مولاه، اللهم والِ من والاه، وعاد من عاداه».

٩٦٢ - حدثنا يحيى بن آدم حدثنا شَرِيك عن مُخارق عن طارق بن شهاب قال: رأيت عليًا على المنبر يخطب، وعليه سيف حِليته حديد، فسمعته يقول: والله ما عندنا كتاب نقرؤه عليكم إلا كتابَ الله تعالى وهذه الصحيفة، أعطانيها رسول الله ﷺ، فيها فرائضُ الصدقة، قال: لصحيفة معلقة في سيفه.

٩٦٣ - حدثنا علي بن عاصم أنبأنا إسماعيل بن سُمَيع عن مالك ابن عُمير قال: كنت قاعداً عند علي، قال: فجاء صَعْصَعة بن صُوحان فسلم، ثم قام فقال: يا أمير المؤمنين، انْهَنا عما نهاك عنه رسول الله ﷺ، فقال: نهانا عن الدُّبَّاء والحَنْتَم والمزفَّت والنقير، ونهانا عن القَسِّيّ والمِيثَرة الحمراء، وعن الحرير والحِلَق الذهب، ثم قال: كساني رسول الله ﷺ حُلَّةً

= وهو مطول ٩٥٠. وانظر ٩٥١، ٩٥٢.

(٩٦٢) إسناده صحيح، وهو مكرر ٨٧٤. وانظر ٩٥٩.

(٩٦٣) إسناده صحيح، مالك بن عمير الحنفي الكوفي: تابعي مخضرم، بل ذكره يعقوب بن سفيان في الصحابة. الحلق، بكسر ففتح: جمع حلقة، بفتح فسكون، وهي الخاتم لا فص له. قوله «فأمرني بنزعهما» التثنية لأن الحلة لا تكون إلا من ثوبين: إزار ورداء. وانظر ٦٣٤، ٩٣٩، ٩٥٨، ١٠٧٧، ١١٦٢، ١١٦٣.

☆ **मुस्नद अहमद बिन हम्बल** में यह रिवायत (रक़म उल हदीस:९६१) में भी मरवी है।

→ मुहक़्क़िक़ किताब अहमद मुहम्मद शाकिर कहते हैं: **इसकी सनद सही है।**

وجل، سمعت رسول الله ﷺ يقول «اللهم اغفر للأنصار، ولأبناء الأنصار، ولأبناء أبناء الأنصار، واغفر لنساء الأنصار، ولنساء أبناء الأنصار، ولنساء أبناء أبناء الأنصار».

١٩١٩٦ـ حدثنا أسود بن عامر ثنا إسرائيل عن عبدالأعلى قال: صليت خلف زيد بن أرقم على جنازة فكبر خمسا، فقام إليه أبو عيسى عبدالرحمن بن أبي ليلى، فأخذ بيده، فقال: نسيت؟ قال: لا ولكن صليت خلف أبي القاسم خليلي ﷺ، فكبر خمسا فلا أتركها أبدا.

١٩١٩٧ـ حدثنا أسود بن عامر ثنا شريك عن عثمان بن أبي زرعة عن أبي سلمان المؤذن قال: توفي أبو سريحة فصلى عليه زيد بن أرقم فكبر عليه أربعا وقال: كذا فعل رسول الله ﷺ.

١٩١٩٨ـ حدثنا حسين بن محمد وأبو نعيم ـ المعنى ـ، قالا: ثنا فطر عن أبي الطفيل قال: جمع علي رضي الله تعالى عنه الناس في الرحبة ثم قال لهم: أنشد الله كل امرئ مسلم سمع رسول الله ﷺ يقول يوم غدير خم ما سمع لما قام، فقام ثلاثون من الناس، وقال أبو نعيم: فقام ناس كثير فشهدوا حين أخذ بيده، فقال للناس «أتعلمون أني أولى بالمؤمنين من أنفسهم» قالوا: نعم يا رسول الله، قال «من كنت مولاه فهذا مولاه، اللهم وال من والاه، وعاد من عاداه» قال: فخرجت وكأن في نفسي شيئاً فلقيت زيد بن أرقم فقلت له إني سمعت عليا رضي الله تعالى عنه يقول: كذا وكذا قال: فما تنكر، قد سمعت رسول الله ﷺ يقول ذلك له.

(١٩١٩٦) إسناده صحيح، سبق في ١٩١٦٨.

(١٩١٩٧) إسناده حسن، لأجل شريك، والحديث سبق في ١٩١٦٨.

(١٩١٩٨) إسناده صحيح، سبق في ١٩١٧٥ بنحوه دون أوله.

المسند

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ ـ ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

حمزة أحمد الزين

الجزء الرابع عشر

من الحديث ١٧٨٤٥

إلى الحديث ١٩٥٧٤

دار الحديث
القاهرة

☆ **मुस्नद अहमद** में है कि: अबू तुफ़ैल कहते हैं कि हज़रत अली رضي الله عنه ने रहबा में लोगों को जमा किया फिर उनसे कहा: “मैं अल्लाह عزوجل की क़सम देता हूँ हर उस शख़्स को कि वह खड़ा हो जाए जिसने ग़दीर ख़ुम में रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना”, तीस(३०) लोग खड़े हुए, रावी अबू नईम رحمه الله कहते हैं: बहुत से लोग खड़े हुए, तो उन्हों ने गवाही दी कि उस वक़्त रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत अली رضي الله عنه का हाथ पकड़ा और लोगों से कहा: “क्या तुम जानते हो कि मैं मो’मिनीन की जानों का उनसे ज़ियादा हक़दार हूँ?” लोगों ने कहा: “हाँ”, आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: “मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह عزوجل! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी करे तू भी उससे दुश्मनी रख।”, अबू तुफ़ैल कहते हैं कि मैं बाहर निकला और मेरे दिल में उसकी तरफ़ से कोई बात थी (कि क्या हुज़ूर صلى الله عليه وآله وسلم ने ऐसा फ़रमाया भी था कि नहीं), मेरी हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه से मुलाक़ात हुई तो मैं ने कहा: “मैं ने अली رضي الله عنه को यह कहते हुए सुना है”, हज़रत ज़ैद رضي الله عنه ने कहा: “उन्होंने झूठ नहीं कहा, मैं ने भी रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को उनके बारे में ऐसा फ़रमाते हुए सुना था।”

→ **मुस्नद के शारेह और फ़ेहरिस्त निगार हमज़ा अहमद ज़ैन ने कहा है: इसकी सनद सही है।**

المسند

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ - ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

حمزة أحمد الزين

الجزء السادس عشر

من الحديث ٢١٤٠٣

إلى الحديث ٢٣٣٥٦

دار الحديث

القاهرة

٢٣٠٣٤ - حدثنا حجاج ثنا شعبة عن عمرو بن دينار عن عمرو ابن أوس عن رجل حدثه مؤذن رسول الله ﷺ قال: نادى منادي رسول الله ﷺ في يوم مطير: صلوا في الرحال.

٢٣٠٣٥ - حدثنا روح ثنا ابن جريج أخبرني عمرو بن يحيى بن عمارة بن أبي حسن حدثتني مريم ابنة إياس بن البكير صاحب النبي ﷺ عن بعض أزواج النبي ﷺ أن النبي ﷺ دخل عليها، فقال «أعندك ذريرة؟» قالت: نعم، فدعا بها فوضعها على بثرة بين أصابع رجليه، ثم قال «اللهم مطفي الكبير ومكبر الصغير اطفها عني» فطفئت.

٢٣٠٣٦ - حدثنا روح ثنا شعبة حدثني عبدالحميد صاحب الزيادي عن عبدالله بن الحرث عن رجل من أصحاب النبي ﷺ أن رجلاً دخل على النبي ﷺ وهو يتسحر، فقال «إن السحور بركة أعطاكموها الله عز وجل فلا تدعوها».

٢٣٠٣٧ - حدثنا أسود بن عامر أنا أبو إسرائيل عن الحكم عن أبي سلمان عن زيد بن أرقم قال: استشهد عليٌّ الناس، فقال: أنشد الله رجلاً سمع النبي ﷺ يقول «اللهم من كنت مولاه فعلي مولاه، اللهم وال من والاه وعاد من عاداه» قال: فقام ستة عشر رجلاً فشهدوا.

(٢٣٠٣٤) إسناده صحيح، سبق في ٢٠٥٩١.

(٢٣٠٣٥) إسناده صحيح، ومريم بنت إياس بن البكير مقبولة من التابعيات. والحديث رواه الحاكم ٢٠٧/٤، وصححه ووافقه الذهبي. وأشار الهيثمي ٩٥/٥ إلى صحته مع تفرد مريم.

(٢٣٠٣٦) إسناده صحيح، سبق قريبا في ٢٣٠٠٧. وانظر ١٣٩٢٨.

(٢٣٠٣٧) إسناده حسن، لأجل أبي إسرائيل الملائي إسماعيل بن خليفة. وهو متابع هنا كثيراً. والحكم هو ابن عتيبة. والحديث سبق في ٢٣٠٠١ و ٢٢٩٥٢.

☆ **मुस्नद अहमद** (रक़म उल हदीस:२३०३८) में है: हज़रत ज़ैद ﵁ फ़रमाते हैं कि हज़रत अली ﵁ ने लोगों से गवाही तलब की और फ़रमाया: "मैं क़सम देता हूँ उसे जिस ने रसूलल्लाह ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना हो, "मैं जिसका मौला हूँ अली ﵁ उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी करे तू भी उससे दुश्मनी रख।", तो सोलह(१६) लोग खड़े हुए और इसकी शहादत दी।

→ **मुस्नद के शारेह और फ़ेहरिस्त निगार हमज़ा अहमद ज़ैन ने कहा है: इसकी सनद हसन है।**

المسند

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ - ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

حمزة أحمد الزين

الجزء الرابع عشر

دار الحديث

القاهرة

بن جعفر ثنا شعبة عن أبي إسحق قال

البراء أن رسول الله ﷺ كان إذا أقبل من

نا حامدون».

بن داود الهاشمي قال أنا أبو بكر عن

جل يحمل على المشركين أهو ممن ألقى

عز وجل بعث رسوله ﷺ فقال: ﴿ فقاتل

﴾ إنما ذاك في النفقة.

بن عبدالملك قال ثنا زهير ثنا أبو إسحق

الله ﷺ حديدا هكذا مثل السيف؟ قال: لا

١٨٣٩١ ـ حدثنا عفان ثنا حماد بن سلمة أنا علي بن زيد عن عدي بن ثابت عن البراء بن عازب قال: كنا مع رسول الله ﷺ في سفر فنزلنا بغدير خم فنودي فينا الصلاة جامعة وكسح لرسول الله ﷺ تحت شجرتين فصلى الظهر وأخذ بيد علي رضي الله تعالى عنه فقال «ألستم تعلمون أني أولى بالمؤمنين من أنفسهم؟» قالوا: بلى قال: «ألستم تعلمون أني أولى بكل مؤمن

(١٨٣٨٨) إسناده صحيح، والحديث سبق ١٢٨٨٢.

(١٨٣٨٩) إسناده صحيح، وهو عند البخاري ٦/٣٣ في تفسير قوله تعالى ﴿وأنفقوا في سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة﴾ وأبي داود ٢/١٢ رقم ٢٥١٢.

(١٨٣٩٠) إسناده صحيح، رواه البخاري ٦/ ٥٦٥ رقم ٣٥٥٢ «فتح» المناقب/ صفة صلاة النبي ﷺ والترمذي ٥/ ٥٩٨ رقم ٣٦٣٦ مثله وحسنه، والدارمي ١/ ٤٥ رقم ٦٤ في المقدمة.

(١٨٣٩١) إسناده حسن، لأجل علي بن زيد، والحديث رواه ابن ماجه ١/٤٣ رقم ١١٦ وبنحوه الترمذي ٥/٦٣٣ رقم ٣/٣٧ في المناقب/ مناقب علي بن أبي طالب. وقال حسن صحيح. وابن حبان ٢٢٠٢ (موارد).

من نفسه؟» قالوا: بلى قال فأخذ بيد علي فقال «من كنت مولاه فعلي مولاه اللهم وال من والاه وعاد من عاداه» قال فلقيه عمر بعد ذلك فقال له: هنيئاً يا ابن أبي طالب أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة.

١٨٣٩١ م ـ ثنا هدبة بن خالد ثنا حماد بن سلمة عن علي بن زيد عن عدي بن ثابت عن البراء بن عازب عن النبي ﷺ نحوه.

١٨٣٩٢ ـ حدثنا عفان ثنا شعبة قال زبيد أخبرني منصور وداود وابن عون ومجالد عن الشعبي وهذا حديث زبيد قال سمعت الشعبي يحدث عن البراء وثنا عند سارية في المسجد قال: ولو كنت ثم لأخبرتكم بموضعها قال خطبنا رسول الله ﷺ فقال «إن أول ما نبدأ به في يومنا هذا أن نصلي ثم نرجع فننحر فمن فعل ذلك فقد أصاب سنتنا ومن ذبح قبل ذلك فإنما هو لحم قدمه لأهله ليس من النسك في شيء» قال: وذبح خالي أبو بردة بن نيار قال: يا رسول الله ﷺ ذبحت وعندي جذعة خير من مسنة قال «اجعلها مكانها ولم تجزئ أو توف عن أحد بعدك».

١٨٣٩٣ ـ حدثنا عفان ثنا شعبة قال علقمة بن مرثد قال أخبرني عن سعد[1] بن عبيدة عن البراء بن عازب أن النبي ﷺ قال في القبر «إذا سئل فعرف ربه ـ قال وقال شيء لا أحفظه ـ فذلك قوله عز وجل ﴿ يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ﴾.

(١٨٣٩١م) إسناده صحيح، وهو من الزوائد.

(١٨٣٩٢) إسناده صحيح، من طرقه رجاله أئمة. ومجالد هنا مقرون فيحتمل. والحديث سبق في ١٢١١٠و ١٢٠٥٩ بنحوه.

(١) في ط (سعيد بن عبيدة) وهو خطأ.

(١٨٣٩٣) إسناده صحيح، وسعد بن عبيدة السلمي أبو حمزة الكوفي من ثقات التابعين. والحديث سبق مطولا في ١٠٩٤٢.

☆ **मुस्नद अहमद** में यह रिवायत रक़म (१८३९१) पर भी है।

→ **मुस्नद के शारेह और फ़ेहरिस्त निगार हमज़ा अहमद ज़ैन ने कहा है: इसकी सनद हसन है।**

عبدالله بن يزيد الخطمي عن أبي أيوب الأنصاري أنه صلى مع رسول الله ﷺ في حجة الوداع صلاة المغرب والعشاء الآخرة بالمزدلفة.

٢٣٤٥٣ـ حدثنا يحيى بن آدم ثنا حنش بن الحرث بن لقيط النخعي الأشجعي عن رياح بن الحرث قال: جاء رهط إلى علي بالرحبة، فقالوا: السلام عليك يا مولانا، قال: كيف أكون مولاكم وأنتم قوم عرب؟ قالوا: سمعنا رسول الله ﷺ يوم غديرخم يقول «من كنت مولاه فإن هذا مولاه» قال رياح: فلما مضوا تبعتهم، فسألت: من هؤلاء؟ قالوا: نفر من الأنصار فيهم أبو أيوب الأنصاري.

٢٣٤٥٤ـ حدثنا أبو أحمد ثنا حنش عن رياح بن الحرث قال: رأيت قوماً من الأنصار قدموا على عليّ في الرحبة، فقال: من القوم؟ قالوا: مواليك يا أمير المؤمنين ... فذكر معناه.

٢٣٤٥٥ـ حدثنا عبدالله بن الوليد ثنا سفيان ثنا الأعمش عن المسيب بن رافع عن رجل عن أبي أيوب قال: كان النبي ﷺ يصلي قبل الظهر أربعاً، فقيل له: إنك تصلي صلاة تديمها، فقال «إن أبواب السماء تفتح إذا زالت الشمس فلا ترتج حتى يصلي الظهر، فأحب أن يصعد لي إلى السماء خير».

٢٣٤٥٦ـ قرأت على عبدالرحمن: مالك عن يحيى بن سعيد

(٢٣٤٥٣) إسناده صحيح، حنش بن الحارث بن لقيط النخعي موثق وحديثه عند البخاري في الأدب، ورياح بن الحارث ثقة من التابعين الكبار، والحديث سبق في ٢٣٠٠١ و٢٢٨٤١.

(٢٣٤٥٤) إسناده صحيح، وهو كسابقه.

(٢٣٤٥٥) إسناده ضعيف، لجهالة الراوي عن أبي أيوب. والحديث سبق في ٢٣٤٤١.

(٢٣٤٥٦) إسناده صحيح، سبق في ٢٣٤٥٢.

الجزء السابع عشر

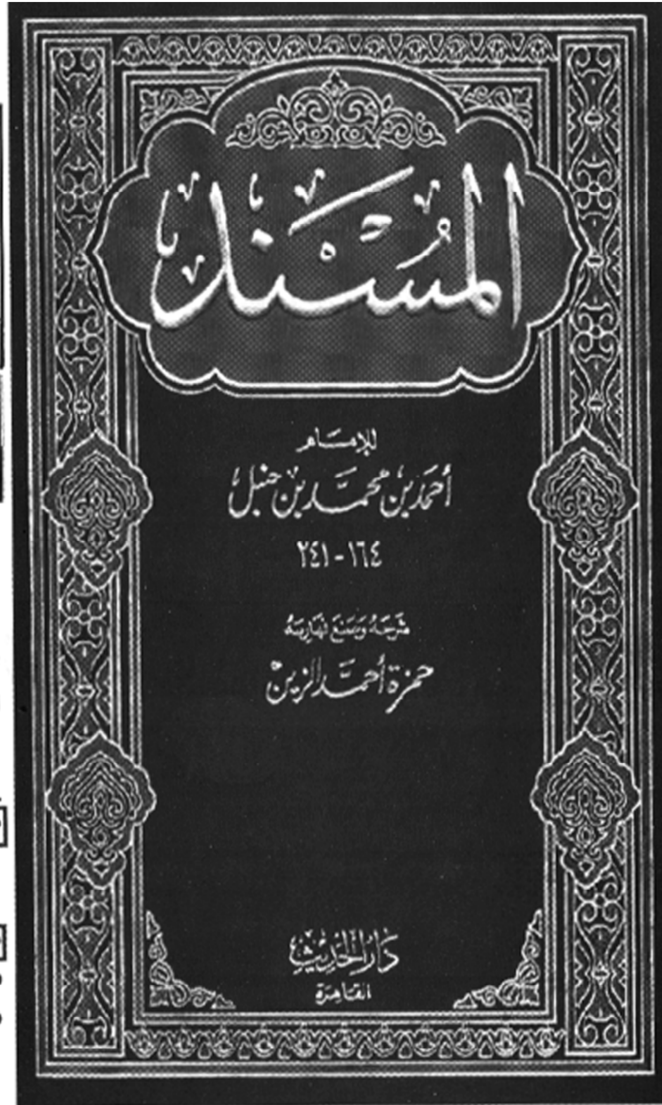

✯ **मुस्नद अहमद बिन हम्बल** (रक़म उल हदीस:२३४५३) में है: रियाह बिन हरस कहते हैं: एक जमाअत रहबा में हज़रत अली ﵁ के पास आई, और कहा: **"अस्सलामु अलैकुम या मौलाना"**, आपने पूछा: "मैं तुम्हारा मौला कैसे हो सकता हूँ जबकि तुम अरब हो?" उन लोगों ने कहा: "हमने ग़दीर ख़ुम के दिन रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना था कि मैं जिस का मौला हूँ तो ये (हज़रत अली ﵁) उसके मौला हैं" रियाह कहते हैं: जब वह लोग चले गए तो मैं उनके पीछे गया और पूछा कि, "ये कौन लोग हैं?" लोगों ने बताया: "यह अंसार की जमाअत है, इसमें हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ﵁ भी थे।"

→ **(रक़्म उल हदीस:२३४५४)** में है: रियाह बिन हरस कहते हैं: मैं ने अंसार की एक जमाअत देखी जो हज़रत अली ﵁ के पास मक़ाम रहबा में आई, आपने पूछा: "कौन लोग?" उन्हों ने कहा: "ऐ अमीरुल मो'मिनीन! आपके मौला....." फ़ज़्क्रि-ए-मअना।

→ **मुस्नद के शारेह और फ़ेहरिस्त निगार हमज़ा अहमद ज़ैन ने दोनों रिवायतों के बारे में कहा है: इसकी सनद हसन है।**

إتحاف الخيرة المهرة

بزوائد المسانيد العشرة

تأليف

الإمام أحمد بن أبي بكر بن إسماعيل

البوصيري

المتوفى ٨٤٠هـ

تحقيق

أبي عبد الرحمن
عادل بن سعد

أبي إسحاق
السيد بن محمود بن إسماعيل

المجلد التاسع

مكتبة الرشد

الرياض

٨٩٧٩ ـ وعن حنش بن الحارث قال : رأيت قومًا من الأنصار قدموا على علي بن ابي طالب في الرحبة ، فقال : من القوم ؟ قالوا : مواليك يا أمير المؤمنين . قال : من أين وأنتم قوم من العرب ؟ قالوا : سمعنا رسول الله ﷺ يقوم يوم غَدِير خُمّ : « من كنت مولاه فعلي مولاه » . قال : فتبعتهم فقلت : من هؤلاء القوم ؟ قالوا : من الأنصار ، قال : وإذا فيهم ابو ايوب الانصاري .

رواه أبو بكر بن ابي شيبة ، وأحمد بن حنبل ، وأحمد بن منيع واللفظ له وورواته ثقات .

٨٩٨٠ ـ وعن البراء بن عازب رضي الله عنه قال : كنا مع النبي ﷺ في سفر فنزلنا بغَدِير خُمّ . قال : فنودي فينا الصلاة جامعة . قال : وكسح لرسول الله ﷺ تحت الشجرة فصلى الظهر فأخذ بيد عليٍّ فقال : « ألستم تعلمون أني أولي بالمؤمنين من أنفسهم ؟ » . قالوا : بلى . قال : « ألستم تعلمون أني أولي بكل مؤمن من نفسه » ؟ قالوا : بلى . قال : فأخذ بيد عليٍّ فقال : « اللهم من كنت مولاه فعليٌّ مولاه ، اللّهم وال من والاه وعاد من عاداه » . قال : فلقيت عمر بعد ذلك فقال : هنيئًا لك يا ابن أبي طالب أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة .

رواه أبو بكر بن أبي شيبة ، وأبو يعلى بسند ضعيف مداره إما : على أبي هارون العبدي ، أو علي بن زيد بن جدعان .

ورواه البزار ، والحاكم من حديث زيد بن أرقم .

٨٩٨١ ـ وعن جابر بن عبد الله رضي الله عنهما قال : كنا بالجُحْفَة بغَدِير خُمّ ، إذ خرج علينا رسول الله ﷺ فأخذ بيد علي فقال : « من كنت مولاه فعليٌّ مولاه » .

☆ अहमद बिन अबूबक्र बूसीरी ؒ की **“इतहाफ़ुल ख़ैरतिल महरत बज़वाइद अलमसानीद अलअशरा”** में है: हनश बिन हारिस कहते हैं: मैंने अंसार की एक जमाअत को देखा कि रहबा में हज़रत अली ؓ के पास आई, आप ؓ ने पूछा: “कौन?” कहा: “ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके मौला”, आपने कहा: “तुम मेरे मौला कैसे हो सकते हो जबकि तुम अरब हो?” उन लोगों ने कहा: “हमने ग़दीर ख़ुम के दिन रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना था कि मैं जिस का मौला हूँ अली ؓ उसके मौला हैं”, मैं उनके पीछे गया और पूछा कि ये कौन लोग हैं?” लोगों ने बताया: “यह अंसार की जमाअत है, इसमें हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ؓ भी थे।”

→ इसे अबूबक्र बिन अबी शैबा ؓ, अहमद बिन हम्बल ؒ और अहमद बिन मनीअ ؒ ने रिवायत किया है, ये अल्फ़ाज़ अहमद बिन मनीअ के हैं, इसके रावी सिक़्क़ा(Authentic) हैं।

الحاوى للفتاوى

فى الفقه وعلوم التفسير والحديث والأصول والنحو والإعراب وسائر الفنون

لعالم مصر ومفتيها الامام العلامة جلال الدين
عبد الرحمن بن ابى بكر بن محمد السيوطى صاحب
التآليف الكثيرة المتوفى فى سحر ليلة الجمعة
تاسع عشر جمادى الأولى سنة احدى عشرة
وتسعمائة عن اثنتين وستين سنة

الجزء الأول

هذه النسخة طبعت على نسختنا الممتازة وروجعت على نسخ فى دار الكتب المصرية
ودار الكتب الأزهرية فجاء فيها زيادات كثيرة وتصحيحات قيمة

عنى بنشره جماعة من طلاب العلم سنة ١٣٥٢ هـ

١٤٠٢هـ — ١٩٨٢ م

دار الكتب العلمية
بيروت — لبنان

١٠ ﴿ وصول الأمانى بأصول التهانى ﴾

﴿ بسم الله الرحمن الرحيم ﴾

الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى وبعد فقد طال السؤال عن ما اعتاده الناس من التهنئة بالعيد . والعام . والشهر . والولايات ونحو ذلك هل له اصل فى السنة ؟ فجمعت هذا الجزء فى ذلك وسميته وصول الأمانى بأصول التهانى .

﴿ التهنئة بالفضائل العلية والمناقب الدينية ﴾

أخرج الشيخان عن انس قال : « أنزلت على النبى ﷺ (ليغفر لك الله ماتقدم من ذنبك وما تأخر) مرجعه من الحديبية فقال النبى ﷺ لقد نزلت على آية أحب الى مما على وجه الأرض ثم قرأها عليهم فقالوا هنيئا لك يارسول الله » الحديث ، وأخرج الحاكم فى المستدرك عن أسامة قال : « بعث رسول الله ﷺ الى بيت حمزة فلم تجده فقالت امرأته جئت يارسول الله وأما أريد ان آتيك وأهنئك أخبرنى أبو عمارة — يعنى حمزة — أنك أعطيت نهرا فى الجنة يدعى الكوثر » ، وأخرج أحمد عن البراء بن عازب : وزيد بن أرقم « أن رسول الله ﷺ قال : من كنت مولاه فعلى مولاه فقال عمر بن الخطاب هنيئا لك ياعلى أصبحت مولى كل مؤمن ومؤمنة » ، وأخرج أحمد . وابن ماجه عن البراء بن عازب قال : « كنا مع رسول الله ﷺ فى سفر فنزلنا بغدير خم (١) فنودى فينا الصلاة جامعة فصلى الظهر وأخذ بيد على فقال ألم تعلموا انى أولى بالمؤمنين من أنفسهم ؟ قالوا : بلى فأخذ بيد على فقال اللهم من كنت مولاه فعلى مولاه اللهم وال من والاه وعاد من عاداه قال فلقيه عمر بعد ذلك فقال له هنيئا لك يا ابن أبى طالب أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة » ، وأخرج ابن عساكر عن عبد الله بن جعفر « أن رسول الله ﷺ قال ياعبد الله هنيئا لك مريئا خلقت من طينتى وأبوك يطير مع الملائكة فى السماء » ، وأخرج أحمد . ومسلم عن أبى بن كعب « أن النبى ﷺ سأله أى آية فى كتاب الله أعظم ؟ قال آية الكرسى قال ليهنك العلم أبا المنذر » .

﴿ التهنئة بالتوبة ﴾

أخرج الشيخان عن كعب بن مالك فى قصة توبته قال : « وانطلقت أتأمم رسول الله ﷺ يتلقانى الناس فوجا فوجا يهنئونى بتوبتى ويقولون ليهنك توبة الله عليك حتى دخلت المسجد فاذا رسول الله ﷺ حوله الناس فقام طلحة بن عبيد الله يهرول حتى صافحنى وهنأنى فكان كعب لاينساها لطلحة قال كعب فلما سلمت على رسول الله ﷺ قال وهو يبرق وجهه

(١) هو — بضم الخاء المعجمة — موضع بين مكة والمدينة تصب فيه عين هناك

☆ **अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती** ﷺ**की "अलहावी अलफ़तावी"** में है:

→ बरा बिन आज़िब ﷺ कहते हैं: हम एक सफ़र में रसूलल्लाह ﷺ के साथ थे........बाद में हज़रत उमर ﷺ की मुलाक़ात हज़रत अली ﷺ से हुई तो हज़रत उमर ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ इब्ने अबी तालिब ﷺ मुबारक हो, तुम ने सुबह ओ शाम इस हाल में की कि तुम हर मोमिन व मोमिना के मौला थे।"

ما قاله له النبيُّ ﷺ هُناكَ كان في رَجْعتِهِ من حجِّهِ، وإنما يكونُ ذلك مُحالاً كما ذكرت لو كان في الحديث أنَّ النبيَّ ﷺ قالَ له هذا في القولِ في خُروجه إلى مكَّة مُتوجهاً لها.

وقد وجدنا بحمدِ الله ونعمته في ذلك حديثاً صحيحَ الإسناد يُخبر أنَّ ذلك القولَ الذي كان من رسُولِ الله ﷺ لعليٍّ بغدير خُمّ، إنما كان في رجوعه إلى المدينة من حجِّه، لا في خروجه منها إلى حجِّهِ.

١٧٦٥ ـ كما حدثنا أحمد بنُ شُعيب قال: أخبرنا محمد بن المُثنى، قال: حدثنا يحيى بنُ حمَّاد، قال: حدثنا أبو عَوَانة، عن سُليمان ـ يعني الأعمش ـ قال: حدثنا حبيبُ بنُ أبي ثابت، عن أبي الطُّفَيل

عن زيد بن أرقم، قال: لما رجع رسولُ الله ﷺ عن حجَّة الوداع، ونزل بغدير خُمّ، أمر بدَوحاتٍ فَقُمِمنَ، ثم قال: «كَأَنِّي دُعِيتُ فَأَجَبْتُ، إِنِّي قَدْ تَرَكْتُ فِيكُمُ الثَّقَلَيْنِ أَحَدُهُما أَكْبَرُ مِنَ الآخَرِ: كِتَابَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي، فَانْظُرُوا كَيْفَ تَخْلُفُونِي فِيهِما، فَإِنَّهُمَا لَنْ يَتَفَرَّقَا حَتَّى يَرِدَا عَلَى الحَوْضِ» ثم قال: «إِنَّ اللهَ عز وجل مَوْلَايَ، وَأَنَا وَلِيُّ كُلِّ مُؤْمِنٍ»، ثم أخذ بيد علي رضي الله عنه، فقال: «مَنْ كُنْتُ وَلِيَّهُ فَهٰذا وَلِيُّهُ، اللَّهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ، وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ». فقلت لزيد: سمعتَهُ من رسول الله ﷺ؟ فقال: ما كان في الدَّوْحاتِ أحدٌ إلا رآه بعينَيْهِ وسمعه بأُذنَيْهِ[1].

---

(١) رجاله ثقات رجال الشيخين، إلا أن حبيب بن أبي ثابت مدلس وقد عنعن، لكن تابعه فطر بن خليفة عند المؤلف (١٧٦٢) فالحديث صحيح. أبو عوانة: هو

قال أبو جعفر: فهٰذا الحديث صحيح الإسناد، لا طعْنَ لأحدٍ في أحدٍ من رواته، فيه أنَّ كان ذلك القول، كان من رسول الله ﷺ لعليٍّ بغدير خُمّ في رجوعه من حجِّهِ إلى المدينة، لا في خروجه لحجِّه من المدينة.

شرح مشكل الآثار

تأليفُ الإمام المحدِّث الفقيه المفسِّر

أبي جعفر أحمد بن محمد بن سلامة الطحاوي

(٢٣٩هـ - ٣٢١هـ)

حققه وضبط نصه، وخرج أحاديثه، وعلق عليه

شعيب الأرنؤوط

الجزء الخامس

مؤسسة الرسالة

فقال [illegible]

وقاص في [illegible]

بغدير خُمّ [illegible]

إلى المدينة [illegible]

=وضاح اليشكري [illegible]

وهو في [illegible]

شعيب النسائي [illegible]

ورواه [illegible]

ورواه [illegible]

الشيخين، [illegible]

ورواه [illegible]

كثير، عن [illegible]

حبيب بن أبي [illegible]

ما تحريف [illegible]

ورواه [illegible]

الدَّوحات: جمع دَوْحة، وهي كل شجرة عظيمة، وقد تحرفت في الأصل إلى «الدرجات».

وقُمِمن: أي كُنس تحتهن.

☆ **इमाम तहावी رحمہ اللہ “शरह मुश्किलुल आसार”** में इस रिवायत को नक़ल करते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم जब हज्जतुल विदाअ से वापस हुए तो ग़दीर ख़ुम पर पड़ाव डाला, आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने सायबान लगाने का हुक़्म दिया तो उन्हें लगाया गया, फिर आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: “हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करूँ, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढ़ कर है, एक अल्लाह عزوجل ! की किताब और दूसरे मेरी इतरत यानी मेरे अहल-ए-बैत علیہم السلام, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपस में जुदा नहीं होंगे ता आं कि हौज़ पर आ कर मुझसे मिलें”, फिर आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: “अल्लाह عزوجل ! मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का वली हूँ”, फिर आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: “मैं जिसका वली हूँ तो यह (हज़रत अली رضی اللہ عنہ) भी उसके वली हैं, ऐ अल्लाह عزوجل ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख।”, रावी कहते हैं: मैं ने ज़ैद से पूछा: “क्या आपने यह रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से सुना है?” आपने फ़रमाया: “उन सायबानों में जो भी था हर एक ने उसे अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना है।”

→ **इमाम तहावी رحمہ اللہ कहते हैं कि: यह हदीस सहीहुल असनाद है, इसके रावियों में कोई भी मतऊन नहीं है,** इस में यह बात है कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में यह बात हज से मदीना वापस होते हुए ग़दीर ख़ुम में कही थी, न कि मदीना से हज के लिए निकलते हुए।

→ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ शोएब अरनौवत कहते हैं: इसके रिजाल सिक़्क़ा हैं और शेरवैन (इमाम बुख़ारी رحمہ اللہ व इमाम मुस्लिम رحمہ اللہ) के रिजाल हैं,** हाँ हबीब बिन अबी साबित तदलीस किया करते हैं और कभी अन से रिवायत बयान करते हैं, लेकिन फ़ितर बिन ख़लीफ़ा ने उनकी मुताबेअत कि है जिसे मुअल्लिफ़ ने (रक़म:१७६२ में) नक़ल किया है, **लिहाज़ा हदीस सही है।**

كتاب الشريعة

للإمام المحدث أبي بكر محمد بن الحسين الآجري

المتوفى سنة ٣٦٠هـ

دراسة وتحقيق

الدكتور عبد الله بن عمر بن سليمان الدميجي

كلية الدعوة وأصول الدين

جامعة أم القرى

الجزء الرابع

دار الوطن

الرياض - شارع المعذر - ص . ب ٣٣١٠

☎ ٤٧٩٢٠٤٢ - فاكس ٤٧٦٤٦٥٩

١٥٢٣- حدثنا أبو بكر بن أبي داود، قال: حدثنا الحسن بن مدرك الشيباني، وأحمد بن محمد بن المعلى الأَدَمي، قال: حدثنا يحيى بن حماد، قال: حدثنا أبو عوانة، عن الأعمش، عن حبيب بن أبي ثابت، عن عامر بن واثلة أبي الطفيل عن زيد بن أرقم قال: لما رجع رسول الله ﷺ من حجة الوداع نزل غدير خم، فأمر بدوحات فقممن، وقال: **كأني دعيت فأجبت**، ثم أخذ بيد علي بن أبي طالب رضي الله عنه فقال: **«الله مولاي، وأنا مولى كل مؤمن ومن كنت مولاه فعلي مولاه، اللهم والِ من والاه، وعادِ من عاداه»**.

فقلت لزيد: أنت سمعت هذا من رسول الله ﷺ؟! قال: سمع أذناي وأبصر عيناي، وما بقي في الدوحات رجل واحد إلا قد سمعه بأذنيه ورآه بعينيه

١٥٢٣- إسناده: صحيح.

● الحسن بن مدرك بن بشير السدوسي أبو علي البصري الطحان: لا بأس به، ونسبه أبو داود إلى تلقين المشايخ. من الحادية عشرة. تقريب (ص ١٦٤) تهذيب (٢/ ٣٢١) وقد ورد مقرونًا بأحمد بن محمد بن المعلى الأدمي وهو: البصري، أبو بكر، صدوق، من الحادية عشرة. تقريب (ص ٨٤).

● وفيه عنعنة حبيب بن أبي ثابت. وهو مدلس، إلا أنه تابعه فطر بن خليفة وهو صدوق تقدم في ح: ١٤٣٦ .عند ابن حبان كما في التخريج. كما تابعه زيد بن عوف في ح: ١٧٠٦.

تخريجه:

حديث الموالاة هذا أخرجه المصنف عن خمسة من صحابة رسول الله ﷺ:

الطريق الأولى عن زيد بن أرقم وهو هذا الحديث أخرجه الإمام أحمد في المسند (٢/ ١١٨) والنسائي في الخصائص (٧٩) وفي الفضائل (٤٥) والبزار (٢٥٣٨) والطبراني (٤٩٦٩) وابن أبي عاصم في السنة ح: ١٣٦٥ (٢/ ٦٠٦). والحاكم في المستدرك (٣/ ١٠٩) من طريق حبيب بن أبي ثابت عن أبي الطفيل... به.

وأخرجه أحمد وابن حبان في صحيحه ح: ٦٩٣١ (١٥/ ٣٧٥) من طريق فطر بن خليفة عن أبي الطفيل. به.

الثانية: عن البراء بن عازب الواردة عند المصنف برقم ١٥٢٤ وتخريجها هناك.

الثالثة: عن أنس بن مالك وهي عند المصنف برقم ١٥٢٥ وتخريجها هناك.

الرابعة: عن عبد الله بن مسعود وهي عند المصنف برقم ١٥٢٦ وتخريجها هناك

الخامسة: عن ابن عباس وهي عند المصنف برقم ١٥٢٧ وتخريجها هناك.

والحديث تكلم على طرقه الشيخ الألباني، وصححه في السلسلة الصحيحة ح: ١٧٥٠.

☆ अबूबक्र मुहम्मद बिन हुसैन आजुर्री की **"किताबुल शरीआ"** (रक़्म उलहदीस:१५२३) में है: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم जब हज्जतुल विदाअ से वापस हुए तो ग़दीर ख़ुम पर पड़ाव डाला, आप صلى الله عليه وآله وسلم ने सायबान लगाने का हुक्म दिया तो उन्हें लगाया गया, आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: "हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करूँ", फिर आप صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत अली رضي الله عنه का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: "अल्लाह عزوجل! मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का मौला हूँ, मैं जिसका मौला हूँ तो अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह عزوجل! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख।", रावी कहते हैं: मैं ने ज़ैद رضي الله عنه से पूछा: "क्या आपने यह रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم से सुना है?" आप رضي الله عنه ने फ़रमाया: "उन सायबानों में जो भी था हर एक ने उसे अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना है।"

→ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ डॉक्टर अब्दुल्लाह बिन उमर बिन सुलेमान दमीजी कहते हैं: इसकी सनद सही है।**

المعجم الكبير

للحافظ أبي القاسم سليمان بن أحمد الطبراني

٢٦٠هـ - ٣٦٠هـ

حققه وخرج أحاديثه

حمدي عبد المجيد السلفي

الجزء الرابع

الناشر
مكتبة ابن تيمية
القاهرة، ٨٦٤٢٤٠١

٣٥١٣- حدثنا الحسين بن إسحاق التستري ثنا يحيى الحماني ثنا قيس بن الربيع عن أبي إسحاق عن حبشي بن جنادة قال سمعت رسول الله ﷺ يقول: «عَلِيٌّ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ وَلَا يُؤَدِّي عَنِّي إِلَّا أَنَا أَوْ عَلِيٌّ رضي الله عنه».

٣٥١٤- حدثنا الحسين بن إسحاق التستري ثنا علي بن بحر ثنا

٣٥١١- ورواه أحمد (٤/١٦٤ و١٦٥) والنسائي (ص ٨٨ خصائص علي) والترمذي (٣٨٠٣) وقال حسن صحيح وابن ماجة (١١٩). فأبو إسحاق السبيعي وإن كان اختلط وحفيده إسرائيل بن يونس بن أبي إسحاق إنما أخذ عنه في حالة الاختلاط فقد تابعه شريك فالحق أنه حسن كما قال الترمذي.

٣٥١٤- قال في المجمع (٩/١٠٦) ورجاله وثقوا

سلمة بن الفضل عن سليمان بن قرم الضبي عن أبي إسحاق الهمداني قال سمعت حبشي بن جنادة يقول سمعت رسول الله ﷺ يقول يوم غدير خم: «اللَّهُمَّ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ، اللَّهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهُ وَأَعِنْ مَنْ أَعَانَهُ».

٣٥١٥- حدثنا محمد بن يحيى بن منده الأصبهاني ثنا إسماعيل بن عبدالله الأصبهاني ثنا إسماعيل بن أبان ثنا أبو مريم عبد الغفار بن القاسم عن أبي إسحاق عن حبشي بن جنادة عن النبي ﷺ أنه قال لعلي: «أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى».

٣٥١٦- حدثنا العباس بن حمدان الحنفي الأصبهاني ثنا علي بن موسى بن عبيد الحارثي الكوفي ثنا عبيد الله بن موسى ثنا إسرائيل عن أبي إسحاق عن حبشي بن جنادة قال سمعت رسول الله ﷺ يقول: «الْمَعْكُ طَرَفٌ مِنَ الظُّلْمِ».

من اسمه حبيب

٣٢٠- حبيب بن مسلمة الفهري

وهو حبيب بن مسلمة بن مالك بن وهب بن عمرو بن شيبان بن محارب بن فهر بن مالك.

وأمه فهرية، يكنى أبا عبدالرحمن، وكان يدعى حبيب الروم لمجاهدته الروم.

٣٥١٧- حدثنا أبو الزنباع روح بن الفرج ثنا يحيى بن بكير قال: توفي حبيب بن مسلمة سنة اثنتين وأربعين، وسنه خمسون سنة.

٣٥١٨- حدثنا إسحاق بن إبراهيم الدبري عن عبد الرزاق عن

٣٥١٥- قال في المجمع (٩/١١٠) رواه الطبراني في الثلاثة وفيه عبد الغفار ابن القاسم وهو متروك. قلت رواه في الصغير (٢/٥٣-٥٤) والأوسط (٣٤٠ مجمع البحرين).

٣٥١٦- ومن طريقه رواه أبو نعيم في الحلية (٤/٣٤٥-٣٤٦) وقال: غريب وقال في المجمع (٤/٢٩٨) وفيه علي بن موسى بن عبيد ولم أعرفه، وبقية رجاله ثقات. قلت: في المجمع المثل وهو خطأ. والمعك هو المطل.

٣٥١٨- ورواه أحمد (٤/١٥٩ و١٦٠) ورواه عبد الرزاق (٩٣٣١) والمصنف في مسند الشاميين (٢٨٥ (٣٥٣٥).

☆ इमाम तबरानी رحمه الله की **“अलमुअज़्ज़म अलकबीर”** (रक़म उल हदीस:३५१४) में रिवायत है कि हज़रत हबशी बिन जनादा رضي الله عنه फ़रमाते हैं: मैं ने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना: “ऐ अल्लाह سبحانه وتعالى ! मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह سبحانه وتعالى ! जो अली رضي الله عنه से मुहब्बत और दोस्ती रखे तू भी उससे मुहब्बत और दोस्ती रख, और जो इन से अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, जो इनकी नुसरत करे तू भी उसकी नुसरत फ़रमा, और जो इनकी इयानत करे तू भी उसकी इयानत फ़रमा।”

→ **किताब के मुहक़्क़िक़ हमदी अब्दुल मजीद सलफ़ी कहते हैं: मजमाउल ज़वाइद में है कि इसके रावी सिक़्क़ा(Authentic) हैं।**

كشف الأستار

عن زوائد البزار على الكتب الستة

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر الهيثمي

٧٣٥ - ٨٠٧ هـ

تحقيق

المحدث الكبير العلامة الشيخ

حبيب الرحمن الأعظمي

الجزء الثالث

مؤسسة الرسالة

٢٥٤٢ ـ حدثنا يوسف بن موسى ، ثنا عبيد الله بن موسى ، عن فطر بن خليفة[1] ، عن أبي إسحاق عن عمرو ذي مُرّ وسَعيد بن وهب وزيد بن يثيع ، قالوا : سَمعنا علياً يقول : نشدتُ الله رجلاً سمعَ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقولُ يوم غديرِ خُم لما قام ، فقام ثلاثة عشر رجلاً ، فشهدوا أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : ألستُ أولى بالمؤمنين من أنفسهم ؟ قالوا : بلى يا رسول الله ، قال : فأخذ بيد عليّ ، فقال : مَن كنتُ مَولاه فهذا مَولاه ، اللهمَّ والِ مَن وَالاه وعادِ من عاداه ، وأحِبَّ من أحَبَّه ، وابغِضْ من أبغَضه ، وانصُر من نصره ، واخذل من خذله

٢٥٤٣ ـ حدثنا يوسف بن موسى ، ثنا مالك بن إسماعيل ، حدثني جَعفر الأحمر ، عن يزيد بن أبي زياد ومسلم بن سالم قالا : ثنا عبد الرحمن بن أبي ليلى ، قال : سمعتُ علياً ينشد الناس ، قلتُ : فذكر نحوه باختصار ، إلا أنه قال : فقام اثني عشر رجلاً .

٢٥٤٤ ـ حدثنا يوسف بن موسى القطان ، ومحمد بن عثمان بن كرامة ـ واللفظ ليوسف ـ قالا : ثنا عبيد الله بن موسى ، ثنا فِطر ، عن أبي الطفيل ،

٢٥٤١ أخرجه الهيثمي وعزاه لعبد الله بن أحمد ، ثم قال : والبزار بنحوه أتم منه ، وقال : عن سعيد بن وهب ، لا عن زيد بن يثيع كما هنا ـ إلى ـ والظاهر أن الواو سقطت ، وإسنادهما حسن (٩/١٠٧) ، قلت : في أصلنا عن سعيد بن وهب وعن زيد بن يثيع ، أعني أن الواو لم تسقط من أصلنا ، واعلم أن في الأصل (فقام ستة عشر رجلاً) وفي الزوائد (فقام من قبل سعيد ستة ، ومن قبل زيد سبعة) فهم إذن ثلاثة عشر رجلاً فحسب .

(1) في الأصل (حليفة) وهو خطأ .

٢٥٤٢ قال الهيثمي : رواه البزار ، ورجاله رجال الصحيح ، غير فطر بن خليفة ، وهو ثقة (٩/١٠٥) .

٢٥٤٣ عزاه الهيثمي لأبي يعلى ، وقال : رجاله وثقوا ، وعزاه لعبد الله أيضاً ولم يعزه للبزار ـ وفيه (اثنا عشر بدرياً) مكان (رجلاً) وفي الأصل كما ترى (اثني عشر) .

☆ **अली बिन अबू बक्र हैसमी** ﷀ की **"कश्फ़ुल अस्तार"** में है: उमरो ज़ीमर, सईद बिन वहब, और ज़ैद बिन यसीअ ﷠ कहते हैं: हमने हज़रत अली ﷛ को फ़रमाते हुए सुना: "मैं क़सम देता हूँ हर उस शख़्स को कि वह खड़ा हो जाए जिसने ग़दीर ख़ुम के दिन आप ﷺ को इरशाद फ़रमाते हुए सुना": तेरह लोग खड़े हुए और यह शहादत दी कि रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं मो'मिनीन की जानों का उन से ज़ियादा मुस्तहक़ नहीं हूँ?" लोगों ने कहा: "क्यूँ नहीं", फिर आप ﷺ ने हज़रत अली ﷛ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: "मैं जिसका मौला हूँ तो अली ﷛ भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, जो इससे मोहब्बत रखे तू उससे मुहब्बत रख, जो इससे बुग्ज़ रखे तू उससे बुग्ज़ रख, जो इसकी मदद करे तू उसकी मदद कर और जो इसको रुसवा करे तू उसे रुसवा कर दे।"

→ **किताब के मुहक़्क़िक़ हबीबुर्रहमान आज़मी ने कहा है: हैसमी ने कहा कि इसे बाज़ार ने रिवायत किया है, इसके रिजाल सही के रिजाल हैं, सिवाए फ़ितर बिन ख़लीफ़ा के, ये भी सिक़्क़ा(Authentic) हैं।**

إتقان ما يحسن من الأخبار الدائرة على الألسن

تأليف

نجم الدين محمد بن محمد الغزي الدمشقي

٩٧٧ - ١٠٦١ هـ

حققه وقدم له

خليل بن محمد العربي

المجلد الثاني

الفاروق الحديثة للطباعة والنشر
خلف ٦٠ ش وكيب باشا حدائق القبة
القاهرة ٢٠٥٥٦٨٨ - ٦٤٧٥٢٦

على والديه فإنه لايريح ريح الجنة».

(ق) عن المغيرة (ع) عن سعيد بن زيد: «إن كذبًا على ليس ككذب على أحد، فمن كذب علىّ متعمدًا فليتبوأ مقعده من النار».

(م) عن سمرة: «من حدث عنى بحديث يروى أنه كذب فهو أحد الكاذبين».

وقال أبو محمد الجوينى: الكذب على النبى ﷺ كفر مخرج عن الملة وانفرد بهذا.

٢٠١٣ - ز (من كرم أصله وطاب مولده حسن محضـــره).

ابن النجار عن أبى هريرة (ل) عن عمر.

٢٠١٤ - ز (من كنت مولاه فعلى مـــولاه).

(أ، ط) عن ابن عباس وابن أبى شيبة وابن أبى عاصم والضياء فى (المختارة) عن سعد بن أبى وقاص (أ، ما) عن البراء (ت) وحسنه والضياء فى (المختارة) عن أبى الطفيل عن زيد بن أرقم أو حذيفة بن أسيد الغفارى (أ) وابن أبى شيبة عن بريدة (ط) عن جرير وعن مالك بن الحويرث (هم) عن جندب الأنصارى وابن أبى شيبة عن جابر (أ) عن على وثلاثة عشر رجلا به.

زاد (أ، ط) والضياء فى (المختارة) عن أبى أيوب (ط) عن ابن عمر (حا) عن على وطلحة (أ، ط) والضياء فى (المختارة) عن على وزيد بن أرقم وثلاثين من الصحابة اللهم: «وال من والاه وعاد من عاداه»

فالحديث متواتر ومشهور.

٢٠١٥ - ز (من لايرحم لا يرحـــم).

(أ، ق) عن جرير تراجع (د، ت) عن أبى هريرة (ط) عن ابن عمر (هم) عن الأقرع بن حابس.

وفى لفظ عند مالك (ا، ق، ت) عن جرير (أ، ت) وحسنه عن أبى سعيد:

☆ नजमुद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ी दमिश्क़ी رحمه الله ने **"इत्क़ान मा यहसन मिनल अख़बार उद्दायरा अली अल अलसन"** (रक़म उल हदीस:२०१४) में "मन कुन्तो मौला....." को रिवायत किया है।

→ कहते हैं कि हज़रत अली رضي الله عنه , हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه और तीस सहाबा رضي الله عنهم से (आप صلى الله عليه وآله وسلم) मरवी है कि:

"ऐ अल्लाह عزوجل ! जो इससे दोस्ती करे तू उससे दोस्ती कर और जो इससे दुश्मनी करे तू भी उससे दुश्मनी कर।"

यह हदीस मुतवातिर और मशहूर है।

رسائل جامعية

٣

خصائص أمير المؤمنين

علي بن أبي طالب

رضي الله عنه

لأبي عبد الرحمن أحمد بن شعيب النسائي

ت ٣٠٣ هـ

تحقيق وتخريج

أحمد ميرين البلوشي

مكتبة المعلا - الكويت

٢٧ـ باب قول النبي ﷺ: «من كنت وليه فعلي وليه»

٧٩ـ أخبرنا محمد بن المثنى قال: حدثني يحيى بن حماد قال: حدثنا أبو عوانة عن سليمان قال: حدثنا حبيب بن أبي ثابت، عن أبي الطفيل، عن زيد بن أرقم قال: لما رجع رسول الله ﷺ عن حجة الوداع، ونزل غدير خم(٢١٨) أمر بدوحات(٢١٩) فقممن(٢٢٠) ثم قال: «كأني قد دُعيت، فأجبتُ، [و](٢٢١) إني قد تركت فيكم الثقلين(٢٢٢) أحدهما أكبر من الآخر: كتاب الله وعترتي(٢٢٣) أهل بيتي، فانظروا كيف تخلفوني فيهما، فإنهما لن يتفرقا حتى يردا علي الحوض» ثم قال: «إن الله مولاي، وأنا ولي كل مؤمن» ثم أخذ بيد علي، فقال: «من كنتُ وليه، فهذا وليه، اللهم وال من والاه، وعاد من عاداه». فقلت لزيد: سمعته من رسول الله ﷺ؟ فقال: ما كان في الدوحات أحدٌ إلا رآه بعينيه، وسمعه بأذنيه.(٢٢٤)

---

(٢١٨) غديرخم: موضع بين مكة والمدينة على ميلين من الجحفة. معجم البلدان (٤: ١٨٨).

(٢١٩) الدوحات: بفتح الدال جمع الدوحة، وهي الشجرة العظيمة. النهاية (٤: ١٣٨).

(٢٢٠) قممن: أي كنسن: من قمم بمعنى كنس. النهاية (٤: ١١٠).

(٢٢١) زيدت من ب.

(٢٢٢) الثقلين: قال ثعلب: إنما سميا الثقلين، لأن العمل بهما ثقيل. من غريب الحديث للخطابي (٢: ١٩٢).

(٢٢٣) العِترة: قال الخليل: عترة الرجل هم أقرباؤه من ولده، وولد ولده وبني عمه. معجم مقاييس اللغة (٤: ٢١٧).

(٢٢٤) صحيح. رجاله ثقات من رجال الشيخين غير أن فيه عنعنة حبيب بن أبي ثابت وهو مدلس لكنه توبع. وسليمان هو الأعمش.

والحديث أخرجه البزار (٣: ١٨٩، ١٩٠ ـ كشف الأستار) والطبراني في الكبير (٥: ١٨٥، ١٨٦) وفي الأوسط (ق ١٠٦/٢) والحاكم (٣: ١٠٩) والخوارزمي في المناقب (٩٣) بطرق عن حبيب بن أبي ثابت به. وصححه الحاكم على شرط الشيخين وأقره الذهبي.

وأخرجه أحمد في المسند (٤: ٣٧٠) وفي الفضائل (١١٦٧) وابن حبان (٢٢٠٥ ـ موارد الظمآن) وابن عساكر (١٢/١١١/أ) من طريق فطر بن خليفة، عن أبي الطفيل عن زيد بن أرقم به. ورجال أحمد وابن حبان ثقات سوى فطر فهو صدوق رُمي بالتشيع.

☆ **इमाम निसाइ** ﷫ **ने "ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब** ﷛ **" में "मन कुन्तो वलीया फ़अली वलीया"** के नाम से एक बाब बाँधा है और यह रिवायत (रक़म उल हदीस:७९ में) नक़ल की है:

→ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ؓ फरमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ जब हज्जतुल विदाअ से वापस हुए तो ग़दीर ख़ुम पर पड़ाव डाला, आप ﷺने सायबान लगाने का हुक्म दिया तो उन्हें लगाया गया, फिर आप ﷺने फ़रमाया: "हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करूँ, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढ़ कर है, एक अल्लाह ﷻ! की किताब और दूसरे मेरी इतरत यानी मेरे अहल-ए-बैत ؑ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपस में जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज़ पर आकर मुझ से मिलें", फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ﷻ! मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का वली हूँ", फिर आप ﷺ ने हज़रत अली ؓ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया: "मैं जिसका वली हूँ तो ये (हज़रत अली ؓ) भी उसके वली हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख", रावी कहते हैं: मैं ने ज़ैद ؓ से पूछा: "क्या आप ؓ ने यह रसूलल्लाह ﷺ से सुना है?" आप ؓ ने फ़रमाया: "उन सायबानों में जो भी था हर एक ने उसे अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना है।"

→ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ अहमद मीरैन बलोशी कहते हैं: यह सहीह है।**

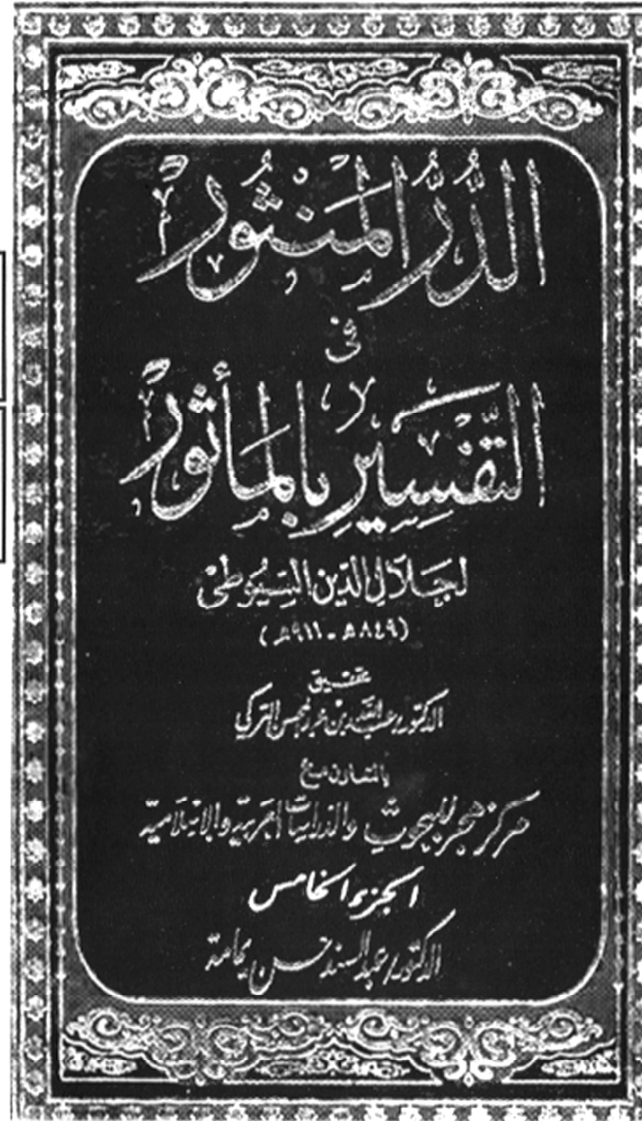

٣٨٣ سورة المائدة : الآية ٦٧

كيف أصنعُ يَجتمِعُ عليَّ الناسُ ؟ » . فنزلت : ﴿وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُۥ﴾[(1)] .

[(2)] وأخرَج ابنُ جريرٍ ، وابنُ أبي حاتمٍ ، عن ابنِ عباسٍ : ﴿وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُۥ﴾ . يعني : إن كتمتَ آيةً مما أُنزِل إليك لم تُبلِّغْ رسالته[(2)] .

وأخرَج ابنُ أبي حاتمٍ ، وابنُ مَرْدُويه ، وابنُ عساكرَ ، عن أبي سعيدٍ الخدريِّ قال : نزَلت هذه الآيةُ : ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ على رسولِ اللَّهِ ﷺ يومَ غَديرِ خُمٍّ[(3)] في عليِّ بنِ أبي طالبٍ[(4)] .

وأخرَج ابنُ مَرْدُويَه عن ابنِ مسعودٍ قال : كنا نقرأُ على عهدِ رسولِ اللَّهِ ﷺ : ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ أن عليًّا مولى المؤمنين ، ﴿وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُۥ وَٱللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ ٱلنَّاسِ﴾ .

وأخرَج ابنُ أبي حاتمٍ عن [(5)] عنترةَ قال : كنتُ عندَ ابنِ عباسٍ فجاءه رجلٌ فقال : إن ناسًا يأتُونا فيُخبِرونا أنَّ عندَكم شيئًا[(5)] لم يُبدِه رسولُ اللَّهِ ﷺ للناسِ . فقال : ألم تَعلَمْ أن اللَّهَ قال : ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ ؟ واللَّهِ ما ورَّثَنا رسولُ اللَّهِ ﷺ سوداءَ في بيضاءَ[(6)] .

---

(١) ابن جرير ٨/ ٥٦٨، وابن أبي حاتم ٤/ ١١٧٣ (٦٦١٣) .
(٢ - ٢) سقط من : ر ٢، م .
والأثر عند ابن جرير ٨/ ٥٦٨، وابن أبي حاتم ٤/ ١١٧٣ (٦٦١٢) .
(٣) خُمّ : بير كلاب بن مرة ، وقيل : اسم رجل صبّاغ أضيف إليه الغدير الذى هو بين مكة والمدينة بالجحفة ، وقيل هو على ثلاثة أميال من الجحفة . وقيل : واد بين مكة والمدينة عند الجحفة به غدير عنده خطب رسول الله ﷺ . معجم البلدان ٢/ ٤٧١ .
(٤) ابن أبي حاتم ٤/ ١١٧٢ (٦٦٠٩) ، وابن عساكر ٤٢/ ٢٣٧.
(٥ - ٥) في م : «أنه قال لعلي : هل عندكم شيء» .
(٦) ابن أبي حاتم ٤/ ١١٧٢ (٦٦١١) .

☆ **अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती** رحمة الله عليه की **“तफ़सीर दूर्रे मंसूर”** में है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه फ़रमाते हैं: “यह आयात

“يـا أيها الرسـول بلغ ما أنزل إليك من ربك” (सुरतुल माएदा)

(ऐ रसूल صلى الله عليه وآله وسلم ! जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब سبحانه وتعالى ! की तरफ़ से नाज़िल किया गया है उसे पहुँचा दीजिये।) हुजूर صلى الله عليه وآله وسلم पर ग़दीर ख़ुम के दिन नाज़िल हुई और यह हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में नाज़िल हुई है।

→ हज़रत इब्न-ए-मसऊद رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि हम रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के ज़माने में इस तरह पढ़ते थे-

“يـا أيها الرسـول بلغ ما أنزل إليك من ربك” (सुरतुल माएदा)

(ऐ रसूल صلى الله عليه وآله وسلم ! जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब سبحانه وتعالى ! की तरफ़ से नाज़िल किया गया है उसे पहुँचा दीजिये।) कि अली رضي الله عنه मो’मिनीन के मौला हैं। **(अगर आप ने यह न किया तो उसका पैग़ाम न पहुंचाया)**

الكشف والبيان

المعروف

تفسير الثعلبي

للإمام الهمام أبو إسحاق أحمد المعروف بالإمام الثعلبي

ت ٤٢٧هـ

دراسة وتحقيق

الإمام أبي محمد بن عاشور

مراجعة وتدقيق

الأستاذ نظير الساعدي

الجزء الرابع

دار إحياء التراث العربي

بيروت - لبنان

وقال أبو جعفر محمد بن علي: معناه: بلّغ ما أنزل إليك في فضل علي بن أبي طالب، فلما نزلت الآية أخذ (عليه السلام) بيد علي، فقال: «من كنت مولاه فعلي مولاه»[1] [١٠٠].

أبو القاسم يعقوب بن أحمد السري، أبو بكر بن محمد بن عبد الله بن محمد، أبو مسلم إبراهيم ابن عبد الله الكعبي، الحجاج بن منهال، حماد عن علي بن زيد عن عدي بن ثابت عن البراء قال: لما نزلنا مع رسول الله ﷺ في حجة الوداع كنّا بغدير خم فنادى إن الصلاة جامعة وكسح رسول الله عليه الصلاة والسلام تحت شجرتين وأخذ بيد علي، فقال: «ألست أولى بالمؤمنين من أنفسهم»؟ قالوا: بلى يا رسول الله، قال: «ألست أولى بكل مؤمن من نفسه»؟ قالوا: بلى يا رسول الله، قال: «هذا مولى من أنا مولاه اللهم والِ من والاه وعاد من عاداه»[2]. قال: فلقيه عمر فقال: هنيئاً لك يا ابن أبي طالب أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة.

روى أبو محمد عبدالله بن محمد القايني نا أبو الحسن محمد بن عثمان النصيبي نا: أبو بكر محمد ابن الحسن السبيعي نا علي بن محمد الدّهان، والحسين بن إبراهيم الجصاص قالا نا الحسن بن الحكم نا الحسن بن الحسين بن حيان عن الكلبي عن أبي صالح عن ابن عباس في قوله ﴿يا أيها الرسول بلغ﴾ قال: نزلت في علي (رضي الله عنه) أمر النبي ﷺ أن يبلغ فيه فأخذ (عليه السلام) بيد علي، وقال: «من كنت مولاه فعلي مولاه اللهم والِ من والاه وعادِ من عاداه»[3] [١٠١].

وبلغ ما أنزل إليك في حقوق المسلمين فلما نزلت الآية خطب رسول الله ﷺ أي يوم هذا الحديث في خطبة الوداع، ثم قال: هل بلّغت؟

﴿وإن لم تفعل فما بلّغت رسالته﴾ قرأ ابن محيصن وابن قفال وأبو عمرو والأعمش وشبل: رسالته، على واحدة، وهي قراءة أصحاب عبد الله. الباقون جمع.

فإن قيل: فأي فائدة في قوله: ﴿وإن لم تفعل فما بلّغت رسالته﴾ ولا يقال: كل من هذا الطعام وإن لم تأكل فما أكلته.

(١) مسند أحمد: ١ / ٨٤.
(٢) البداية والنهاية: ٥ / ٢٢٩.
(٣) مسند أحمد: ٥ / ٣٧٠.

☆ **इमाम सअलबी** رحمۃ اللہ علیہ की तफ़सीर **“अलकश्फ़ वलबयान”** (मारूफ़ ब नाम तफ़सीर सअलबी) में है कि जब यह आयत (बलग़......) नाज़िल हुई तो आप ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ा और फ़रमाया: “मैं जिस का मौला हूँ, अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं।”

→ हज़रत बरा बिन आज़िब رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं: जब हमने हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर रसूलल्लाह ﷺ के साथ ग़दीर ख़ुम में क़याम किया तो आप ﷺ ने नमाज़ का ऐलान कराया, दो दरख़्तों के नीचे आप ﷺ के लिए झाड़ू लगाई गई, आप ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ा और इरशाद फ़रमाया: “क्या मैं मो’मिनीन की जानों का उनसे ज़ियादा हक़दार नहीं हूँ?” लोगों ने कहा: “क्यूँ नहीं, ऐ अल्लाह عزوجل ! के रसूल ﷺ”, इसके बाद आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह (हज़रत अली رضی اللہ عنہ) उसके मौला हैं जिसका मैं मौला हूँ, ऐ अल्लाह عزوجل ! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू उससे दुश्मनी रख।”

→ रावी कहते हैं कि हज़रत अली رضی اللہ عنہ से जब हज़रत उमर رضی اللہ عنہ की मुलाक़ात हुई, तो हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: ऐ इब्न-ए-अबी तालिब! मुबारक हो, तुम ने सुबह ओ शाम इस हाल में की कि तुम हर मोमिन और मोमिना के मौला थे।

“يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك”

→ हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में नाज़िल हुई है, नबी पाक ﷺ को हुक्म दिया गया कि हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में लोगों तक बात पहुँचा दें, तो आप ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ा और फ़रमाया: “मैं जिसका मौला हूँ, अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह عزوجل ! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू उससे दुश्मनी रख।”

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أخْبَرَنا أبو بكر مُحَمَّد بن عَبْد الباقي، نا أبو بكر الخطيب، أنا عَلي بن يَحْيَىٰ بن جعفر بن عبد كويه ، أنا أحْمَد بن القاسم بن الريان، نا أحْمَد بن إسحاق بن إبْرَاهيم بن نبيط بن شَرِيط[(١)]، حدّثني أبي عن أبيه عن جده أنه قيل له:

أكانت الأنصار مع عَلي بن أبي طالب يوم الجَمَل وصِفّين؟ قال: نعم، سمعت رَسُول الله ﷺ يقول: «اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه، وانصرْ مَنْ نَصَره، واخذلْ مَنْ خذله»[٨٧٣٣].

أخْبَرَنا أبو الفرج سعيد بن أبي الرجاء، نا أبو الفتح منصور بن الحسَين بن عَلي، وأبو طاهر أحْمَد بن مُحَمّد، قالا: أنا أبو بكر بن المقرىء، نا أبو جعفر مُحَمّد بن أحْمَد بن قيس النساوي[(٢)] مقرىء أهل مكة، في مسجد الحرام، نا إبْرَاهيم بن الحسَين الهَمْذاني، نا عَبْد اللّه بن مُحَمّد النُّفَيلي، نا عِكْرِمة بن إبْرَاهيم، حدّثني إدريس بن يزيد الأودي، حدّثني أبي قال:

كنت جالساً عند أبي هريرة، فجاء رجل فقال: أنشدك الله يا أبا هريرة أسمعت رَسُول الله ﷺ يوم غدير خُمّ: «اللّهم مَنْ كنت مولاه فعليّ مولاه، اللّهمّ والِ مَنْ والاه، وعادِ من عاداه»؟ [قال: نعم][(٣)][٨٧٣٤].

أخْبَرَنا أبو عَبْد اللّه الخَلاّل، أنا أبو طاهر بن محمود، أنا أبو بكر بن المقرىء، نا أبو عَرُوبة، نا أبو إسحاق بن زيد الخَطّابي، ، نا أبو جعفر بن نُفَيل[(٤)]، نا عِكْرِمة بن إبْرَاهيم، عَن إدريس بن يزيد الأَوْدي، عَن أبيه قال:

قدم أبو هريرة الكوفة، فجلس في المسجد، واجتمع الناس فقال له رجل: نشدتك بالله يا أبا هريرة، أسمعتَ النبي ﷺ يقول: «مَنْ كنت مولاه فعليّ مولاه، اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه» قال: اللّهم نعم[٨٧٣٥].

كذا قال، وإنما يرويه إدريس عن أخيه أبي يزيد داود بن يزيد، عن أمه[(٥)].

---

(١) ضبطت من الإصابة ٢/١٤٨ بالفتح.

(٢) كذا رسمها بالأصل، وفي م: «الساوى» وفي المطبوعة: النساوي.

(٣) ما بين معكوفتين سقط من الأصل، واستدراك لإيضاح المعنى عن م، و« ز » والمطبوعة

(٤) كذا رسمها في « ز »، وم، والمطبوعة، وإعجامها مضطرب بالأصل.

(٥) كذا بالأصل، وم، و« ز »، وفي المطبوعة: عن أبيه.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷺ की **"तारीख-ए-दिमश्क़"** में है: हुजूर ﷺ का इरशाद है: "ऐ अल्लाह ﷻ! जो इस (अली رضي الله عنه) से दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख, जो इससे अदावत रखे तू उससे अदावत रख, जो इसकी नुसरत करे तू उसकी नुसरत फ़रमा और जो इसे रुसवा करे तू उसे रुसवा फ़रमा।"

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أخبرنا أبو القاسم زاهر بن طاهر، أنا أبو سعد مُحَمّد بن عَبْد الرّحمن، أنا السيد أبو الحسَن مُحَمّد بن عَلي بن الحسَين نا سُلَيْمَان بن أحْمَد الحافظ، نا مُحَمّد بن إسحاق الحافظ، نا إسْمَاعيل بن أبي أويس، نا جعفر بن إبْراهيم الجعفري قال:

كنت عند الزهري أسمع منه، فإذا عجوزٌ قد وقفتْ عليه، فقالت: يا جعفري لا تكتب عنه فإنّه مالَ إلى بني أمية، وأخذ جوائزهم، فقلت: من هذه؟ قال: أختي رُقَيّة، خرفت؟ قالت: خرفتَ أنتَ، كتمتَ فضائل آل مُحَمّد.

[قالت:] وقد حَدّثني مُحَمّد بن المُنْكَدِر، عَن جابر بن عَبْد الله قال:

أخذ رَسُول الله ﷺ بيد عَلي فقال: **«مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه، اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه، وانصرْ من نصره، واخذلْ من خذله»**[٨٧٢٧].

[قالت:] وحدّثني مُحَمّد بن المُنْكَدِر عن جابر بن عَبْد الله قال: قال رَسُول الله ﷺ: **«أوثَقُ عُرَى الإيمان الحب في الله والبغض في الله»**[٨٧٢٨].

أخبرنا أبو القَاسم إسْمَاعيل بن أحْمَد، أنا عاصم بن الحسَن بن مُحَمّد، أنا عَبْد الواحد بن مُحَمّد بن عَبْد الله بن مُحَمّد، أنا أحْمَد بن مُحَمّد بن سعيد، نا أحْمَد بن يَحْيَىٰ بن زكريا، نا عَلي بن قادم، نا إسرائيل، عَن عَبْد الله بن شريك، عَن سَهْم بن حُصَين الأسَدي قال:

قدمت إلى مكة أنا وعَبْد الله بن عَلْقَمة ـ وكان عَبْد الله بن علقمة سبابة لعليّ دهراً ـ قال: فقلت له: هل لك في هذا؟ ـ يعني أبا سعيد الخُدْري ـ يحدّث[1] به عهداً قال: نعم، قال: فأتيناه، فقال[2]: هل سمعت لعَليّ رضوان الله عليه منقبةً؟ قال: نعم، إذا حدثتك فَسَلْ عنها المهاجرين والأنصار، وقريش[3]: أن رَسُول الله ﷺ قام يومَ غدير خُمّ فأبلغ ثم قال: «يا أيها الناس ألستُ أولى بالمؤمنين من أنفسهم؟» قالوا: بلى، قالها ثلاث مرات، ثم قال: «ادنُ يا عَلي»، فرفع رَسُول الله ﷺ يديه حتى نظرتُ إلى بياض آباطهما، قال: «مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه» ثلاث مرات، قال: فقال عَبْد الله بن عَلْقَمة: أنت سمعتَ هذا من رَسُول الله ﷺ؟ قال أبو سعيد: نعم، وأشار إلى أذنيه وصدره، قال: سمعته أذناي ووعاه قلبي.

---

(١) في المطبوعة: نحدث.

(٢) كذا بالأصول.

(٣) كذا بالأصل وم والمطبوعة، ولعله: وقريشاً، أصوب.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷺ की **“तारीख-ए-दिमश्क़”** में है: हुजूर ﷺ ने फ़रमाया: “मैं जिसका मौला हूँ, अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख, जो इससे अदावत रखे तू उससे अदावत रख, जो इसकी नुसरत करे तू उसकी नुसरत फ़रमा और जो इसे रुसवा करे तू उसे रुसवा फ़रमा।”

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر

للطباعة والنشر والتوزيع

كل مؤمن، فَمَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه[٨٧١٩].

أخبرنا أبو القاسم بن السَّمَرْقَنْدي، أنا أبو الحسين بن النقور، وأبو القاسم بن البُسْري، وأبو مُحَمَّد أحْمَد بن عَلي بن الحسَن بن أبي. . . . . .[١]، قالوا: أنا أبو الحسَن أحْمَد بن مُحَمَّد بن القاسم بن موسى بن القاسم بن الصلت، نا أبو بكر أحْمَد بن عَبْد اللّه [النحاس][٢] صاحب أبي صخرة ـ إملاء ـ نا مُحَمَّد بن زنجوية، نا الحُمَيدي، نا يعقوب بن جعفر بن أبي كثير المدني، عن مهاجر بن مسمار، حدثتني وقال ابن النقور: أخبرتني ـ عائشة بنت سعد، عَن سعد أنه قال:

> كنا مع رَسُول الله ﷺ بطريق مكة وهو متوجه إليها، فلما بلغ غديرَ خُمَ الذي بخُمْ وقف الناس ثم ردّ من مضى ولحقه منهم من تخلّف، فلما اجتمع الناس، قال: **«أيها الناس هل بلّغت؟»** قالوا: نعم، قال: **«اللّهم اشهد**[٣]**»** ثم قال: **«أيها الناس هل بلّغت؟»** قالوا: نعم، قال: **«اللّهم اشهد**[٣]**»** ـ ثلاثاً ـ **«أيها الناس من وليكم؟»** قالوا: الله ورسوله ـ ثلاثاً ـ ثم أخذ بيد عَلي بن أبي طالب فأقامه، فقال: ـ وقال ابن النقور: ثم قال ـ: **«مَنْ كان الله ورسوله وليّه فإنّ هذا وليه، اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه»**[٨٧٢٠].

أخبرنا أبو القاسم زاهر بن طاهر، أنا أبو سعد الجَنْزَرودي، أنا السيد أبو الحسَن مُحَمَّد بن عَلي، نا مُحَمَّد بن عمر البَزّار[٤]، نا عَبْد اللّه بن زياد المَقْبُري، نا أبي، نا حفص بن عمر العمري، نا غياث بن إبْرَاهيم، عَن طلحة بن يَحْيَى، عَن عمه عيسى بن طلحة، عَن طلحة بن عُبَيْد اللّه أن النبي ﷺ قال: **«عليّ مولى من كنتُ مولاه»**[٨٧٢١].

أخبرنا أبو منصور بن زُرَيق[٥]، أنا أبو بكر الخطيب، أنا مُحَمَّد بن أبي[٦] النَّرْسي، أنا مُحَمَّد بن عَبْد اللّه بن إبْرَاهيم، حدّثني مُحَمَّد بن نهار[٧] بن عمار بن أبي المحياة التيمي، نا أبو مسعود أحْمَد بن الفرات، نا يَحْيَى الحِمّاني، عَن قيس بن الربيع، عَن الأعمش، عَن إبْرَاهيم، عَن علقمة، عَن عَبْد اللّه أن النبي ﷺ قال: **«من كنتُ مولاه فعليّ مولاه»**[٨٧٢٢].

---

(١) بياض بالأصل وم و« ز »، ومكانها في المطبوعة: عثمان.

(٢) بياض بالأصل، والمستدرك عن م، وفي المطبوعة: «بن محمد»؟.

(٣) بالأصل: «اشهد» تصحيف، والمثبت عن م.

(٤) الأصل: البزاز، والمثبت عن م، و« ز ».

(٥) الأصل وم: رزين، تصحيف، والسند معروف.

(٦) الأصل: «أبو» ومكانها بياض في م.

(٧) بالأصل بدون إعجام، وفي م: «نهار» وهو المثبت، والمطبوعة: بهار.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** رحمۃ اللہ علیہ की **“तारीख-ए-दिमश्क़”** में है: हज़रत साद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं: “हम मक्का के रास्ते में हुज़ूर ﷺ के साथ थे, जब आप ग़दीर ख़ुम पर पहुंचे तो लोग ठहर गए, जो आगे निकल गए थे वो वापस पीछे पलट आए और जो पीछे रह गए थे वो आपसे आ मिले, जब लोग जमा हो गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐ लोगों! क्या मैं ने पहुँचा दिया?” लोगों ने कहा: “हाँ”, आप ने फ़रमाया: “ऐ अल्लाह عزوجل! तू गवाह रहना”, फिर फ़रमाया: “ऐ लोगों! ! क्या मैं ने पहुँचा दिया?” लोगों ने कहा: “हाँ”, आप ने फ़रमाया: “ऐ अल्लाह عزوجل! तू गवाह रहना”, तीन मर्तबा यह फ़रमाया, “ऐ लोगों! तुम्हारा वली कौन है?” लोगों ने कहा: “अल्लाह عزوجل! और उसके रसूल ﷺ”, तीन मर्तबा यह फ़रमाया, फिर आपने हज़रत अली رضی اللہ عنہ का हाथ पकड़ा, उन्हें (बराबर में) खड़ा किया और फ़रमाया: “अल्लाह عزوجل! और रसूल ﷺ जिस के वली हैं तो यह भी उसके वली हैं, ऐ अल्लाह عزوجل! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू उससे दुश्मनी रख।”

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أليس أزواجي أمهاتكم؟» قال: «فهذا موالي من أنا مواليه، ومولى مَنْ أنا مولاه، اللّهمّ والِ مَنْ والاه، وعادِ من عاداه»[٨٧١٨].

فلقيه عمر بن الخطّاب، فقال: هنيئاً لك يا عَلي، أصبحتَ وأمسيتَ مولى كلّ مؤمن ومؤمنة.

أَخْبَرَنا أبو عَبْد الله الحسَين بن عَبْد الملك، نا إبْرَاهيم بن منصور، نا أبو بكر بن المقرىء، نا أبو يَعْلَى، نا إبْرَاهيم بن الحجاج الشامي، نا حمّاد بن سَلَمة، عَن عَلي بن زيد، وأبي هارون العبدي، عَن عدي بن ثابت، عَن البَرَاء، قال:

لما أقبلنا مع رَسُول الله ﷺ في حجة الوداع حتى إذا كنا بغدير خُمّ فنودي فينا: الصّلاة جامعة، وكسح للنبي ﷺ تحت شجرتين، فأخذ النبي ﷺ بيد عليّ ثم قال: **«ألستُ أولى بالمؤمنين**[١] **بكلّ مؤمن من نفسه؟»** فقال أحدهما[٢]: **«أليست أزواجي أمهاتكم؟»** قالوا: بلى، فقال رَسُول الله ﷺ: **«فإنّ هذا مولى مَنْ أنا مولاه، اللّهمّ والِ مَنْ والاه، وعادِ من عاداه»**.

قال: قال: لقيه عمر بعد ذلك، فقال: هنيئاً لك يا ابن أبي طالب، أصبحتَ وأمسيتَ مولى كل مؤمن ومؤمنة.

أَخْبَرَنا أبو طالب بن أبي عقيل، أنا عَلي بن الحسَين الخِلَعي، أنا عَبْد الرّحمن بن عمر الشاهد، أنا أبو سعيد[٣] أحْمَد بن مُحَمّد بن زياد، نا أبو يَحْيَىٰ زكريا بن يَحْيَىٰ الناقد، نا عَبْد الرّحمن بن صالح الأزدي، نا موسى بن عُثْمَان الحربي[٤]، عَن أبي إسحاق عن البَرَاء بن عازب، وزيد بن أرقم، قالا:

كنا مع النبي ﷺ يوم غدير خُمّ، ونحن نرفع غصن الشجرة عن رأسه، فقال: **«إنّ الصّدقة لا تحلّ لي، ولا لأهل بيتي، لعن الله من ادّعى إلى غير أبيه، وَمَنْ تولّى غَيْرَ مواليه، الولد للفراش، وللعاهر الحجر، ليس لوارثٍ وصية، ألاَ قد سمعتموني ورأيتموني، فَمَنْ كذب عليّ متعمداً فليتبوأ مقعده من النار، ألاَ إني فرطكم على الحوض [ومكاثر]**[٥] **بكم فلا تسودوا وجهي، ألا**[٦] **استنقذ رجالاً، وليستنقذنّ بي قوم آخرون. ألا وإن الله وليي، وأنا وليّ كل مؤمن، فَمَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»**[٨٧١٩].

(١) كذا بالأصل وم و«ز»، وثمة سقط في الكلام قياساً إلى الروايات السابقة.

(٢) كذا بالأصول ويعني أحد راويي الحديث، علي بن زيد بن جدعان أو أبا هارون العبدي.

(٣) بالأصل وم: أبو سعد، تصحيف، راجع ترجمته في سير أعلام النبلاء ١٥/ ٤٠٧.

(٤) فوقها بالأصل ضبة، ومكانها بياض في م. وفي البداية والنهاية ٧/ ٣٨٦ موسى بن عثمان الحضرمي.

(٥) بياض بالأصل وم، والمستدرك عن المختصر. (٦) كذا بالأصل وم و«ز»، وتبدو العبارة مضطربة.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷺ की **“तारीख-ए-दिमश्क़”** में है:

हुज़ूर ﷺ का फ़रमान है....“सुनो! बेशक अल्लाह ﷻ! मेरा वली है, मैं हर मोमिन का वली हूँ, तो मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं।”

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر

للطباعة والنشر والتوزيع

الثقلين(١)**، فانظروا كيف تخلفوني [فيهما، الثقل]**(٢) **الأكبر كتاب الله سبب طرفه بيد الله عز وجل وطرف بأيديكم فاستمسكوا [به ولا]** (٣) **تضلوا ولا تبدلوا، وعترتي أهل بيتي، فإنه قد نبأني اللطيف الخبير أنهما لن يفترقا حتى يردا [عليّ]** (٤) **حوضي** (٥)»[٨٧١٤].

أَخْبَرَنا أبو عَبْد اللّه الحسَين بن عَبْد الملك، أنا أبو طاهر أحْمَد بن محمود، نا أبو بكر بن المقرىء، نا أبو العباس بن قُتَيبة، نا ابن أبي السَّرِي، نا عَبْد الرّزّاق (٦) ، أنا مَعْمَر، عَن عَلي بن زيد بن جُدْعان، عَن عَدِي بن أبي ثابت، عَن البراء بن عازب قال:

خرجنا مع رَسُول الله ﷺ حتى(٧) نزلنا غدير خُمّ [بعث](٨) منادياً ينادي، فلما اجتمعنا قال: «**ألستُ أولى بكم من أنفسكم؟**» قلنا: بلى يا رَسُول الله، قال: «**ألستُ أولى بكم من [أمهاتكم**(٨)**؟**»] قلنا: بلى يا رَسُول الله، قال: «**ألست أولى بكم من آبائكم؟**» قلنا: بلى يا رَسُول الله، قال: «**ألست أولى بكم، ألست [ألست]**(٨) **ألستُ؟**» قلنا بلى يا رَسُول الله. قال: «**فَمَنْ كنت مولاه فإنّ علياً بعدي مولاه، اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه**»[٨٧١٥].

فقال عمر بن الخطّاب: هنيئاً لك يا ابن أبي طالب، أصبحت اليوم وليّ كلّ مؤمن.

آخر(٩) **الجزء الثالث والتسعين بعد الأربعمائة من الفرع**(٩).

أَخْبَرَنا أبو بكر مُحَمّد بن عَبْد الباقي [أنا أبو](١٠)الحسَن عَلي بن إبْرَاهيم بن عيسى المقرىء الباقلاني ـ قراءة عليه وأنا حاضر ـ نا أبو بكر بن مالك ـ إملاء ـ نا... (١١) بن صالح الهاشمي، نا هُدْبة بن خالد، حدّثني حمّاد بن سَلَمة، عَن عَلي بن زيد بن جُدْعان، عَن عَدِي بن ثابت، وأبي هارون العبدي(١٢)، عَن البراء بن عازب، قال:

---

(١) غير مقروءة بالأصل، ورسمها: «الثلقين» والمثبت عن م و« ز ».

(٢) بياض بالأصل وم و« ز »، والمستدرك عن المعجم الكبير.

(٣) بياض بالأصل و« ز »، والكلام متصل في م، واللفظتان سقطتا منها، والمستدرك عن المعجم الكبير.

(٤) بياض بالأصل، والمستدرك عن المعجم الكبير.

(٥) الأصل تقرأ: «الحوضي» والمثبت عن المطبوعة، وفي م: يردا الحوض.

(٦) من طريق عبد الرزاق رواه ابن كثير في البداية والنهاية بتحقيقنا ٧/ ٣٨٦.

(٧) الأصل: حين، والمثبت عن م والبداية والنهاية.

(٨) بياض بالأصل وم و« ز »، والمستدرك عن البداية والنهاية.

(٩) ما بين الرقمين ليس في م.

(١٠) بياض بالأصل والزيادة لتقويم السند: «أنا» موجودة في م، و«أبو» ليس في م.

(١١) بياض بالأصل وم و« ز ». وقد أبقاه محقق المطبوعة بياضاً. وفي تهذيب الكمال ١٩/ ٢٢٥ في ترجمة هدبة بن خالد: ذكر المزي من أسماء الذين رووا عنه: الفضل بن صالح الهاشمي.

(١٢) أقحم بعدها بالأصل: عن عدي بن ثابت.

☆ **इब्न-ए-असाकिर رحمۃ اللہ علیہ की "तारीख-ए-दिमश्क़" में है:**

→ बरा बिन आज़िब رضی اللہ عنہ कहते हैं: "हम रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के साथ निकले, जब हमने ग़दीर ख़ुम पर पड़ाव डाला तो आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने एक मुनादी भेजा, जब सब जमा हो गए तो आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने पूछा: "क्या मैं तुम्हारी जानों का तुमसे ज़ियादा हकदार नहीं हूँ?" हम ने कहा: "क्यूँ नहीं, ऐ अल्लाह عزوجل ! के रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم", आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने पूछा: "क्या मैं तुम्हारी जानों का तुम्हारे माँ आँ से ज़ियादा हकदार नहीं हूँ?" हम ने कहा: "क्यूँ नहीं, ऐ अल्लाह عزوجل ! के रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم", आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने पूछा:"क्या मैं तुम्हारे आबा से ज़ियादा हक़दार नहीं हूँ !", हम ने कहा: "क्यूँ नहीं, ऐ अल्लाह عزوجل ! के रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم", आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने पूछा: "क्या मैं नहीं हूँ..... क्या मैं नहीं हूँ...." हम ने कहा: "क्यूँ नहीं, ऐ अल्लाह عزوجل ! के रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم", आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: "जिसका मैं मौला हूँ तो मेरे बाद अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह عزوجل ! जो इससे दोस्ती रखे तू उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तू उससे दुश्मनी रख।" हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: "ऐ इब्न-ए-अबी तालिब رضی اللہ عنہ ! मुबारक हो, तुमने सुबह इस हाल में की कि तुम हर मोमिन व मोमिना के मौला थे।"

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أخبرنا أبو بكر مُحَمَّد بن الحسَين بن المزرفي[1]، نا أبو الحسَين مُحَمَّد بن عَلي بن المهتدي، أنا أبو الحسَن علي بن عمر بن مُحَمَّد بن الحسَن، أنا العباس بن أحْمَد البِرْتي، أنا نصر بن عَبْد الرَّحمن أبو سُلَيْمَان[2] الوَشّاء، أنا زيد بن الحسَن الأنماطي، أنا معروف بن خَرَّبُوذ المكي[3]، عَن أبي الطُّفَيل عامر بن واثلة، عَن حُذَيفة بن أسيد[4] قال:

لمّا قفل رَسُول الله ﷺ عن حجّة الوداع نهى أصحابه عن شجرات بالبطحاء متقاربات أن ينزلوا حولهن، ثم بعث إليهم فصلى تحتهن، ثم قام فقال: «أيها الناس، قد نبّأني اللطيف الخبير أنه لم يعمّر نبيّ إلّا مثل نصف عمر الذي يليه من قبله، وإنّي لأظن أن يوشك أن أدعى فأجيب، وإنّي مسؤول وأنتم مسؤولون، فماذا أنتم قائلون؟» قالوا: نشهد أنك قد بلّغتَ، ونصحتَ، وجهدتَ، فجزاك الله خيراً، قال: «ألستم تشهدون أنْ لا إله إلّا الله، وأنّ مُحَمَّداً عبده ورسوله، وأنّ جنته[5] حق، وناره حق، وأنّ الموت حق، وأن البعث بعد الموت حق، وأنّ الساعة آتية لا ريبَ فيها، وأنّ الله يبعث مَنْ في القبور؟» قالوا: بلى نشهد بذلك، قال: «اللّهم اشهد» ثم قال: «أيها الناس إنّ الله مولاي، وأنا مولى المؤمنين، وإنّي أولى بهم من أنفسهم، فَمَنْ كنتُ مولاه فهذا مولاه، اللّهمّ والِ مَنْ والاه، وعادِ من عاداه».

ثم قال: «أيها الناس [إني فرط لكم][6] وإنكم واردون على الحوض، حوضي، أعرض مما بين بصرى وصنعاء، فيه عدد [النجوم][7] قدحان فضة، وإنّي سائلكم حين تَرِدُون عليّ عن الثقلين[8]، فانظروا كيف تخلفوني [فيهما، الثقل][9] الأكبر كتاب الله سبب طرفه بيد الله عز وجل وطرف بأيديكم فاستمسكوا [به ولا][10] تضلوا ولا تبدلوا، وعترتي أهل بيتي، فإنه قد نبّأني اللطيف الخبير أنهما لن يتفرقا حتى يردا [عليّ][11] حوضي[12]»[(٨٧١٤)].

(١) بالأصل: المرزفي، وفي المطبوعة: «المرزقي» كلاهما تصحيف، والصواب «المزرفي»، مرّ التعريف به.
(٢) ويقال: أبو سعيد، ترجمته في تهذيب الكمال ١٩/ ٦٣ طبعة دار الفكر.
(٣) ترجمته في تهذيب الكمال ١٨/ ٢٤٨ طبعة دار الفكر.
(٤) بالأصل: سويد، تصحيف، والتصويب عن « ز »، وهو حذيفة بن أسيد، أبو سريحة الغفاري، ترجمته في تهذيب الكمال ٤/ ١٩٠.
(٥) إلى هنا ينتهي السقط الذي أشرنا إلى بدايته قبل عدة صفحات في م.
(٦) بياض بالأصل وم و« ز »، والمستدرك عن المعجم الكبير للطبراني ٣/ ٦٧ رقم ٢٦٨٣.
(٧) بياض بالأصل وم و« ز »، والمستدرك عن المعجم الكبير.
(٨) غير مقروءة بالأصل، ورسمها: «الثلقين» والمثبت عن م و« ز ».
(٩) بياض بالأصل وم و« ز »، والمستدرك عن المعجم الكبير.
(١٠) بياض بالأصل و« ز »، والكلام متصل في م، واللفظتان سقطتا منها، والمستدرك عن المعجم الكبير.
(١١) بياض بالأصل، والمستدرك عن المعجم الكبير.
(١٢) الأصل تقرأ: «الحوضي» والمثبت عن المطبوعة، وفي م: يردا الحوض.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** رحمۃ اللہ علیہ की **“तारीख़-ए-दिमश्क़”** में है: हज़रत हुज़ैफ़ा बिन असयद رضی اللہ عنہ कहते हैं कि जब रसूलल्लाह ﷺ हज्जतुल विदाअ से लौटे तो अपने सहाबा को बतहा के कुछ दरख़्तों के जो कि आस पास थे, ठहरने से मना किया। फिर आप ﷺ ने उनको बुलवा भेजा और उन दरख़्तों के नीचे नमाज़ पढ़ी और फिर फ़रमाया: “मुझे लतीफ़ ओ ख़बीर ने बताया है कि: हर नबी को उससे पहले वाले नबी से आधी उम्र दी गई, क़रीब है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करूँ, मुझसे भी पूछा जाएगा और तुमसे भी सवाल होगा, तो तुम लोग क्या कहोगे?” लोगों ने कहा: “हम कहेंगे कि आप ﷺ ने ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचा दिया और ख़ैरख़्वाही की, अल्लाह عزوجل! आप ﷺ को जज़ा-ए-ख़ैर दे”, आप ﷺ ने पूछा: “क्या तुम इस बात की गवाही नहीं देते कि अल्लाह عزوجل! के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं, और इस बात की कि जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, क़यामत आ कर रहेगी इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह عزوجل! उन लोगों को ज़िंदा करेगा जो क़ब्रों में हैं?” लोगों ने कहा: “क्यूँ नहीं, हम गवाही देते हैं”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐ अल्लाह عزوجل! तू गवाह रह”, फिर फ़रमाया: “अल्लाह عزوجل! मेरा मौला है और मैं मो’मिनीन का मौला हूँ, और मैं उनकी जानों का उनसे ज़ियादा हक़दार हूँ, मैं जिसका मौला हूँ अली رضی اللہ عنہ उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह عزوجل! जो अली رضی اللہ عنہ से दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख, और जो अली رضی اللہ عنہ से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।” फिर फ़रमाया: “ऐ लोगो! मैं तुमसे पहले हौज़ पर जाने वाला हूँ, और तुम (बाद में) हौज़ पर आओगे, उसकी चौड़ाई इतनी है कि जितनी मेरे सामने से ज़िआ तक की दूरी है, उसमें सितारों की तादाद के बराबर चांदी के बर्तन हैं, जब तुम मेरे पास आओगे तो मैं तुमसे सक़लैन के बारे में सवाल करूँगा, तुम सोच लो कि सक़लैन के बारे में कैसी जाँनशीनी इख़्तियार करोगे, सक़ल अकबर अल्लाह عزوجل! की किताब है, जो इसका एक सिरा अल्लाह عزوجل! के हाथ में है और दूसरा तुम्हारे हाथ में, तुम उसे मजबूती से पकड़ लो, गुमराह न हो और तब्दीली न करो, और दूसरी चीज़ मेरी इतरत यानी मेरे अहल-ए-बैत علیہم السلام , मुझे लतीफ़-ओ-ख़बीर ने बताया है कि यह दोनों जुदा नहीं होंगे ता आँ कि मेरे पास मेरे हौज़ पर आएँ।”

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أخْبَرَنا أبو القاسم عَبْد الصمد بن مُحَمَّد بن عَبْد اللّه، أنا أبو الحسَن عَلي بن مُحَمَّد بن أحْمَد، أنا أحْمَد بن مُحَمَّد بن موسى، أنا أبو العباس أحْمَد بن مُحَمَّد بن سعيد، نا الحسَن بن عَلي بن بزيع، نا إسْمَاعيل بن صبيح، نا خباب بن نسطاس، عَن فِطْر بن خليفة الخياط، عن أبي إسحاق، عَن زيد بن أرقم قال: قال رَسُول الله ﷺ لعَلي: «مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه، اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه، وأحبّ من أحبّه، وأبغضْ من أبغضه، وانصرْ من نصره، واخذلْ من خذله»[٨٧١٣].

أخْبَرَنا أبو بكر مُحَمَّد بن الحسَين بن المزرفي[١]، نا أبو الحسَين مُحَمَّد بن عَلي بن المهتدي، أنا أبو الحسَن عَلي بن عمر بن مُحَمَّد بن الحسَن، أنا العباس بن أحْمَد البِرْتي، أنا نصر بن عَبْد الرّحمن أبو سُلَيْمَان[٢] الوَشّاء، أنا زيد بن الحسَن الأنماطي، أنا معروف بن خَرَّبُوذ المكي[٣]، عَن أبي الطُّفَيل عامر بن واثلة، عَن حُذَيفة بن أسيد[٤] قال:

لمّا قفل رَسُول الله ﷺ عن حجّة الوداع نهى أصحابه عن شجرات بالبطحاء متقاربات أن ينزلوا حولهن، ثم بعث إليهم فصلى تحتهن، ثم قام فقال: «أيها الناس، قد نبّأني اللطيف الخبير أنه لم يعمّر نبيّ إلّا مثل نصف عمر الذي يليه من قبله، وإنّي لأظن أن يوشك أن أدعى فأجيب، وإنّي مسؤول وأنتم مسؤولون، فماذا أنتم قائلون؟» قالوا: نشهد أنك قد بلّغتَ، ونصحتَ، وجهدتَ، فجزاك الله خيراً، قال: «ألستم تشهدون أنْ لا إله إلّا الله، وأنّ مُحَمّداً عبده ورسوله، وأنّ جنته[٥] حق، وناره حق، وأنّ الموت حق، وأن البعث بعد الموت حق، وأنّ الساعة آتية لا ريبَ فيها، وأنّ الله يبعث مَنْ في القبور؟» قالوا: بلى نشهد بذلك، قال: «اللّهم اشهد» ثم قال: «أيها الناس إنّ الله مولاي، وأنا مولى المؤمنين، وإنّي أولى بهم من أنفسهم، فَمَنْ كنتُ مولاه فهذا مولاه، اللّهمّ والِ مَنْ والاه، وعادِ من عاداه».

ثم قال: «أيها الناس [إنّي فرط لكم][٦] وإنكم واردون على الحوض، حوضي، أعرض مما بين بصرى وصنعاء، فيه عدد [النجوم][٧] قدحان فضة، وإنّي سائلكم حين تَرِدُون عليّ عن

---

(١) بالأصل: المرزقي، وفي المطبوعة: «المرزقي» كلاهما تصحيف، والصواب «المزرفي»، مرّ التعريف به.
(٢) ويقال: أبو سعيد، ترجمته في تهذيب الكمال ١٩/ ٦٣ طبعة دار الفكر.
(٣) ترجمته في تهذيب الكمال ١٨/ ٢٤٨ طبعة دار الفكر.
(٤) بالأصل: سويد، تصحيف، والتصويب عن «ز»، وهو حذيفة بن أسيد، أبو سريحة الغفاري، ترجمته في تهذيب الكمال ٤/ ١٩٠.
(٥) إلى هنا ينتهي السقط الذي أشرنا إلى بدايته قبل عدة صفحات في م.
(٦) بياض بالأصل وم و«ز»، والمستدرك عن المعجم الكبير للطبراني ٣/ ٦٧ رقم ٢٦٨٣.
(٧) بياض بالأصل وم و«ز»، والمستدرك عن المعجم الكبير.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷫ की **"तारीख़-ए-दिमश्क़"** में है: रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﷛ के बारे में फ़रमाया:

"मैं जिसका मौला हूँ तो अली ﷛ भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख, और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, जो इससे मुहब्बत करे तू उससे मुहब्बत कर, जो इससे बुग्ज़ रखे तू उससे बुग्ज़ रख, जो इसकी नुसरत करे तू उसकी नुसरत कर और जो इसे रुसवा करे तू उसे रुसवा कर।"

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

إسحاق بن الحسَن الحربي، نا أبو نُعَيم الفضل بن دُكَين، نا كامل أبو العلاء[١]، عن حبيب بن أبي ثابت، عَن يَحْيَىٰ بن جَعْدَة[٢]، عَن زيد بن أرقم أن رَسُول الله ﷺ قال لعَلي يومَ غَدير خُمّ: **«مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»**[٨٧٠٨].

أخبَرَنا أبو عَبْد الله الخلال، أنا أبو طاهر بن محمود، أنا أبو بكر بن المقرىء، أنا أبو عَرُوبة الحَرّاني، نا إسْمَاعيل بن موسى ابن بنت السّدّي، نا تَلِيد بن سُلَيْمَان، عَن الحسَن بن عُبَيْد الله، عَن أبي الضُّحَى، عَن زيد بن أرقم قال: سمعت النبي ﷺ قال: **«مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»**[٨٧٠٩].

أخبَرَنا أبو القاسم بن الحُصَين، أنا أبو عَلي بن المُذْهِب، أنا أحْمَد بن جعفر، نا عَبْد الله بن أحْمَد[٣]، حدّثني أبي، نا مُحَمّد بن جعفر، نا شعبة، عَن ميمون أبي عَبْد الله قال: كنت عند زيد بن أرقم، فجاء رجل من أقصى الفسطاط، فسأله عن ذا[٤]، فقال: إن رَسُول الله ﷺ قال: **«ألستُ أولى بالمؤمنين من أنفسهم؟»** قالوا: بلى، قال: **«مَنْ كنت مولاه فعليّ مولاه»**[٨٧١٠].

قال ميمون: فحدّثني بعض القوم عن زيد أن رَسُول الله ﷺ قال: **«اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه»**[٨٧١١].

قال[٥]: وحدّثني أبي، نا عفان[٦]، نا أبو عَوَانة، عَن المغيرة، عن أبي عبيد، عن ميمون أبي عَبْد الله قال: قال زيد بن أرقم وأنا أسمع: نزلنا مع رَسُول الله ﷺ بوادي[٧] يقال له: وادي خُمّ، فأمرنا بالصّلاة، فَصَلّاها بهجير، قال: فخطبنا وظُلّل لرَسُول الله ﷺ بثوبٍ على شجرة سمرٍ من الشمس، فقال: **«ألستم تعلمون، أوَلستم تشهدون أنّي أولى بكلّ مؤمنٍ من نفسه؟»** قالوا: بلى، قال: **«فَمَنْ كنتُ مولاه فإنّ علياً مولاه، اللّهم عادِ من عاداه، ووالِ من والاه»**[٨٧١٢].

أخبَرَنا أبو القاسم عَبْد الصمد بن مُحَمّد بن عَبْد الله، أنا أبو الحسَن عَلي بن

---

(١) من طريقه رواه الذهبي في تاريخ الإسلام (الخلفاء الراشدون) ص ٦٣٢.

(٢) تقرأ بالأصل: «يحيى بن حمزة» والمثبت عن ا ز «، وتاريخ الإسلام.

(٣) مسند أحمد بن حنبل ٧/ ٨٧ رقم ١٩٣٤٧ طبعة دار الفكر.

(٤) كذا بالأصل و« ز »، والمطبوعة، وفي المسند: فسأله عن ذاه.

(٥) القائل: عبد الله بن أحمد بن حنبل، والحديث في المسند ٧/ ٨٦ رقم ١٩٣٤٤ طبعة دار الفكر.

(٦) كذا بالأصول، وفي المسند: حدثنا سفيان.

(٧) كذا بالأصل بإثبات الياء. وفي المسند بحذفها: بوادٍ، أصح.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷺ की **"तारीख-ए-दिमश्क़"** में है: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ फ़रमाते हैं: "हमने रसूलल्लाह ﷺ के साथ एक वादी में जिसका नाम ख़ुम है; पड़ाव किया, हमें नमाज़ का हुक्म दिया गया, आप ﷺ ने दोपहर में नमाज़ पढ़ाई, आप ﷺ ने ख़ितताब फ़रमाया, धूप से बचाने के लिए बबूल के एक दरख़्त पर कपड़ा दाल कर आप ﷺ के लिए साया किया गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम नहीं जानते, क्या तुम नहीं गवाही देते कि मैं हर मोमिन की जाँ का उससे भी ज़ियादा हक़दार हूँ?" लोगों ने कहा: "क्यूँ नहीं", आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं जिसका मौला हूँ तो अली ﷺ भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, और जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख।""

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر

للطباعة والنشر والتوزيع

جاء رهطٌ إلى عَليٍّ بالرحبة، فقالوا: السّلام عليك يا مولانا، قال: كيف أكون مولاكم وأنتم قوم عربٌ،؟ قالوا: سمعنا رَسُول الله ﷺ يومَ غَدير خُمّ يقول: «مَنْ كنت مولاه فإنّ هذا[1] مولاه»، قال رياح: فلما مضوا تبعتهم[2] فسألت من هؤلاء؟ قالوا: نفر من الأنصار، فيهم أبو أيوب الأنصاري.

أَخْبَرَنا أبو عَلي بن السبط، أنا أبو مُحَمّد الجوهري.

ح وَأَخْبَرَنا أبو القاسم بن الحُصَين، أنا أبو عَلي بن المُذْهِب.

قالا: أنا أحْمَد بن جعفر، نا عَبْد الله بن أحْمَد[3]، حدّثني أبي، نا مُحَمّد بن عَبْد الله، نا الربيع - يعني ابن [أبي][4] صالح الأسلمي - حدّثني زياد بن أبي زياد قال: سمعت عَلي بن أبي طالب ينشد الناس فقال: أنشد الله رجلاً مسلماً سمع رَسُول الله ﷺ يقول يوم غدير خُمّ ما قال؟ فقام اثنا عشر بدرياً، فشهدوا.

قال[5]: وحدّثني أبي، نا ابن نُمَير، نا عَبْد الملك، عَن أبي عَبْد الرحيم الكِنْدي، عَن زاذان أبي عمر قال: سمعت علياً في الرّحبة وهو ينشد الناس: مَنْ شهد رَسُول الله ﷺ يوم غَدير خُمّ وهو يقول ما قال؟ فقام ثلاثة عشر رجلاً، فشهدوا أنهم سمعوا رَسُول الله ﷺ وهو[6] يقول: «مَنْ كنتُ مولاه فعليٌ مولاه»[٨٦٩١].

أَخْبَرَنا أبو القاسم زاهر بن طاهر، أنا أبو سعد الجَنْزَرودي، أنا السيد أبو الحسَن مُحَمّد بن عَلي، نا أحْمَد بن عَلي بن مهدي، نا أبي، نا عَلي بن موسى الرضا، نا أبي عن أبيه جعفر الصادق، حدّثني أبي عن أبيه عَلي بن الحسَين، عَن أبيه عن جده عَلي بن أبي طالب قال:

قال رَسُول الله ﷺ: «مَنْ كنتُ مولاه فعليٌ مولاه، اللّهمّ والِ من والاه، وعادِ من عاداه، وانصر من نصره، واخذلْ من خذله»[٨٦٩٢].

(١) في « ز »: فعلي مولاه.
(٢) الأصل وم: «بينتهم» والتصويب عن المسند والمطبوعة.
(٣) مسند أحمد ١/ ١٩١ - رقم ٦٧٠ طبعة دار الفكر - بيروت.
(٤) الزيادة عن المسند.
(٥) القائل عبد الله بن أحمد بن حنبل، والحديث في مسند أحمد ١/ ١٨٢ رقم ٦٤١ طبعة دار الفكر.
(٦) «وهو» استدركت عن هامش الأصل، وبعدها صح.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷫ की **"तारीख़-ए-दिमश्क़"** में है:

....علی بن موسی الرضا نا أبی عن أبیه جعفر الصادق حدثنی أبی

عن أبیه علی بن الحسین عن أبیه عن جده علی بن أبی طالب :

.......अली बिन मूसा अलरज़ाना अबी अन अबीह जाफ़र सादिक़ हद्दसना अबी अन अबीह अली बिन हुसैन अन अबीह अन जद्दह अली बिन अबी तालिब.......علیہم السلام

→ हज़रत अली ﷛ फ़रमाते हैं: "रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मैं जिस का मौला हूँ तो अली ﷛ भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह ﷻ! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख, और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, जो इसकी नुसरत करे तू उसकी नुसरत कर और जो इसे रुसवा करे तू उसे रुसवा कर।"

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

قال: ونا عَبْد الله [1]، نا أحْمَد بن عمر الوكيعي، نا زيد بن الحُبَاب، نا الوليد بن عقبة بن نزار القيسي [2]، حدّثني سماك بن عبيد بن الوليد العَبْسي قال: دخلت على عَبْد الرّحمن بن أبي ليلى، فحدّثني.

أنه شهد علياً في الرحبة فقال: أنشد الله رجلاً سمع رَسُول الله ﷺ وشهده يوم غدير خُمّ إلاّ قام، فلا [3] يقوم إلاّ من قد رآه، فقام اثنا عشر رجلاً، فقالوا: قد رأيناه وسمعناه حيث أخذ بيده يقول: «اللّهمّ والِ مَنْ والاه، وعادِ من عاداه، وانصر من نصره، واخذل من خذله»، فقام إلاّ ثلاثةً لم يقوموا، فدعا عليهم، فأصابتهم دعوته[٨٦٨٤].

أخبَرَنا أبو غالب بن البنّا، أنا أبو الغنائم بن المأمون، أنا أبو الحسَن الدارقطني، أنا أبو القاسم الحسَن بن مُحَمّد بن بِشْر البَجَلي الكوفي الخَزّاز [4]، نا عَلي بن الحسَين بن عبيد بن كعب، أنا إسْمَاعيل بن أبان، عَن أبي داود الطهوي [5]، واسمه عيسى بن مسلم، عَن عمرو بن عَبْد الله، وعبد الأعلى بن عامر الثعلبي [6]، عَن عَبْد الرّحمن بن أبي ليلى قال:

خطب النّاسَ أميرُ المؤمنين عَليٌّ بن أبي طالب في الرحبة، قال: أنشد الله امرأ نشدة الإسلام سمع رَسُول الله ﷺ يوم غدير خُمّ آخذ بيدي يقول: «ألستُ أولى بكم يا معشر المسلمين من أنفسكم؟» قالوا: بلى يا رَسُول الله، قال: «مَنْ كنت مولاه فعليّ مولاه، اللّهمّ والِ مَنْ والاه وعادِ من عاداه، وانصر من نصره، واخذل من خذله» إلاّ قام، فقام بضعة عشر رجلاً، فشهدوا، وكتم قومٌ، فما فنوا من الدنيا حتى عموا [7] وبَرِصُوا.

قال الدارقطني: غريب من حديث عبد الأعلى، وعمرو بن عَبْد الله بن هند الجملي [8] عن عَبْد الرّحمن عن عَلي، تفرّد به أبو داود الطُّهوي [9] عنهما.

---

(١) مسند أحمد بن حنبل ١/ ٢٥٣ رقم ٩٦٤ طبعة دار الفكر ـ بيروت.

(٢) كذا بالأصل وم والمطبوعة، وفي المسند: «الوليد بن عقبة بن نزار العنسي» وهو الصواب، قارن مع ترجمته في تهذيب الكمال ١٩/ ٤٤٢ ط. دار الفكر ـ بيروت.

(٣) كذا بالأصل وم، وفي المسند والمطبوعة: ولا يقوم.

(٤) في م: الخراز.

(٥) في م: الطهري. تصحيف، ترجمته في تهذيب الكمال ١٤/ ٥٧٥.

(٦) ترجمته في تهذيب الكمال ١١/ ٦.

(٧) كذا بالأصل، وم، و« ز »، والمطبوعة، والمختصر.

(٨) تقرأ بالأصل: «الحبلي» وفي م: «الجبلي» والمثبت عن المطبوعة.

(٩) في م: الطهري. تصحيف، ترجمته في تهذيب الكمال ١٤/ ٥٧٥.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** رحمه الله की **“तारीख-ए-दिमश्क़”** में है:

→ अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه को रहबा में फ़रमाते हुए सुना: “मैं क़सम देता हूँ हर उस शख़्स को कि वह खड़ा हो जाए जिसने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को ग़दीर ख़ुम के दिन देखा और आपके इरशादात सुने, वही खडा हो जिसने आप صلى الله عليه وآله وسلم को देखा हो”, बारह(१२) आदमी खडे हुए और कहा: “हम ने आप صلى الله عليه وآله وسلم को देखा और आप صلى الله عليه وآله وسلم का इरशाद सुना, जब आप صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत अली رضي الله عنه का हाथ पकड़ा और फ़रमाया: ‘ऐ अल्लाह سبحانه وتعالى! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख, और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, जो इसकी नुसरत करे तू उसकी नुसरत कर और जो इसे रुसवा करे तू उसे रुसवा कर।” सब लोग खड़े हो गए थे, तीन शख़्स खड़े नहीं हुए तो हज़रत अली رضي الله عنه ने उनके ख़िलाफ़ बददुआ की, उनको आपकी बददुआ लग गई।

→ हज़रत अली رضي الله عنه ने रहबा में ख़ुत्बा दिया तो फ़रमाया: “मैं उस शख़्स को इस्लाम की क़सम देता हूँ कि वह खड़ा हो जाए जिसने ग़दीर ख़ुम के रोज़ हुज़ूर صلى الله عليه وآله وسلم को मेरा हाथ पकड़े हुए यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना: “ऐ मुसलमानों की जमाअत! क्या मैं तुम्हारी जानों का तुमसे ज़ियादा हक़दार नहीं हूँ?”, लोगों ने कहा: “क्यूँ नहीं ऐ अल्लाह سبحانه وتعالى के रसूल صلى الله عليه وآله وسلم ”, आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया था: ‘मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं, ऐ अल्लाह سبحانه وتعالى! जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख, और जो इससे अदावत रखे तू भी उससे अदावत रख, जो इसकी नुसरत करे तू उसकी नुसरत कर और जो इसे रुसवा करे तू उसे रुसवा कर।”, **कुछ लोगों ने यह बात छुपाई तो वो दुनिया से अंधे और कोढ़ी हो कर मरे।**

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

فأخبرناه أبو مُحَمَّد السَّيدي، أنا أبو[1] عُثمان البَحيري[2]، أنا أبو عمرو بن حمدان، أنا أبو يَعْلَى المَوْصِلي، نا الأزرق بن عَلي، نا حسَّان بن إبْرَاهيم، نا مُحَمَّد بن سَلَمة، عَن أبيه، عَن أبي الطُّفَيل عامر بن واثلة أنه سمع زيد بن أرقم يقول:

نزل رَسُول الله ﷺ بين مكة والمدينة عند سَمُرَات خمس دوحات عظام فكنس الناس ما تحت السَّمُرَات، ثم راح رَسُول الله ﷺ فَصَلّى، ثم قام خطيباً، فحمد الله وأثنى عليه، وذكر ووعظ وقال ما شاء الله أن يقول، ثم قال: «يا أيها الناس إني تارك فيكم أمرين لن تضلّوا إذا اتبعتموهما[3] كتاب الله، وأهل بيتي عترتي» ثم قال: «أتعلمونَ أنّي أولى بالمؤمنين من أنفسهم؟» - ثلاث مرات - فقال الناس: نعم، فقال رَسُول الله ﷺ: «مَنْ كنتُ مولاه، فإنّ علياً مولاه»[٨٧٠٢].

أخبرنا أبو عَبْد الله الخَلاَّل، وأم المجتبى بنت ناصر، قالا: أنا إبْرَاهيم بن منصور، أنا أبو بكر بن المقرىء، أنا أبو يَعْلَى، نا الأزرق بن عَلي، نا حسَّان، نا مُحَمَّد بن سَلَمة، عَن أبيه، عَن أبي عَبْد الله الشامي قال:

بينا أنا جالسٌ عند زيد بن أرقم، وهو جالس في مجلس بني الأرقم، فجاءه رجل من مراد على بغلة، فقال: في القوم زيد؟ فقال القوم: نعم، هذا زيد، فقال: أنشدكم الله الذي لا إله إلاّ هو، هل سمعتَ رَسُول الله ﷺ يقول: «مَنْ كنتُ مولاه فإنّ علياً مولاه، اللّهمّ والِ من والاه وعادِ من عاداه»، قال: نعم[٨٧٠٣].

واللفظ للخَلاَّل.

أخبرنا أبو مُحَمَّد هبة الله بن سهل، وأبو القاسم تميم بن أبي سعيد، قالا: أنا مُحَمَّد بن عَبْد الرَّحمن، أنا مُحَمَّد بن مُحَمَّد بن أحْمَد، نا أبو بكر مُحَمَّد بن مروان، نا هشام بن عمّار، نا سعيد بن يَحْيَى، حدّثني الفضل بن غزوان[4]، عَن عطية العوفي، حدّثني زيد بن أرقم.

---

(١) بالأصل: أبو محمد عثمان، تصحيف، والصواب ما أثبت، وقد مرّ التعريف به، والسند معروف.

(٢) في المطبوعة: البجيري، بالجيم، تصحيف، والصواب: البحيري، بالحاء المهملة، وقد مرّ التعريف به.

(٣) الأصل: اتبحتموها.

(٤) كذا بالأصل و« ز » والمطبوعة هنا، ولعله تصحيف: «فضيل بن مرزوق» وسيرد في الخبر التالي «فضيل بن مرزوق» وفي ترجمته في تهذيب الكمال ١٥/ ١١٩ أنه روى عن عطية بن سعد العوفي، وأنه من مشايخ يحيى بن سعيد العطار الحمصي.

☆ **इब्न-ए-असाकिर** رحمة الله **की "तारीख़-ए-दिमश्क़"** में है:

→ रसूलल्लाह ﷺ ने मक्का और मदीना के दरमियान बबूल के पाँच बड़े बड़े दरख़्तों के पास पड़ाव किया, दरख़्तों के नीचे लोगों ने झाड़ू लगा दी, फिर आप ﷺ ने आराम फ़रमाया और फिर नमाज़ पढ़ी, फिर ख़ुत्बा दिया, अल्लाह سبحانه وتعالى ! की हम्द ओ सना की, वअज़ और नसीहत की, और जो कुछ अल्लाह سبحانه وتعالى ! ने चाहा इरशाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया: "ऐ लोगो! मैं तुम्हारे दरमियान दो ऐसी चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर तुम उनकी पैरवी करोगे तो कभी गुमराह न होगे, अल्लाह سبحانه وتعالى ! की किताब और मेरे अहल-ए-बैत عليهم السلام , मेरी इतरत", फिर फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो कि मैं मो'मिनीन की जानों का उनसे ज़ियादा हक़दार हूँ?" तीन मर्तबा फ़रमाया, लोगों ने कहा: "हाँ", आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه उसके मौला हैं।"

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أنْبَانا أبو عَبْد الله مُحَمّد بن عَلي بن أبي العلاء، أنا أبي، أبو القاسم، أنا أبو مُحَمّد بن أبي نصر، أنا خَيْثَمة، نا جعفر بن مُحَمّد بن عَنْبَسة اليشكري، نا يَحْيَى بن عَبْد الحميد الحِمّاني، نا قيس بن الربيع، عَن أبي هارون العبدي، عَن أبي سعيد الخُدْري قال:

لما نصب رَسُول الله ﷺ علياً بغدير خُمّ فنادى له بالولاية، هبط جبريل عليه السلام عليه بهذه الآية: ﴿اليوم أكملتُ لكم دينكم، وأتممتُ عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام ديناً﴾[1].

أخْبَرَنا أبو بكر وجيه بن طاهر، أنا أبو حامد الأزهري، أنا أبو مُحَمّد المَخْلَدي[2]، أنا أبو بكر مُحَمّد بن حمدون، نا مُحَمّد بن إبْرَاهيم الحُلْوَاني[3]، نا الحسَن بن حمّاد سَجّادة، نا عَلي بن عابس، عَن الأعمش، وأبي الجَحّاف، عَن عطية، عَن أبي سعيد الخُدْري قال:

نزلت هذه الآية ﴿يا أيها الرسول بلّغ ما أُنزل إليك من ربك﴾[4] على رَسُول الله ﷺ يوم غدير خُمّ [في][5] عَلي بن أبي طالب.

أخْبَرَنا أبو مُحَمّد بن طاوس، أنا أبو منصور بن شكروية، أنا أبو إسحاق بن خُرّشيد[6] قوله، نا الحسَين بن إسْمَاعيل المحاملي - إملاء - نا يعقوب، نا مروان الفَزَاري، عَن مسروق بن ماهان التيمي، قال:

قلت لأبي بسطام مولى أسامة بن زيد: إن ناساً يقولون: وال من والاه وعاد من عاداه، فقال أبو بسطام: ذلك بأنه كان بين علي وبين أسامة[7]، فقال: والله إني لأحبه، قال: فكأنه دخل على علي من ذاك، فقال رَسُول الله ﷺ: «ألا أراك تتناول عندي علياً؟ مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»[٨٧٤٤].

انْبَانا أبو عَبْد الله الفُرَاوي، أنا أبو بكر البيهقي، أنا أبو عَبْد الرّحمن السلمي، نا

---

(١) سورة المائدة، الآية: ٣.

(٢) من طريقه رواه الواحدي في أسباب النزول ص ١١٢ ط. دار الفكر.

(٣) في أسباب النزول: محمد بن إبراهيم الحلوتي.

(٤) سورة المائدة، الآية: ٦٧.

(٥) زيادة للإيضاح عن أسباب النزول.

(٦) في المطبوعة: خورشيد.

(٧) كذا بالأصل وم و«ز»، وثمة سقط في الكلام أخلّ بالمعنى، ووقع الاضطراب فيما يلي من سياق المتن. وقد انتبه محقق المطبوعة إلى هذا الخلل فرممه كما يلي:
كان بين علي وبين أسامة (شيء)، فقال (أسامة): والله إني لا (أ)حبه، قال فكأنه دخل على علي من ذاك...

☆ **इब्न-ए-असाकिर** ﷭ की **"तारीख़-ए-दिमश्क़"** में है:

→ जब हुज़ूर ﷺ ने ग़दीर ख़ुम में हज़रत अली ؓ की विलायत का ऐलान किया तो जिबरईल ؑ ये आयत ले कर नाज़िल हुए

"اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام ديناً"

(आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया, और तुम पर अपनी ने'मत तमाम कर दी, और तुम्हारे लिए दीन के तौर पर इस्लाम को पसंद कर लिया)

"يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك"

(ऐ रसूल ﷺ ! जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है उसे पहुँचा दीजिये।)

→ रसूलल्लाह ﷺ पर ग़दीर ख़ुम के दिन नाज़िल हुई और यह आयात हज़रत अली ؓ के बारे में नाज़िल हुई थी।

ففي ثبوته عندي وقفة ، لعدم ورود ما يجبر ضعفه ، وكأنه رواية بالمعنى للشطر الآخر من الحديث : « اللهم والِ من والاه ، وعادِ من عاداه » .

ومثله قول عمر لعلي : « أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة » .

لا يصح أيضاً لتفرد علي بن زيد به كما تقدم .

إذا عرفت هذا ، فقد كان الدافع لتحرير الكلام على الحديث وبيان صحته أنني رأيت شيخ الإسلام ابن تيمية ، قد ضعف الشطر الأول من الحديث ، وأما الشطر الآخر ، فزعم أنه كذب[1] وهذا من مبالغاته الناتجة في تقديري من تسرعه في تضعيف الأحاديث قبل أن يجمع طرقها ويدقق النظر فيها . والله المستعان .

أما ما يذكره الشيعة في هذا ...

عنه :

« إنه خليفتي من بعدي » .

فلا يصح بوجه من الوجوه ، ...

التاريخي على كذبها ، لأنه لو فرض أ...

يوحى) ، والله سبحانه لا يخلف وعده ...

الآخر : « الضعيفة » (٤٩٢٣ و ٤٩٣٢ ...

« المراجعات » بيّنت وهاءها وبطلانها ...

فيها .

١٧٥١ - (أيْ إخواني ! ...

أخرجه البخاري في « التاري...

(٤/٢٩٤) وأبو بكر الشافعي في « مجل...

والخطيب في « التاريخ » (١/٣٤١) من ...

محمد بن مالك عن البراء عازب قال :

(١) انظر « مجموع الفتاوى » (٤/٤١٧ - ٤١٨)

سلسلة
الأحاديث الصحيحة
وشيء من فقهها وفوائدها

المجلد الرابع

أبو كوثر

مجموع فتاوى
شيخ الإسلام أحمد بن تيمية
« قدس الله روحه »

جمع وترتيب
عبد الرحمن بن محمد بن قاسم « رحمه الله »
وساعده ابنه محمد « وفقه الله »

الجزء الرابع

طبع بأمر
خادم الحرمين الشريفين الملك فهد بن عبد العزيز آل سعود
أجزل الله مثوبته

المنزلة فلم يكن هذا ...

يخف على عليّ ولحق ...

ومما يبين ذلك ...

المعهود ليس من خص...

إلا رجل من أهل بي...

أفضل بني هاشم بعد ...

من سائرهم فلما أمر ...

فيه على أنه بمنزلة ها...

وذلك ليس من خص...

وقد شبه النبي ...

بنوح وموسى - عليه...

من تشبيه علي بهارون ...

الشيء بالشيء لمشابهته في بعض الوجوه كثير في الكتاب والسنة وكلام العرب .

وأما قوله : « من كنت مولاه فعلي مولاه ، اللهم والِ من والاه . . إلخ » ، فهذا ليس في شيء من الأمهات ، إلا في الترمذي ، وليس فيه إلا : « من كنت مولاه فعلي مولاه » ، وأما الزيادة فليست في الحديث . وسئل عنها الإمام أحمد فقال : زيادة كوفية ، ولا ريب أنها كذب لوجوه :

अल्लामा इब्न-ए-तैमिया का हदीस “मन कुनतो मौला” को

ज़ईफ़ क़रार देना और अल्लामा अलबानी का उस पर रद

→ **इब्न-ए-तैमिया** की **“मजमा उलफ़तावी”** में है “من كنت مولاه فعلى مولاه،اللهم وال من والاه.....” की जहां तक बात है तो यह तिर्मिज़ी के अलावा उम्महात-ए-कुतुब में से किसी किताब में नहीं है, तिर्मिज़ी में भी सिर्फ इतना हिस्सा है “من كنت مولاه فعلى مولاه”, इसके अलावा जो इज़ाफ़ा है वह हदीस में नहीं है, इमाम अहमद ﵀ से इसके बारे में पूछा गया तो फ़रमाया: “यह कूफ़ियों का इज़ाफ़ा किया हुआ है, इसमें कोई शक नहीं कि इज़ाफ़ा बूजोह कज़ब है।”

→ **नासिरुद्दीन अलबानी “सिलसिलतुल अहादीस अलसाहीहा”** में इस पर रद करते हुए कहते हैं:

इस हदीस पर कलाम करने और इसकी सेहत को वाज़ेह करने का सबब यह था कि इब्न-ए-तैमिया ने इस रिवायत के पहले टुकड़े को ज़ईफ़ बताया है और दूसरे को कज़ब क़रार दिया है, यह इब्न-ए-तैमिया का **मुबालिग़ा** है, जिसकी वजह मेरे नज़दीक यह है कि आप अहादीस के तरक़ को जमा करने और उनमें दिक़्क़त नज़र से काम लेने से पहले ही उन्हें ज़ईफ़ क़रार देने में जल्दी करते हैं।

مجموع فتاوى
ورسائل فضيلة الشيخ
محمد بن صالح العثيمين

المجلد الثالث

فتاوى العقيدة
جمع وترتيب
فهد بن ناصر بن إبراهيم السليمان

دار الوطن للنشر

ص١٣٦/١٣٧

الجبين لا بد تراه العين»؟.

فأجاب بقوله: هذا وردت فيه آثار أنه يكتب على الجبين مايكون على الإنسان، لكن الآثار هذه ليست إلى ذاك في الصحة، بحيث يعتقد الإنسان مدلولها، فالأحاديث الصحيحة أن الإنسان يكتب عليه في بطن أمه أجله، وعمله، ورزقه، وشقي أم سعيد.

٥٠٧ سئل فضيلة الشيخ: عن قول الإنسان إذا خاطب ملكاً «يامولاي»؟

القسم الثاني: ولاية مقيدة مضافة، فهذه تكون لغير الله، ولها في اللغة معان كثيرة منها الناصر، والمتولي للأمور، والسيد، قال الله - تعالى -: ﴿وان تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبريل وصالح المؤمنين﴾ [1] وقال، صلى الله عليه وسلم، «من كنت مولاه فعلي مولاه» وقال، صلى الله عليه وسلم، «إنما الولاء لمن اعتق».

وعلى هذا فلا بأس أن يقول القائل للملك: مولاي بمعنى سيدي مالم يخش من ذلك محذور.

ابن العثيمين يضرب أمثلة لمعنى المولى ويعترف بأن حديث الولاية معناه المتولي للأمور

☆ **सलफ़ी आलिम मुहम्मद बिन स्वालेह असीमैन** की **“मजमूआ-ए-फ़तावा व रसाइल”** में है:

→ फ़ज़ीलतुल शेख़ (असीमैन) से पूछा गया कि कोई शख़्स बादशाह को “या मौलाई” के लफ़्ज़ से ख़िताब करे तो क्या हुक्म है?

इसके जवाब में इब्न-ए-असीमैन ने मौला के मानी की कई मिसालें दी हैं और यह ऐतराफ़ किया है कि मौला के मानी मुतवल्ली लिलउमूर मुआमिलात के ज़िम्मेदार के हैं, इसी मानी में अल्लाह ﷻ! का यह इरशाद है,

“وإن تـظـاهـرا عـلـيـه فإنالله هو مولاه وجبرئيل وصالح المؤمنين”

और हुज़ूर ﷺ का इरशाद है “मैं जिसका मौला हूँ, अली رضي الله عنه उसके मौला हैं।” और आपका इरशाद है कि वाला इ से हासिल होगी जिसने आज़ाद किया।

→ **मतलब यह है कि शेख़ असीमैन ने “मन कुन्तो मौला....” से इस्तशहाद किया है।**

• शेख़ स्वालेह असीमैन मशहूर सलफ़ी आलिम और रियाध के मुफ़्ती-ए-अज़ीम थे।

الإلزامات والتتبع

للإمام الحافظ أبي الحسن علي بن عمر بن أحمد بن مهدي
المشهور بالدارقطني رحمه الله
٣٠٦ - ٣٨٥ هجرية

وهو ما ألزم به الإمام الدارقطني الإمامين بخاري ومسلمًا [illegible]

دراسة وتحقيق الشيخ
أبو عبد الرحمن مقبل بن هادي الوادعي

طبعة جديدة مزيدة ومنقحة

دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

١ ـ جبلة بن حارثة أخو زيد روى عنه أبو عمرو الشيباني وأبو إسحاق السبيعي قاله علي بن مسهر[1] وغيره عن إسماعيل بن أبي خالد عن أبي عمرو الشيباني عنه. وقاله زهير وغيره عن أبي إسحاق عن جبلة.

٢ ـ حبشي بن جنادة روى عنه الشعبي وأبو إسحاق وابنة عبد الرحمن بن حبشي[2].

---

١ ـ **الحديث الثامن والعشرون:** قال الترمذي رحمه الله ج ٤ ص ٣٥٠ ط هندية مع التحفة: حدثنا الجراح بن مخلد وغير واحد قالوا نا محمد بن عمر الرومي نا علي بن مسهر عن إسماعيل بن أبي خالد عن أبو عمرو الشيباني قال أخبرني جبلة بن حارثة أخو زيد بن حارثة قال: قدمت على رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم فقلت: يا رسول الله ابعث معي زيداً. قال: هو ذا فإن انطلق معك لم أمنعه. قال زيد: يا رسول الله والله لا أختار عليك أحداً قال: فرأيت رأي أخي أفضل من رأيي.

هذا حديث حسن غريب لا نعرفه إلا من حديث ابن الرومي. اهـ.

وأخرجه البخاري في التاريخ ج ٢ ص ٢١٨ والحاكم ج ٣ ص ٢١٤ قال صحيح الإسناد وأقره الذهبي.

وله حديث آخر كما في تفسير ابن كثير ج ٤ ص ٥٦٠ في فضل (قل يا أيها الكافرون).

٢ ـ **الحديث التاسع والعشرون:** قال الإمام أحمد في مسنده ج ٤ ص ١٦٤: ثنا يحيى بن آدم وابن أبي بكير قالا حدثنا إسرائيل عن أبي إسحاق عن حبشي بن جنادة قال يحيى بن آدم السلولي وكان قد شهد يوم حجة الوداع قال: قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم: «علي مني وأنا منه ولا يؤدي عني إلا أنا أو علي»، وقال ابن بكير: لا يقضي عني ديني إلا أنا أو علي رضي الله عنه.

ثم ذكر له أسانيد وفي بعضها سؤال شريك القاضي لأبي إسحاق أين سمع من حبشي؟ فقال أبو إسحاق: وقف حبشي علينا على فرس له في مجلسنا في جبانة السبيع.

والحديث على شرط الشيخين.

وأخرجه الترمذي ج ٤ ص ٢٢٨ مع تحفة الأحوذي ط هندية وابن ماجة ج ١ ص ٤٤ والنسائي في الخصائص ص ٢٠ وابن جرير في التاريخ ج ١٣ ص ٥١ والطبراني في الكبير ج ٤ ص ١٩ وأبو نعيم في تاريخ أصبهان ج ١ ص ٢٥٣، وقال الترمذي: حديث حسن غريب صحيح. وله حديثان آخران كما في مسند أحمد.

(٢) في الأصلين (ابن عيسى). والصواب ما أثبتناه.

---

(١) في الأصلين (مسعر) والصواب ما أثبتناه كما تراه في السند وكما في كتب الرجال.

(٢) في الأصلين (ابن عيسى). والصواب ما أثبتناه.

☆ **इमाम दार क़तनी** ﵀ की **“अलइल्ज़ामात वलततबअ”** (जो उन्होंने इमाम मुस्लिम ﵀ साहिबे सहीह मुस्लिम के नक़्द में लिखी है) मैं है: ‘हबशी बिन जनादा से शअबी, अबू इसहाक़ और हबशी के साहिबज़ादे अब्दुर रहमान बिन हबशी ﵃ने रिवायत की है।’

→ किताब के मुहक़्क़िक़ अबू अब्दुररहमान मक़्बल बिन हादी व दाई कहते हैं:

रसूलल्लाह ﷺ का फ़रमान: “अली ﵁ मुझसे हैं और मैं अली ﵁ से, और मेरी तरफ़ से मेरे और अली ﵁ के अलावा कोई अदा नहीं करेगा।”

→ **यह हदीस शेख़ैन(इमाम बुख़ारी ﵀ व इमाम मुस्लिम ﵀) की शर्त पर है।**

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahl-e-Sunnah)

Founder & Chairman : Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)